卐

# जैन नवयुवक मंडल

## स्मारिका प्रकाशन समिति

बारां (राजस्थान) ३२५ २०५

सरक्षक –

महावीर जैन

RAS

अध्यक्ष.–

हजारीलाल बज

सपादिका –

श्रीमती माणक सेठी

M A.

सह सपादक –

दयाचन्द 'रजनीश'

परामर्शदाता –

मनमोहन जैन

E. O.

अनूपचन्द जैन

एडवाकेट

प्रो० बजरगलाल

M. A.

प्रो० टी० सी० गुप्ता

M A

व्यवस्थापक मण्डल –

डा० थानमल जैन

M S

डा० कैलाशचन्द सेठी

M B B S

बाबूलाल जैन

B Com,

राजेन्द्रकुमार बज

वैद्याचार्य

प्रीतमचंद बड़जात्या

B Sc.

हुकमचंद टोंग्या

भगवान महावीर २५०० वां निर्वाण म[illegible]
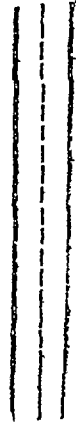
# जैन नवयुवक मण्डल

इस स्मारिका का विमोचन श्री जुझारसिंह जी ( खनिज मन्त्री राज० ) के कर कमलों द्वारा दिनांक २६-४-७५ को हुआ ।
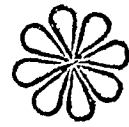
श्रीमती माणक सेठी

सह-सम्पादक :

दयाचन्द 'रजनीश'

❀ भगवान महावीर २५०० वां निर्वाण महोत्सव के ❀

शुभ अवसर पर

— हमारे सभी सहयोगियों —

एव

विज्ञापनदाताओं के प्रति
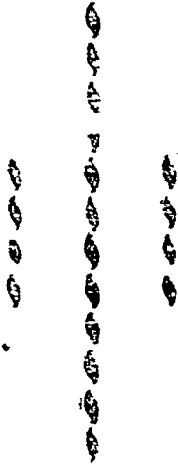
# ★★★ हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन ★★★

—जैन नवयुवक मण्डल, बारां

# अनुक्रमणिका



| गद्यान्जलि | लेखक | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| १. वर्तमान युग में श्रमण संस्कृति | उपाध्याय मुनि श्री विद्यानन्द जी | १-४ |
| २. श्री मद्भागवद् गीता में भगवान महावीर | आचार्य रमेशचन्द्र शास्त्री | ५ |
| ३. भगवान महावीर का जीवन एवं उपदेश | सं० प्र० मुनि श्री उदयचन्द जी म० जैन सिद्धांताचार्य | ८ |
| ४. वर्तमान समस्याएं और भगवान महावीर का उपदेश | श्री बिरधीलाल सेठी | १३ |
| ५. जैन धर्म समाज शास्त्रीय सदर्भ | डॉ० आर. ए, पी. सिह | १५ |
| ६. अपरिग्रह और विश्वशाति | श्री रामेश्वरदयाल शास्त्री एडवोकेट | १८ |
| ७. वह महावीर ( कहानी ) | श्री लक्ष्मीचन्द्र 'सरोज' | १९ |
| ८. भगवान महावीर की परम तेजस्विता | श्री यशपाल जैन | २३ |
| ९. व्यवहारिक जीवन मे महावीर के आदर्श | डा० हुकमचन्द भारिल्ल | २७ |
| १०. युवक क्या करे ? | श्री दयाचन्द जैन | ३० |
| ११. वर्तमान समस्याए और महावीर का संदेश | श्री रिषभदास रांका | ३३ |
| १२. भगवान महावीर के आध्यात्मिक सदेश | श्री अगरचन्द नाहटा | ३९ |
| १३. भगवान महावीर का जीवन परिचय | श्री सुरेन्द्रकुमार पापड़ीवाल | ३२ |
| १४. नारी और निराशा | संतोषकुमारी बज | ४४ |

| पद्यान्जलि | लेखक | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| १. शब्द भी वंदना : मौन भी वदना | श्री कमलाकर | १ |
| २. हम अहिसक है, मगर कायर नही है। | ,, शर्मनलाल सरस | २ |
| ३. तो सत्य धर्म निष्फल प्रियवर | ,, लक्ष्मीचन्द 'सरौज' | ३ |
| ४. सीमाओ मे क्यो अनन्त | ,, दयाचन्द 'रजनीश' | ४ |
| ५. नारी दीक्षा | ,, सोहनराज कोठारी | ५ |

**प्रेरणा के स्त्रोत :—**

**जीवन परिचय**



**गतिविधियां**

शुभकामना

सन्देश

मुख्य मन्त्री,
मध्य प्रदेश,-सरकार
भोपाल

भगवान महावीर के २५ वें निर्वाण शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में जैन नवयुवक मंडल, बांरा अपने श्रद्धा-सुमन के रूप मे एक स्मारिका प्रकाशित कर रहा है, यह जान कर प्रसन्नता हुई। मैं आशा करता हूँ कि भगवान महावीर के व्यक्तित्व एवं कृतित्वो से संबंधित रचनाओं से पाठको का ज्ञानार्जन और मार्गदर्शन होगा।

मैं आपके प्रयास की सफलता चाहता हूँ।

प्रकाशचन्द सेठी

मुख्य मन्त्री
राजस्थान सरकार
जयपुर

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि बारा का जैन नवयुवक मडल भगवान महावीर निर्वाण शताब्दि वर्ष के उपलक्ष मे एक स्मारिका प्रकाशित कर रहा है।

हमारे देश को आज भगवान महावीर द्वारा स्थापित आदर्शों पर चलने की महत्ती आवश्यकता है। इसीलिये इस वर्ष देश भर की सरकारें भी इस शताब्दि के आयोजनो मे पूरा सहयोग दे रही है।

देश के कोने-कोने मे भगवान महावीर के अहिंसा, सत्य, अस्तेय अपरिग्रह और शाति के सिद्धान्तो के बारे मे चिन्तन और मनन होना चाहिये। आपका प्रयास इस लक्ष्य को आगे बढाने मे योग करेगा, ऐसो आशा है।

मैं आपकी स्मारिका के लिये हार्दिक शुभ कामनाएँ प्रकट करता हूँ।

(हरदेव जोशी)

## शान्तिप्रसाद जैन

अध्यक्ष—आल इन्डिया दिगम्बर भगवान महावीर
२५०० वा निर्वाण महोत्सव सोसायटी
दिल्ली

आपका ५ फरवरी ७५ का पत्र मिला। आप स्मारिका निकाल रहे है, जानकर प्रसन्नता हुई। आपकी स्मारिका से अहिंसा और भगवान महावीर के जीवन और वाणी का प्रचार हो, इस आशा के साथ मैं आपको अपना आशीर्वाद भेजता हूँ।

शान्तिप्रसाद जैन

जनरल मेनेजर
टी. आई. टी. मिल्स लिमिटेड
भिवानी (हरियाणा)

अत्यन्त हर्ष की बात है कि जैन नवयुवक मडल बारा भगवान महावीर के २५०० वा निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष मे महावीर जयन्ती के अवसर पर एक 'स्मारिका' प्रकाशित कर रहा है। महावीर जयन्ती हमारे भारत मे एक विशेष महत्व रखती है। उनकी शिक्षा ने जन-जीवन को प्रभावित किया है। मेरी शुभ कामनायें है कि जयन्ती महोत्सव तथा 'स्मारिका अपने ध्येय मे सफल हो।

पी. डी. मखरिया

वित्त मन्त्री, राजस्थान,
जयपुर
अप्रेल १, १९७५

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि भगवान महावीर के २५००वें निर्वाण महोत्सव वर्ष मे जैन नवयुवक मण्डल, बारा द्वारा महावीर जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष मे एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

आशा है मण्डल द्वारा इस प्रकाशन मे भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित सत्य अहिसा, अपरिग्रह, प्रेम और करुणा के सिद्धान्तो का विस्तृत रूप से विवेचन किया जायेगा जिन्हे हम अपने जीवन मे ग्रहण कर भाषा प्रान्त, ऊँच-नीच जैसी क्षुद्र भावनाओ से ऊपर उठकर राष्ट्र की एकता और प्रगति मे अपना पूर्ण योगदान दे सकेगे।

इस अवसर पर मै अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।
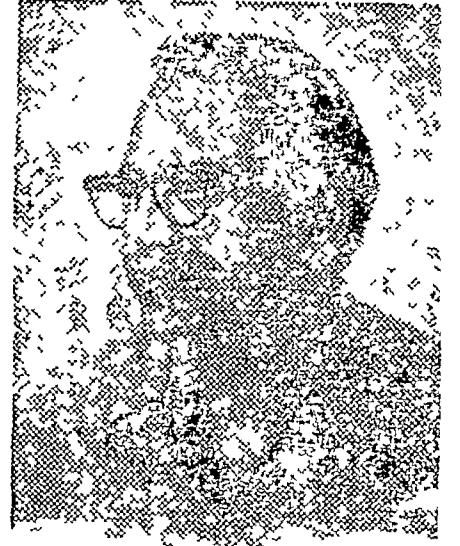
चन्दनमल वैद

आल इन्डिया दिगम्बर

# भगवान महावीर

## २५०० वां निर्वाण महोत्सव सोसायटी

## केन्द्रीय कार्यालय
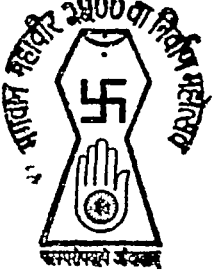
श्री दिगम्बर जैन लाल मन्दिर,
चाँदनी चौक, दिल्ली-११०००६
दूरभाष : २७७६४७
दिनाँक ७-४-७५

आपके पत्र द्वारा यह जानकर प्रसन्नता हुई कि जैन नवयुवक मण्डल भगवान महावीर के २५००वे निर्वाण महोत्सव के शुभावसर पर 'स्मारिका' प्रकाशित करने जा रहा है। साहित्य प्रकाशन द्वारा ही भगवान महावीर के सन्देशो का प्रचार-प्रसार सम्भव है, यह कार्य बडा ही उत्तम है। जिसके लिए मै अपनी शुभकामनाये आपको भेजता हूँ।

धन्यवाद।

आपका
सुकुमारचन्द्र जैन
प्रधानमन्त्री

अक्षय कुमार जैन
सम्पादक
नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली

आपका ५ फरवरी का पत्र मिला। यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि आप एक स्मारिका प्रकाशित कर रहे है।

मुझे आशा है उसमे भगवान महावीर के प्रेरणा-परक उपदेशो का संकलन होगा। आपके प्रयत्न की सफलता की पूर्ण कामना करता हूँ।

भवदीय
**अक्षयकुमार जैन**

भगतराम जैन
मन्त्री
आल इन्डिया दिग भगवान महावीर
२५०० वा निर्वाण महोत्सव सोसायटी

आप स्मारिका का प्रकाशन कर रहे हैं, यह जान कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष मे बहुत सी स्मारिकाएं प्रकाशित हो चुकी है। तथा हो रही है। प्रचार की दृष्टि से इनका अत्यन्त महत्व है। स्वयं के उत्थान के लिए अधिक से अधिक सामग्री मिल सके, स्मारिका मे एसा प्रयत्न होना चाहिए।

मैं अपनी ओर से शुभ कामना भेजता हूँ।

भगतराम जैन
मंत्री

महामन्त्री
आल इन्डिया दि० भगवान महावीर
२५०० वां निर्वाण महोत्सव
सोसायटी राज.प्रदेश, जयपुर

महावीर जयन्ती पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिए लेख तथा शुभ कामना सदेश भेजने के लिए आपका पत्र मिला। लेख साथ मे प्रेषित है।

मेरी हार्दिक कामना है कि भगवान महावीर के उपदेशो को जन-जन तक पहुँचाने में सफल हों।

बिरधीलाल सेठी

सोहनराज कोठारी
जिला एव सत्र न्यायाधीश
कोटा

मुझे यह जानकर अत्यत प्रसन्नता हुई कि भगवान् महावीर के २५०० वे निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष मे महावीर जयन्ती के अवसर पर जैन नवयुवक मडल बारा 'स्मारिका' प्रकाशित करने जारहा है– नवयुवक मंडल ने निर्वाणोत्सव बडी शालीनता से समारोह पूर्वक मनाया और यह स्मारिका भगवान् महावीर के जीवन दर्शन को जन-जन मे प्रसारित करने का स्थायी माध्यम बनेगी, ऐसी मुझे आशा है। मैं आपके सत्-प्रयास की सराहना करता हुआ आपकी सफलता की कामना करता हूँ—

धन्यवाद सहित।

सोहनराज कोठारी

# सम्पादकीय—

भगवान महावीर का २५००वां निर्वाण-महोत्सव वर्ष न सिर्फ सम्पूर्ण भारत में, अपितु विश्व के कोने-कोने मे अत्यन्त उत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है। शासकीय एवं सामाजिक सभी संस्थाये परस्पर सहयोग से अनेकानेक रचनात्मक आयोजन कर रही है। एक बड़ी धनराशि भगवान महावीर के सन्देश के प्रचार-प्रसार के लिये व्यय की जा रही है। प्रश्न यह है कि इस सब की उपलब्धि क्या है ? सिर्फ जोश मे आकर हम ये आयोजन कर रहे है या वास्तव मे हमने उनसे कुछ सीखा है ? इस समय समस्त भारत मे चार धर्म चक्र परिभ्रमरण कर रहे है। धर्मचक्र के आगमन पर बहुत आडम्बर एवं कोलाहल किया जाता है—क्यों ? मै मानती हूँ कि हम जैन धर्म को विश्व धर्म के रूप मे स्थापित करना चाहते है। इसके लिये जैन धर्म के सिद्धान्तों के प्रचार एवं प्रसार की आवश्यकता है। यदि हम जैन धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार करना चाहते है तो हमे उन सिद्धान्तों को सर्व सुलभ बनाना होगा।

जैन शब्द का अर्थ है—जितेन्द्रिय का अनुयायी; यही इस धर्म की सही व्याख्या है। किन्तु फिर भी हमे नाम के प्रति दुराग्रह छोड़ना होगा। विचारों को प्रधानता देकर ही हम अपने धर्म को विश्वधर्म बना सकते है।

बौद्ध धर्म का आविर्भाव जैन धर्म के २४वे तीर्थंकर श्री महावीर के समय में ही हुआ। क्या कारण है कि बौद्ध धर्म भारत के बाहर विदेशो मे फैल गया; जबकि जैन धर्म भारत में ही कैद होकर रह गया, इतना ही नही, भारत मे भी इसके 'तथाकथित' अनुयायियों की संख्या बहुत कम है और उन 'तथाकथित' जैनियो मे भी वास्तविक जैन नगण्य है। इसका मूल कारण यह है कि हमने आचार को प्रमुख स्थान देकर विचार को गौरण बना दिया, जबकि विचार के साथ आचार तो स्वयमेव आ जाता है। दर्शन के साथ ज्ञान एव चारित्र स्वय चले आते है तो आवश्यकता इस की है कि हम आचार से चिपके रहने की प्रवृत्ति छोडकर जैन सिद्धान्तो को सहज, बोधगम्य, एवं सुलभ रूप मे विश्व के सामने रखे।

"भगवान महावीर २५०० वा निर्वाण महोत्सव महासमिति" ने जो कार्यक्रम तैयार किया है वह कुछ मात्रा मे इस लक्ष्य की पूर्ति करता है। भारत सरकार द्वारा "नेशनल कौसिल ऑफ जैनोलॉजिकल स्टडीज एण्ड रिसर्च" की एक स्वायत्त शासित सस्था के रूप मे स्थापना की जा रही है। यह सस्थान देश के विभिन्न क्षेत्रो मे स्थापित शोध-सस्थानो और केन्द्रो मे उच्च-स्तरीय जैन शोध-प्रवृत्तियो का सयोजन करेगा। विशेष प्राथमिकता दो संस्थाओं को दी जायेगी—(१) वैशाली स्थित शोध—सस्थान को, क्योकि वहा भगवान महावीर का जन्म हुआ, २—मैसूर विश्वविद्यालय मे स्थापित जैन शोधपीठ को, क्योकि दक्षिरण मे प्रचुर जैन साहित्य एव पुरातत्व विषयक सामग्री बिखरी पड़ी है। इन शोध-सस्थानो के अलावा अन्य विश्वविद्यालयों मे भी जैन-पीठ स्थापित किये जाने चाहिये, जहाँ पर मुमुक्षुओ को अध्ययन की पूर्ण सुविधाये मिल सके।

जन साधारण के लिए जैन धर्म के सिद्धान्तो पर आधारित पुस्तको के प्रकाशन की योजना भी महासमिति ने प्रस्तावित की है ताकि जैन धर्म के सिद्धान्तो को सर्वजन सुलभ बनाया जा सके।

आज समूचा विश्व अशान्ति, वैमनस्य, असहिष्णुता, प्रतिहिसा के कगार पर खडा है एवं अपने अस्तित्व की सुरक्षा के लिए चिंतित है। विकल एव सन्तप्त मानव सुख की खोज कर रहा है। तो फिर वह ऐसे सुख की खोज क्यो न करे जो शाश्वत हो। वह शाश्वत सुख उसे भौतिक वस्तुओं के सग्रहीकरण मे नही मिलेगा वरन् उससे तो उसकी तृष्णा बढती चली जायेगी। इस शाश्वत सुख को पाने के लिए उसे भगवान महावीर के सिद्धान्तो की शरण लेनी पडेगी। महावीर ने सन्तुलित और सुखी जीवन जीने के लिये चिन्तन मे अनेकान्त, भाषा मे स्याद्वाद, आचार-व्यवहार मे अहिसा एव अणुव्रतो का मार्ग सन्तप्त जन सामान्य को दिखलाया। जब हम दूसरो के विचारो का आदर करेगे एव उनके प्रति सहिष्णु बनेगे तब सहज ही सारे विवादो, वैमनस्यो एव सघर्षों का शमन हो जायेगा। अनेकान्त पर आधारित चितन, प्रजातांत्रिक पद्धति और समाजवादी समाज रचना की आधार शिला है। समाजवादी समाज-रचना के लिये महावीर ने अपरिग्रह पर बल दिया। सग्रह, शोषण और भ्रष्टाचार का विरोध करते हुए आजीविकोपार्जन मे भी प्रामाणिकता और न्याय को प्राथमिकता देने का उपदेश दिया। साधको के लिए अपरिग्रह व्रत का उपदेश दिया था गृहस्थो के लिये परिग्रह-परिमाण का उपदेश दिया।

भगवान महावीर के २५००वे निर्वाण महोत्सव वर्ष मे भगवान महावीर के सन्देश को जन-जन तक पहुँचाना हमारा पुनीत कर्त्तव्य है। भगवान महावीर की वाणी को कुछ अशो में सर्वजन सुलभ बनाने का जैन नवयुवक मण्डल बारा द्वारा किया गया यह प्रयास कहाँ तक सफल हुआ है, इसका निर्णय तो विज्ञजन ही करेगे।

अनेको त्रुटियो एव असुविधाओ के रहते हुए यह "स्मारिका" जैसी भी बन पाई है, आपके समक्ष प्रस्तुत है। टाईपिग आदि की अनेको अशुद्धियो के बावजूद भी यह प्रयास विद्वज्जनो को समर्पित है। "स्मारिका" के सम्पादन मे रही ज्ञात-अज्ञात भूलो को विज्ञजन प्रथम प्रयास एव सहृदयता के नाते क्षमा करेगे। इसी विश्वास के साथ—

**—माणक सेठी**

# हम जिनके आभारी हैं-

# जैन नवयुवक मण्डल

## बारां

वीर वाणी को जन-जन के हृदयागन तक पहुचाने का हमारा यह प्रथम प्रयास आपके हाथो मे देते हुए अपार हर्षानुभूति हो रही है।

भगवान महावीर की असीम अनुकम्पा से श्रद्धा का पुनीत पुष्प 'स्मारिका' समयाभाव मे जैसा भी हो सका है आपके समक्ष प्रस्तुत है।

स्मारिका प्रकाशन मे जिन महानुभावो ने हमारा हार्दिक सहयोग किया है उन सबके प्रति जैन नवयुवक मण्डल बारा कृतज्ञता ज्ञापित करना है। हम विशेष तौर पर 'स्मारिका' प्रकाशन समिति के अध्यक्ष श्री हजारीलाल जी बज, प्रकाशन समिति के सरक्षक, परामर्शदाताओ के आभारी है जिन्होने अपने विशद अनुभव एव कुशल निर्देशन से हमे लाभान्वित किया है।

विशेष तौर पर युवा कार्यकर्ता श्री नूतन कुमार जैन के भी हम आभारी है जिन्होने व्यस्तताओ के बीच समय निकालकर इस स्मारिका के स्वरूप निर्माण मे सहयोग दिया। हम श्री माणकचन्द जी सोनी श्री मानमल जी व्याख्याता के भी आभारी है जिन्होने स्मारिका के स्वरूप निर्माण मे सहयोग दिया।

हम ज्योति प्रेस के यवस्थापक श्री प्रेमचन्दजी सरवाडिया, मैनेजर श्री जोशीजी, श्री महेन्द्रजी जैन एवं समस्त विभागीय कर्मचारी रिखबीसिह, सीताराम, ओमप्रकाश दीक्षित, किशनसिह रघुवशी, गिरिराज गुप्ता आदि के अत्यन्त आभारी है जिन्होने दिन-रात अथक परिश्रम कर इस 'स्मारिका' के रूप को निखारा है तथा समय पर प्रस्तुति मे सहयोग दिया है।

हम जैन नवयुवक मण्डल के परामर्शदाता श्री डा० कैलाशचन्द सेठी, श्री बाबूलाल जैन एवं श्री राजेन्द्र कुमार जैन, डा० जैन के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते है जिनका स्मारिका प्रकाशन के लिये अर्थ व्यवस्था एव रचनात्मक कार्यो मे सर्वाधिक सहयोग रहा है।

हम अपने विज्ञापनदाताओ के प्रति भी कृतज्ञ है जिनके सहयोग के अभाव मे 'स्मारिका' प्रकाशन की योजना पूर्ण होना असम्भव था। हम श्री प्रकाशचन्द सेठी, श्री वीरेन्द्र कुमार जैन

एडवोकेट एव श्री कैलाशचन्द्र गुप्ता (सी०ए०) के भी हार्दिक आभारी है जिन्होने विभिन्न संस्थाओ के विज्ञापन दिलवाने मे सहयोग दिया ।

भगवान महावीर २५०० वा निर्वाण महोत्सव समिति के मन्त्री श्री रतनकुमार जैन 'बज' एव सयोजक श्री हरिश्चन्द्र जैन एडवोकेट के भी हम आभारी है । हम जैन महिला मण्डल की अध्यक्षा एव कुशल सामाजिक कार्यकर्त्री श्रीमती सन्तोष कुमारी बज के प्रति भी आभार प्रकट करते है ।

सम्पादिका श्रीमती माणक सेठी की प्रशसा शब्दो मे की जायेगी तो शायद उनकी प्रतिभा को सीमा मे बाँधना होगा । फिर भी आपका मार्ग दर्शन एव सम्पादन जैन नवयुवक मण्डल के लिये चिरस्मरणीय रहेगा जिन्होने हमारे अनुरोध को स्वीकार कर 'स्मारिका' को सजाने-सवारने का प्रयास किया है ।

अन्त मे हम उन सभी महानुभावो के अत्यन्त आभारी है जिनका आभार हम जाने-अनजाने मे प्रकट नही कर सके है ।

हम आशा करते है कि भविष्य मे भी इसी तरह शासकीय अधिकारी एव समाज की महान विभूतियो का सहयोग एव आशीर्वाद हमे समय-समय पर प्राप्त होता रहेगा इसी आशा व अपेक्षा के साथ—

आपका

—दयाचन्द जैन 'रजनीश'
अध्यक्ष

"क्षमा वीरस्य भूषणम्"

# वर्तमान युग में श्रमण संस्कृति

उपाध्याय मुनि श्री विद्यानन्द जी

## उज्ज्वल श्रमण-परम्परा

श्रमण-सस्कृति को उज्ज्वल परम्परा ने शील, संयम, तप और शौच को चारित्र मे परिवर्तित कर मानवजीवन को युगो-युगो से विभूतिमय किया है। आचार और विचार के क्षेत्र मे युगान्तरकारी परिवर्तन उपस्थित किये है। मानव को मानव समझने का विवेक जन-मानस मे अंकुरित किया है और अखिल मगलमय अहिसा मूलक विश्व मैत्री का संदेश दिया है। समय-समय पर आने वाल दुरन्त उपसर्गों को पार कर आज भी वह अपने आर्ष धरातल पर अवस्थित है और काल-प्रभाव से प्रभावित न हाते हुए काल दोषो को निरस्त करने मे हो सतत संलग्न है। आज जबकि विश्व मे काले, गोरे तथा परस्पर भिन्न-जातिसत्ताक मानवो मे एक-दूसरे को समाप्त करने को स्पर्धा लगी हुई है, जिघासुवृत्ति से सीमातिक्रमण किये जारहे हैं, मानव को परित्राण देने का पाथेय केवल उदार श्रमण-संस्कृति मे है। क्षमा और अहिंसा के मणि-पीठ से भगवती जिनवाणो पुकार-पुकार कर कहती है—'खम्मामि सव्वजीवान् सव्वे जीवा खमन्तु मे' मैं सब जीवो को क्षमा करता हूँ और सारे जीव मुझे क्षमा करें। सम्पूर्ण भूगोल और खगोल पर एकाधिपत्य चाहने वालो को 'परिग्रह-परिमाण' के सूक्त श्रमण सस्कृति ने ही दिये है। जहाँ शरीर भी परिग्रह है वहाँ सग्रह-वृत्ति के लिए स्थान कहाँ ? ऐसी उदार, करुणावतार तीर्थंकर-वाणी का प्रसार करता निर्मल मन, काय, वचन दिखलाता जन को मोक्ष-द्वार। सम्यक्त्व-शिला पर लिखे यहाँ दर्शन-ज्ञान-चरित्र-लेख सम्पूर्ण विश्व को अभयदान देते जिनवाणी के प्रदेश। इसकी कल्प-वृक्ष छाया में स्थित होकर मानव धर्म ने अपना सर्वस्व प्राप्त किया है।

## श्रमण संस्कृति का मानव-जाति पर उपकार

इस संस्कृति ने मानव को भक्ति-मार्ग दिया, मुक्ति-पथ के रत्न-सोपानो की रचना की और विश्व-बन्धुत्व के भाव दिये। इसके आश्रय में पलकर मनुष्य ने अहिंसक समाज की रचना को और अपने को व्यसनो से मुक्त किया, व्रत-निष्ठ किया। इसी के नेतृत्व में मनुष्य आदर्शों के ऊँचे मार्गों का आरोही बना और इसी के आचार-मार्ग से चल कर उसने कैवल्य प्राप्त किया।

## न धर्मो धार्मिकैर्बिना

ऐसी निर्दोष संस्कृति में आज जान-बूझकर विकारो का प्रवेश कराया जा रहा है। जहाँ श्रमण-श्रमणी और श्रावक-श्राविका (चतुःसंघ) मिल कर धर्म के इस महारथ को खीचते थे, वहाँ आज ये पृथक-पृथक होकर 'महारथ' को गति देने में असमर्थ हो गये है। अंग और अंगी के समान धर्म और धार्मिक का नित्य सम्बन्ध है। 'न धर्मो धार्मिकैर्विना' यह अव्यभिचारी सूक्त है।

## तीन रत्नों की माला

मोक्ष मार्ग का निरूपण करते हुए 'सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित्राणि मोक्ष-मार्गः' कहा गया है। 'मोक्ष-मार्गः' पद एकवचनान्त है और 'सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि' बहुवचन है। मोक्ष मार्ग मे 'त्रितयमिदं व्याप्रियते' ये तीनो साधन है। इनमे से किसी एक अंग को लेकर प्रवर्तमान होने वाले सम्यक्त्व की अखिलता को जानकर उसके खण्ड से चिपके हुए हैं। समाज का पण्डित वर्ग सम्यक्त्व परिछिन्न ज्ञान को लिए घूमता है। श्रावक सम्यग्दर्शन से सन्तुष्ट हैं, और त्यागी चारित्र मात्र मे अपने श्रामण्य को कृतार्थ समझते है। एक सूत्र मे पिरोने पर जो माला निर्माण की जाती है, उसी की एक-एक मणि को विकीर्ण करने से माला का गुम्फ नही आ पाता। सम्यक्त्व से विशिष्ट दर्शन, ज्ञान और चारित्र की यह माला ही अपने अत्रुटित जाप्य से मोक्ष सिद्धि दे सकती है। इसे एकैकश. विभक्त करने वाले तो 'अन्धगजन्याय' के अनुगामी है। जैसे अन्धगजन्याय-परस्पर अपने 'गज' सम्बन्धी ज्ञान पर विवाद करते है और अपने एकागी एकान्त ज्ञान को सत्य ठहराते हैं, उसी प्रकार मोक्ष मार्ग के त्रिरत्न-सत्य को विभक्त कर एक दूसरे से निरपेक्षता रखने वाले सामाजिको ने सर्वोदयी तीर्थ के तीन मणिसोपानो का अलग-अलग अपहरण कर लिया है।

## भावात्मक विभिन्नता के दुष्परिणाम

यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो इस अपहरण काण्ड से समाज मे गिरावट ही आई है। एक के पास कर्म के संवर करने का दिव्यायुध रह गया है तो निर्जरा का अमोघास्त्र नही है तो दूसरे के पास-'निर्जरा' मात्र रह कर 'सवर' का अभाव हो गया है। परिणामस्वरूप विसंवाद और शिथिलाचार का प्रवेश हो गया है। समाज अपने संगठन की शक्ति को खोता जा रहा है। 'नागेन्द्रा अपि बध्यन्ते संहतै-स्तृणसचयैः' तिनको की रस्सी बना कर उससे गजराज को बाध लिया जाता है। किन्तु यदि तिनका-तिनका पृथक् कर दिया जाए तो ? स्पष्ट है कि उसमे गजेन्द्र-बन्धन का सामर्थ्य नही है। सम्य-क्त्वानुपूर्विक दर्शन-ज्ञान-चारित्र को एक बंटी हुई रस्सी के रूप मे देखने वाला ही उससे परम पुरुषार्थ की उपलब्धि कर सकता है। इस समन्वित दृष्टिकोण को चतुःसघ की भावात्मक एकता से ही प्राप्त किया जा सकता है। आहार देने वाला और उसे ग्रहण करने वाला तथा आहार-शास्त्र की व्यवस्था देने वाला (श्रावक-श्रमण और पण्डित) तीनो यदि सघ-प्रेम से कर्तव्य-नियोजित हो तो आचारशैथिल्य आ ही नही पायेगा। अपना हाथ अपने मुँह मे विषाक्त कवल नही देता। किन्तु अपने हाथ और मुँह, जो शरीर के अग हैं तथा अगो के लिए कर्तव्य-समर्पित है यदि अपना 'अंगागी-भाव' भूल जाएँगे तो विष-कवल देना हाथ के लिए और उसे उदरसात् करना मुँह के लिए कठिन नही होगा। 'एकोदरा पृथग्ग्रीवा अन्योन्यफलभक्षिणः। त एव निधनं यान्ति' यह एक कथा है जिसमे बताया गया है कि पशु के पेट तो एक था, किन्तु मुख दो थे। एक दिन दोनो मुख किसी बात पर झगडने लगे। परस्पर की वैर भावना से उनमे से एक मुख ने विष खा लिया। पेट तो एक ही था। परिणाम यह हुआ कि वह मर गया। जो एकोदर होकर विसवादी मुख रखते है वे अपनी ही मृत्यु के निमंत्रयिता बनते है।

## परस्परोपग्रह—एकमात्र समाधान

भावात्मक एकता के अभाव मे कभी-कभी ऐसा हो होता है कि दूसरे के अनिष्ट चिन्तन मे अपना अहित हम कर बैठते हैं। अपने सम्पूर्ण अंग से प्रेम करने वाला अंग के दूषण को दूर करने मे अपना सम्पूर्ण यत्न लगा देगा। यदि पाँव मे काटा चुभ गया है और सुई पास नही है तो वह अपने नखो से भी उसे निकाल बाहर करेगा। यही अग-धर्म है।

चतु सघ मे, जैसा कि आजकल सुनने में आ रहा है, यदि आचार-शैथिल्य प्रवेश कर गया है तो अगांगी भाव से उसका निराकरण करना अधिक श्रेष्ठ है। एक दूसरे पर दोषारोपण न करके 'परस्परोपग्रह' से अपने अपवाद को, शैथिल्य को दूर कर सकें तो यह अच्छा रहेगा। कोई भी विनाशक तत्व सूचीमुख होकर प्रवेश करता है और जब निकलता है तो गोली के समान निकलने के मार्ग को विस्तीर्ण कर देता है। शिथिलाचार के विषय मे ऐसा ही कहा जा सकता है।

## लोकैषणा का अनुचित रूप

आजकल के छपे धार्मिक ग्रन्थो मे अर्थ सहायता करने वाले धनिक के फोटो छापे जाते है। जिनकी प्रेरणा से ग्रन्थ छपते है उन श्रमणो के भी चित्र उनमे होते है। जो लोग रात-दिन हजारो-लाखो रुपयो से खेलते है, वे धार्मिक ग्रन्थो के पृष्ठो से अन्यत्र अपना अर्थ-व्यय करते समय कभी 'फोटो' नही छपवाते किन्तु धर्मध्वज होने की तृष्णा मे लौकैषणा साथ मिली होती है। केवल धर्म भाव से 'गुप्तदान' आज कल नही किया जाता। भले ही अधर्म करते समय व्यय किये गये लाखो रुपयों पर उनकी 'फोटो' न लगे, किन्तु धर्म शरीर पर उनकी मुद्रा (द्रव्य) अमुद्रित कैसे रहे? इन 'फोटो' मे जूते पहने हुए, सपरिवार 'दानी' छपते हैं। क्या पवित्र 'जिनवाणी' का सम्मान इसी प्रकार के अविनय से किया जाता है? अपनेमान को तृप्त करते समय धर्म ग्रन्थो की मर्यादा को भुलाने वाले स्वयं अपने कृत्य पर सोचे। इधर कुछ समय से मुनि-मूर्तियाँ बनाई जा रही है। पहले जिनवाणी के साथ फोटो छपते थे, अब 'जिन' भगवान के साथ मूर्ति भी रखी जाया करेगी। धीरे-धीरे प्रगति की जा रही है। एक वे त्यागी थे, जिन्होने जिनवाणी को ग्रन्थ रचना का रूप देकर भी अपने आपको पर्दे मे रखा, परिचय तक नही लिखा और धर्म ध्यान करते हुए जीवन को सार्थक किया। श्रावकों ने भावना से अभिभूत होकर उनकी 'चरण-पादुका' विराजमान कर दी। उन चरण-पादुकाओ का इतिहास भी विशेष विस्तृत नही। पचम काल के श्रुतकेवली भद्रबाहु आचार्य और ज्ञान-ज्योति से भासमान कुन्दकुन्द आचार्य जैसो को समाधि-मरणोत्तर प्रतिष्ठा रूप मे 'पद पादुकाएँ' मिलती है। चन्द्रगिरि पहाडो का शिलालेख है— 'जिनशासना-यावनरत 'भद्रबाहु-चन्द्रगुप्त' मुनि-पतिचरण मुद्राकित विशालशी……१६२।' कुन्दाद्रि आदि क्षेत्रो मे भी आचार्य कुन्दकुन्द की चरण-पादुकाएँ ही मिलती है, मूर्तियाँ नही। आज तो पचम काल अपनी सम्पूर्ण प्रभविष्णुता के साथ ताल देकर नाच रहा है। शरीर को भी परिग्रह मानने वाले मुनि प्रतिमाओ के लिए प्रेरणा दे रहे है। किन्तु 'नातस्त्वमसि नो महान्' कहने का साहस रखने वाले परीक्षा-प्रधानियो को आगम विरुद्धता से उत्कीर्ण ये प्रस्तर क्या मान्य होगे?

## समय की मांग

समय की माँग तो यह है कि सहस्रातिसहस्र मूर्ति से सम्पन्न जैन-जगत नवीन मूर्ति-निर्माण से पूर्व अपने मन्दिरो, चैत्यालयो मे प्रतिष्ठापित जिन-बिम्बो की पूजा प्रक्षाल की व्यवस्था करे। ग्रन्थो और मूर्तियो की संख्या कम नही है। कमी है तो उनके स्वाध्यायियो और उपासको की है। इस संख्या को बढ़ाने की ओर ध्यान देना अतीव आवश्यक है। भगवान की मूर्तियाँ, एक-एक मन्दिर में अनेक है। एक की पूजा वन्दना करते है तो अनेको की ओर पीठ हो जाती है। इस अविनय से अपने को बचाते हुए देव-दर्शन के नियमो का पालन करने मे अपनी धर्म प्रवृत्ति लगाओ। धर्म और जीवन को एकाकार करो। मत समझो कि मन्दिर से लौटने पर मूर्ति आँखो से परोक्ष हो गई। भावचक्षुओ मे उसे अहर्निश विराजमान रखो। दश दिनो में दश-लक्षण पर्व को समाप्ति मत करो। प्रत्येक दिन

अहिंसा का है, परिग्रह परिमाण का है, क्षमावाणी का है। जब तक धर्म की इस दार्शनिक व्याख्या को हृदयगम नही करोगे, धर्म जीवन का अंग नही बनेगा। अग्नि और उसका दाहकत्व, पानी और उसका शीतलत्व अग्नि से,पानी से पृथक् होकर नही रहता। धर्म और धर्मी एकनीड होकर रहते है। श्रमण संस्कृति की सुरक्षा के लिए यह स्मरण रखना आवश्यक है। एक समय देश में श्वेताम्बर, दिगम्बर मन्दिरमार्गी पृथक् होकर विचरते थे, किन्तु आज तो विश्व के नागरिक, धर्म और सभ्यताएँ परस्पर देशो और मानवो में निविष्ट हो रही है। ऐसे मे 'वीर' के अनुगामी भावात्मक एकता भी न रख सकें तो विश्वबन्धुत्व का सन्देश किस मुँह से दे सकेंगे ?

---
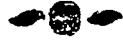
हे भव्य जीव ! मोक्ष मार्ग मे अपने आत्मा को स्थापित कर, उसी का ध्यान कर, उसी को चेतअनुभव कर और उसी मे निरन्तर विहार कर, अन्य द्रव्यो में विहार मत कर।

—कुन्द कुन्दाचार्य 'कुन्द'

भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण महोत्सव के

शुभ अवसर पर

# शुभ कामनाओं के साथ

फोन . दुकान ३७ निवास : ३७ एवं २७ तार : शोभाग

## शाह करमचन्द एण्ड कम्पनी

ग्रेन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट, बारां

ब्रांच :

## शाह करमचन्द एण्ड कम्पनी

नई धानमण्डी, कोटा

सम्बन्धित फर्म :

## माधोजी करमचन्द एण्ड कम्पनी

बारां

भगवान महावीर के २५०० वे
निवणि महोत्सव के शुभ अवसर पर
**हार्दिक शुभकामनाऐं**

फर्म– **गोरधनलाल छप्पनलाल**
ग्रेन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट
हरनावदा शाहजी

ब्रांच— रामगंजमंडी

फोन 74
तार Good Luck

---

भगवान महावीर के २५०० वें
निर्वाण महोत्सव के शुभ अवसर पर

**हार्दिक शुभकामनाऐं**

Phone . 42 PP.

**डा. घनश्याम बरदानियाँ**
M. B B. S

बारां [राजस्थान]

---

भगवान महावीर २५००वाँ निर्वाण पावन
महोत्सव के शुभ अवसर पर
**शुभकामनाओं सहित**

फोन : 54

**मेसर्स टीकमचन्द माणकचन्द जैन**
ग्रेन किराना मर्चेन्ट एवं कमीशन एजेन्ट
बाराँ (कोटा-राज०)

सम्बन्धित फर्म—
अशोककुमार एंड कम्पनी, बाराँ

---

भगवान महावीर २५००वां निर्वाण
महोत्सव के अवसर पर

**शुभ कामनाओं सहित**

फोन : ६१

**मेसर्स घनश्याम ट्रेडिंग कम्पनी**
गुड़, शक्कर, तेल, वेजीटेबल एवं
किराने के व्यौपारी

बाराँ ( कोटा राजस्थान )

भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण महोत्सव

एवं

महावीर जयन्ती की शुभ बेला में

# नगरपालिका बारां अपील करती है कि

१—अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह एवं शांति के अग्रदूत भगवान महावीर के आदर्शों का अनुकरण करें।

२—अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान बनें।

३—स्वस्थ नागरिक भावनाएँ जागृत करें और देश समाज और नगर के लिये संकल्प लें।

४—अस्पृश्यता (Untouchability) का निवारण करें।

५—खाद्य-सामग्री में शुद्धता रखें।

६—संयम से सीमित परिवार।

**मनमोहन जैन**
अधिशाषी अधिकारी

**महावीर जैन**
आर० ए० एस०
प्रशासक
**नगरपालिका बारां**

# श्रीमद्भागवद्गीता में भगवान महावीर

आचार्य रमेशचन्द्र शास्त्री
एम ए., विद्यासागर

[ श्री मद्भागवद्गीता सनातन धर्मावलंबियो का धार्मिक ग्रन्थ माना जाता है। उसमे प्रतिपादित सिद्धान्त गुणातीत एवं स्थितप्रज्ञ व्यक्ति के लक्षण भगवान महावीर मे अक्षरश· पूर्ण रूप से खरे उतरते है। प्रस्तुत लेख मे विद्वान लेखक ने इसी तथ्य का सप्रमाण निरूपण किया है।]

—सं०

यह मानव शताब्दियो से अपने कलुषमय कष्टो को काटने के लिए कठोर से कठोर कर्म करता आया है। अपने जीवन मे वह सर्वदा ही स्वय को नानाविधि दुखो से दलित तथा विकलित पाता रहा है। इस धरा-धाम पर ऐसे महान आचार्यो तथा पथ-प्रदेष्ठाओ की कभी कमी नही रही, जिन्होने मानव मात्र के कष्टो को स्वय अनुभव करके उन्हे दूर करने के उत्तम से उत्तम उपाय अथवा प्रयास न किये हो। ऐसे परम अवधूत आचार्यो, सन्यासियों कर्मयोगियो, धर्म-मर्मज्ञों, ऋषियो, महर्षियों, मुनियो महामुनियो और सन्तो मे भगवान महावीर स्वामी हमे मन्थन के समय महासागर के अन्तस्थल से समुद्रभूत कौस्तुम्भ मणि के समान स्वयं की तेजस्विता एवं वर्चस्विता से अखिल विश्व से पृथक ही प्रतीत हो रहे है। यदि हम उन्हे अतिमानव भी कहे तो कोई अत्युक्ति न होगी। इसी कारण जैन धर्म मे उन्हे सर्वज्ञ परमेश्वर का स्थान प्राप्त है।

भगवान महावीर का ज्ञान वह अग्नि है, जिसमे जन्म-जन्मान्तरो के पाप-पुञ्ज पलाल के तुल्य भस्मसात् हो जाते है। ज्ञानाग्नि सर्व कर्माणि भस्यसात् कुरुतेऽर्जुन। योगीराज श्रीकृष्ण का यह कथन जिन ज्ञानयोगियो के लिए है· उनमें भगवान महावीर का अन्यतम स्थान है। उनका चरित्र हिमगिर से भी ऊँचा तथा हिमखण्ड से भी अधिक शातिदायक है। उनके चरित्र के सूत्र अनुपम एवं सुदृढ है जिन्हें पकड कर कोई भी व्यक्ति दानव से मानव और मानव से महामानव बन सकता है। भगवान महाबीर के स्फटिक मणि के समान उज्वल चरित्र को यदि परखना हो तो हमे गीता के नीचे लिखे पद्यो पर दृष्टिक्षेप करना चाहिये—

सम दु·ख सुखः स्वस्थ· सम लोष्टाश्म काञ्चनः।
तुल्य प्रियाप्रियो धीरस्तुल्य निंदात्मसस्तुतिः॥
मानापमानस्तुल्य स्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः।
सर्वारंभ-परित्यागी गुणातीतः स उच्यते॥

आइये ! इन पद्यो की दृष्टि से भगवान महावीर स्वामी के परम-पावन चरित्र को परखने का प्रयत्न किया जाय।

सम दुख· मुख :—

समार मे दु ख और सुख का द्वन्द्व अविचल है। जब तक आत्मा संसारी रहती है तब तक वह इन. द्वन्द्वो को भोगता है। स्व-प्रतिकूल विषयो मे वह दुखो का अनुभव करता है (प्रतिकूल वेदनीयम् दु खम्।) और स्वानुकूल विषयो मे वह सुख का अनुभव करता है (स्वानुकूल वेदनीय सुखम्)। भगवान महावीर ने स्वय को इतना अपरिग्रही और इन्द्रियातीत बना लिया था जिस कारण वे न तो दु ख से विचलित होते थे और न सुख से स्वय को सुखी अनुभव करते थे।

स्वस्थ ·—

यह स्वस्थ शब्द यहा शारीरिक स्वास्थ्य से सम्बघ नही रखता स्व का अर्थ यहा आत्मा से है। अत। स्वस्थ शब्द का तात्पर्य यहा आत्मनिष्ठ व्यक्ति से है। भगवान महावीर अपने जीवन मे ही बाह्य ससार से नितान्त निरपेक्ष हो गये थे। उन्हे बहिरंग भावो से किसी भी प्रकार की अपेक्षा नही रह गई थी वे आत्मस्वरूप पावस्थित आत्मरत योगी थे।

समलोष्टाश्मकाञ्चन :—

भगवान महावीर को ससार की किसी भी अर्थ मे लिप्सा नही थी। भला जिस व्यक्ति ने अपने वस्त्र तक का त्याग निष्काम भावना से कर दिया उसे किस सांसारिक अर्थ के साथ लगाव हो सकता है। महान अपरिग्रही होने के कारण वे मिट्टी, पत्थर ओर स्वर्ण मे समभाव रखते थे। संसार के प्रति उनकी यह वीतरागता अद्वितीय थी। यही कारण है कि वे वीतरागियो के भी पथ-प्रदर्शक बन गये।

तुल्य प्रियाप्रिय ·—

भगवान महावीर की दृष्टि मे प्रियजन और पर जन समान थे, संसार में उनका न कोई प्रिय था और न अप्रिय ही। वे समस्त पारिवारिक बन्धनो को काट चुके थे। गृहत्याग के पश्चात् न उन्हे किसी से राग रह गया था और न द्वेष ही।

धीर —

विद्वानो की दृष्टि मे धीर शब्द का एक विशेष अर्थ किया गया है—

विकार हेतौ सति विक्रियन्ते—
येषाँ न चेताँसि त एव धीरा·"

यदि मनुष्य के सामने विकार उत्पन्न करने का कारण, कोई योग्य विषय न रहे और वह यह कहे कि मैं तो धीर व्यक्ति हूँ क्योकि मैं विषयो से अलग रहता हूँ तो उसका यह कथन मिथ्या माना जायगा कारण, कि वह विषयो के अभाव मे स्वयं कोविषयो से पृथक बना रहा है। धीर व्यक्ति वास्तव मे वही माना जायगा जिसके चारोओर विकारोत्पादक विषय विद्यमान हो और फिर उसका मन अविकारी बना रहे। भगवान महावीर ऐसे ही धीर थे। उन्होने समस्त राजकीय भोग्य विषयो का स्वय त्याग करके यह धीरता धारण की थी। वे समग्र भाव से अपनी लोभवृत्ति पर पूर्णत· विजय पा चुके थे। इसीलिए वे महावीर की पदवी से अलंकृत किये गये।

तुल्य निन्दात्म सस्तुति :—

भगवान महावीर स्वामी की दृष्टि मे निन्दा तथा स्तुति समान थे। वे न तो स्वयं किसी की निन्दा या स्तुति करते थे और न किसी के द्वारा अपनी निन्दा या स्तुति किये जाने पर अप्रसन्न अथवा प्रसन्न होते थे। वे उद्वेग रहित अविकारी महापुरुष थे। उन्होने अपने जोवन मे ही इतनो निस्संगता प्राप्त करली थी जिमसे इन पर किसी के द्वारा की गई निन्दा और स्तुति का प्रभाव नही होता था।

मानापमानयोस्तुल्य :—

मान-आदर या प्रतिष्ठा और अपमान—
अनादर या अप्रतिष्ठा ये दोनो ही संसार के दो

महत्वपूर्ण विषय है ये दोनो ही लोकेषणा के अन्तर्गत आते है। जिन व्यक्तियो में लोकेषणा अथवा लोकसंग्रह की वृत्ति विद्यमान रहती है वे स्वयं को मान मिलने पर सुखी तथा अपमान होने पर दुखी अनुभव करते है। भगवान महावीर ने लोकेषणा पर पूर्णतः विजय प्राप्त की थी अतः वे मानापमान के चक्र से पूर्णतः स्वतत्र थे।

## मित्रारिपक्षतुल्य :—

नीतिशास्त्रकारो का यह कथन है कि वनवासी मुनिजनो के भी मित्र, उदासीन तथा शत्रु होते है।

मुनेरपि वनस्थस्य मित्रोदासीनशत्रव.—

यही कारण है कि हम अनेक अरण्यवासी मुनिजनो के जीवन मे मित्र, शत्रु तथा उदासीन व्यक्तियो का सम्पर्क देखते है। परन्तु भगवान महावीर स्वामी के जीवन में इन तीनो ही पक्षो का अभाव था। वे स्वय को इतना ऊंचा उठा चुके थे कि वहाँ तक मित्र उदासीन, तथा शत्रु ये तीनो ही नही पहुँच सकते थे। वे वस्तुत कबीर की ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर" इस उक्ति के जीवित उदाहरण थे।

## सर्वारम्भपरित्यागी :—

दृष्ट तथा अदृष्ट फल के लिये किये जाने वाले कर्मों का नाम आरम्भ है। उनकी प्राप्ति के लिये मानव अपने जीवन मे प्रतिदिन नानाप्रकार के आरम्भ करता है। अपने जीवन को सुखमय बनाने के उद्देश्य से वह कुछ न कुछ कार्यारंभ करता ही जाता है। वह कर्मों से कभी विराम नही लेता है। इस प्रकार के आरम्भो से वह काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्थ इन छः रिपुओ के जाल मे फँसता जाता है। इस कारण समस्त आरम्भो का त्याग ही आत्मरत बनाने का एक मात्र उपाय स्वीकार किया गया है। भगवान ने स्वयं को सर्वारंभ परित्यागी बना लिया था क्योकि उन्होने अपनी सम्पूर्ण तृष्णाओ को वश में कर लिया था। अतः किसी कार्य के आरम्भ के प्रति उत्सुक नहीं थे। तृष्णा विजय ही सच्चे वीतराग व्यक्ति का वास्तविक लक्षण है जिसे भगवान ने प्राप्त कर लिया था।

## गुणातीत :—

इस संसार मे सत्व, रजस-तथातमस् इन तीन गुणो का ही वर्चस्व देखा जाता है। जो व्यक्ति इन तीनो गुणो के सम्मिलित प्रभाव से रहित बन जाता है वह गुणातीत कहाता है। इस सृष्टि के समस्त कर्म इन तीन गुणो के कारण ही प्रवृत्त हो रहे है। जो व्यक्ति स्वदेह धारण के लिये अनिवार्य कर्मों के अतिरिक्त अन्य सम्पूर्ण कर्मों का परित्याग करता है साथ ही अपने पूर्व सञ्चित कर्मों का क्षय करता है और फल प्राप्ति की दृष्टि से नये कर्म करता नही वह पुरुष गुणातीत हो जाता है। भगवान महावीर स्वामी ने कर्मो के इस जाल को काट डाला था अतः वे सही अर्थों में गुणातीत बन गये थे। गुणातीत होने के कारण ही वे कैवल्य अवस्था को प्राप्त हो गए थे।

इस प्रकार गीतादर्शन की दृष्टि से यदि हम भगवान महावीर स्वामी के चरित्र की परख करते है तो हम उन्हे परम सिद्ध पुरुष पाते है, साथ ही उनके रूप मे मानव जीवन का एक महान पथ प्रणेता अथवा पथ पुरुष भी पाते है। यह भारत भूमि ऐसे महापुरुषों के कारण ही गौरव से पूर्ण बनी है।

भगवान महावीर स्वामी के चरणों में हमारी श्रृद्धांजलि समर्पित है।

★

# भगवान महावीर का जीवन एवं उपदेश

### सं० प्र० मुनिश्री उदयचन्द जी म० जैनसिद्धान्ताचार्य

आज से करीब अढाई हजार वर्ष पहले की घटना है। हमारे देश मे हिंसा का भयानक दौर चल रहा था। हजारो पशु यज्ञ के बहाने मौत के घाट उतार दिए जाते थे। राजा यज्ञ करते और धर्म के ठेकेदार पुरोहित उन्हे उत्तेजना देते और स्वर्ग मिलने का आश्वासन देते थे। ऐसी स्थिति मे पशुओ की पुकार सुनने वाला कौन था ? जब एक रक्षक ही भक्षक बन जाये तो बचाने वाला कौन था ?

ऐसे समय मे चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन क्षत्रिय कुण्ड के राजा सिद्धार्थ को विभूति, महिमा मान-प्रतिष्ठा आदि मे खूब वृद्धि हुई थी। अतएव जन्म होने पर आपका नाम वर्द्धमान कुमार रखा गया। कुमार अपने नाम की तरह द्वितिया के चन्द्रमा की तरह बढने लगे। उनका रूप अत्यन्त सुन्दर था · शरीर बडा सुन्दर, सुडौल और स्वर्ण के समान गोरा था। वह बचपन मे भी विशिष्ट शक्ति-शाली निर्भीक और बुद्धिमान थे।

एक बार कुमार अपने साथी बालको के साथ जंगल मे खेलने गये। वे एक वृक्ष पर चढकर खेल रहे थे कि अचानक एक बडा विषधर वहा आ पहुँचा। उसने वृक्ष के तने को आकर घेर लिया। साक्षात् काल रूप सर्प को देखकर बालक घबरा उठे और कई मारे डरके वृक्ष पर से गिर भी पडे। मगर कुमार इतने निर्भय थे कि जरा भी नही घबराये वे धैर्य के साथ साप के फन पर पैर रखकर नीचे उतरे और उसे पकड कर एक तरफ छोड आये। उन्होने बालको के भय को दूर ही नही कर दिया उन्हे आश्चर्य मे डालदिया। कहते है, तभी से वर्द्धमान का नाम 'महावीर' पडा।

कुमार जन्मकाल से अपूर्व ज्ञानी थे। उन्हे अवधि ज्ञान प्राप्त था। जो भी कोई उनके पास आता, उसके संदेह का निवारण कर देते। उनके हृदय मे बाल्यकाल से ही वैराग्य के प्रबल सस्कार विद्यमान थे। अतएव संसार का उत्कृष्ट से उत्कृष्ट वैभव और मनोहर से मनोहर भोगोपभोग भी उन्हे लुभा नही सकता क्योकि अपने कई पूर्वभवो मे तपस्या करके वे आये थे। वे राजमहल मे रहते अवश्य थे, मगर उसी प्रकार जैसे जल मे कमल रहता है—अलिप्त।

वर्द्धमान अक्सर गभीर चिन्तन में मग्न रहा करते थे। उन्हे बाहर के रंग-राग नही सुहाते थे। अनेक चिरन्तन प्रश्न उनके मस्तिष्क मे आते थे और वे उनके सबध मे विचार करते। आखिर मानव जीवन का लक्ष्य क्या होना चाहिए ? मनुष्य की चरम सफलता किस उपलब्धि मे है ? प्रत्येक प्राणी सुख के लिये प्रयत्नशील होकर भी सुखी नही दिखता तो सुख का वास्तविक मार्ग क्या है ? इस प्रकार अगणित प्रश्न उनके मस्तिष्क मे चक्कर काटते रहते थे।

धीरे-धीरे परिवार में रहते हुए उनके जीवन के तीस वर्ष व्यतीत हो गये। उस समय उनकी विरक्ति परिपक्व हो चुकी थी। जगत उन्हें कारागार के समान प्रतीत होने लगा। ससार के भोगोपभोग उन्हे

नितान्त निस्सार प्रतीत ही हो रहे थे। अतः उन्होने आत्म-कल्याण के लिए साधना करने का मार्ग अपनाने का निश्चय कर लिया। सोने के सिंहासन को, सुखदायी राजमहल को और प्रेमी परिवार को त्याग कर वे भिक्षुक बन गये।

दीक्षा अंगीकार करके भगवान् जंगल में जाकर ध्यान मग्न हो गये। सिंह व्याघ्र आदि हिंसक जीव आते, उन्हे देखकर गुर्राते, परन्तु अहिंसा और करुणा की मूर्ति भगवान के समीप आकर वे ठंडे पड जाते थे। भगवान के मन में न भय था, न द्वेष था अतएव हिंसक प्राणी भी उनके मित्र बन जाते थे।

उन दिनों जगल मे एक बडा ही दृष्टिविष सर्प था—चंडकौशिक। उसके डर से लोग काँपते थे। उसकी ओर जाने का कोई साहस नही करता था। उधर का रास्ता बन्द हो गया था। पर निर्भीक भगवान् एक दिन, लोगो के मना करने पर भी उसके बिल के पास जा पहुँचे। चण्डकौशिक उन्हे देखकर फुंकारने लगा। वह समझता था कि मैं अपनी नजर के जहर से इस बाबा को भस्म कर दूँगा। परन्तु बाबाजी ऐसे-वैसे साधारण व्यक्ति नही थे। वे अपनी अमित अनुकम्पा और असीम समता के द्वारा विष को अमृत बना देने वाले अलौकिक महापुरुष थे।

चण्डकौशिक फुफकारता रहा और बाबाजी सुमेरु की तरह खड़े रहे। सर्प क्रोध से जल रहा था और बाबाजी प्रशसभाव का पानी उस पर छिडक रहे थे। साप की दृष्टि से विष बरस रहा था; भगवान महावीर की दृष्टि से अमृत झरना बह रहा था। एक ओर हिसा थी, दूसरी ओर अहिंसा थी। दोनो मे संघर्ष था। अहिंसा सदैव हिसा पर विजय पाती है। अहिंसा वह अमोघ शस्त्र है जो कदापि बेकार नही होता। यहाँ भी ऐसा ही हुआ। चण्डकौशिक की दृष्टि के विष को महावीर स्वामी ने अपनी दया, करुणा और अहिसा की शक्ति से अमृत बना लिया और वह विष उनका कुछ भी न बिगाड सका, तो चण्डकौशिक और कुपित हो उठा। उसने सरटि के साथ महावीर स्वामी के पैर मे अपनी दाढे चुभा दी। रक्त के बदले दुग्ध के समान धवल धारा बहने लगी। भगवान् अविचलित खड़े रहे। सांप चकित हो रहा था। इतने मे भगवान् ने कहा—चण्डकौशिक! बुज्झ, बुज्झ।

सर्प भगवान् की तरफ टकटकी लगाकर देखने लगा। उसी समय उसे जाति-स्मरण ज्ञान हो गया। उसने जान लिया कि पहले जन्म मे मैं साधु था, परन्तु अपने शिष्य पर क्रोध करने के कारण मुझे सांप की योनि में आना पडा है।

यह ज्ञात होने पर चण्डकौशिक पश्चात्ताप की आग में जलने लगा। वह प्रभु के चरणो में गिर पडा और अनशन करके प्राण त्याग कर स्वर्ग में देवरूप से उत्पन्न हुआ। इस प्रकार भगवान् ने एक बडा भारी खतरा उठाकर साप का उद्धार किया और जनता के संकट को दूर किया।

विहार करते-करते भगवान् एक बार अनार्य देश मे चले गये। वह देश साधु-संतो के लिए बिलकुल अनुपयुक्त था। वहाँ अत्यन्त क्रूर, असस्कारी, अधार्मिक और विवेकहीन लोग रहते थे। अतएव कोई भी साधु उधर जाने का साहस नही करता था। परन्तु महावीर स्वामी तो कोई साधारण पुरुष तो थे नही, वे वहां गये। अनार्य लोगो ने उन्हे घोर कष्ट दिये। किसी-किसी ने कुत्तो को छुछकार कर उनके पीछे लगा दिया और काटने के लिए उत्साहित किया किसी ने उनके शरीर पर धूल फैंकी। किसी ने पत्थर और डडे मारे। किसी ने गाँव मे न घुसने दिया। इस प्रकार अमानवीय अत्याचार सहन करते हुए भी भगवान् ने अनार्य देश मे अत्यन्त समभाव से विचरण किया। किसी पर क्रोध नही किया। जिस प्रकार युद्ध मे वीर सेनापति शत्रु की मार की परवाह न करता हुआ आगे बढ़ता जाता है, उसी प्रकार भगवान् भी आने वाले संकटो और

कष्टो की परवाह न करते हुए अनार्य देश मे विचरण करते रहे।

भगवान् महावीर की तपस्या बडा उग्र थी। शीतकाल मे वे जलाशयो के सन्निकट ध्यान लगाकर खडे हो जाते थे। वर्षा ऋतु मे वृक्षो के नीचे और ग्रीष्म ऋतु मे धूप में खडे होकर आतापना लेते थे।

भगवान् को शरीर के प्रति तनिक भी ममता या आसक्ति नही थी। उन्होने समस्त इन्द्रियो को पूरी तरह वश मे कर लिया था। देहाध्यास से वे सर्वथा मुक्त हो चुके थे। शरीर मे रहते हुए भी शरीर से सर्वथा भिन्न थे। यही कारण है कि खान-पान के विषय मे सर्वथा उदासीन रहते थे। अपने निमित्त बनाया आहार नही लेते थे; शुद्ध और निर्दोष आहार ही जब जहाँ मिल जाता, ले लेते थे, अन्यथा निराहार रहते थे। भगवान् ने कई बार एक पक्ष, एक मास, दो मास, चार मास और यहाँ तक कि छह मास तक के लम्बे-लम्बे उपवास किये थे। कई बार वे बडा ही कठिन अभिग्रह धारण कर लेते थे और जब तक उनकी पूर्ति न हो जाती, तब तक आहार ग्रहण नही करते थे। ऐसे एक अभिग्रह का उल्लेख चन्दनबाला की कथा मे किया जाता है। बारह वष, छह मास और चौदह दिन की घोर तपस्या के लम्बे काल मे भगवान् ने केवल ३४९ दिन ही आहार किया। शेष दिन निराहार रहकर ही व्यतीत किये।

भगवान् इस समय मे प्राय: मौन रहते थे। रात की रात खडे रहकर ध्यान मे व्यतीत कर देते थे। कभी श्मशान मे, कभी खण्डहरो मे और कभी दूसरे एकान्त स्थानो मे ध्यान किया करते थे। उन्हे रात्रि मे शयन करने की आवश्यकता भी नही रह गई थी।

इस प्रकार करीब साढे बारह वर्ष तक भगवान् महावीर ने उग्र तपश्चर्या की। इसी कारण वे दीर्घ तपस्वी कहलाते है। संसार मे अनेक बडे-बड़े तपस्वी हुए हैं और उन्होने भी बड़ी कठोर तपस्या की हैं, परन्तु भगवान् महावीर जैसी उग्र तपस्या करने वाला कोई दूसरा महापुरुष ससार के इतिहास मे दृष्टिगोचर नही होता। उनकी तपस्या का विस्तृत वर्णन आचाराग आदि शास्त्रो मे मिलता है। उसे पढकर ही साधारण व्यक्तियो का दिल दहल जाता है। जिज्ञासु पाठको को आचाराग का अध्ययन जरूर करना चाहिये।

आध्यात्मिक साधना की अवस्था मे भगवान् ने घोर से घोर कष्टो को आश्चर्यजनक समभाव से सहन किया। महावीर के कष्टो को देखकर देवराज इन्द्र का हृदय भी थर्रा उठा और वह उनकी सहायता और रक्षा करने को आया। मगर भगवान् ने सहायता लेने से इन्कार करते हुए स्पष्ट शब्दो मे कहा—वीर पुरुष अपने ही बाहुबल से दु:खो का सागर पार करते है। दूसरो की सहायता लेना, अपनी शक्ति को कुंठित रहने देना है। भगवान् का सिद्धान्त था कि—

अप्पा ! तुममेव तुमं मित्त,
किं बहिया मित्तमिच्छसि। (आचाराग सूत्र)

हे पुरुष ! तू आप ही अपना मित्र है। दूसरे मित्र की क्यो इच्छा करता है ? सचमुच भगवान् ने किसी की सेवा सहायता अगीकार नही की। वे आप ही भयानक से भयानक कष्टो मे जूझते रहे और अपने अप्रतिहत सकल्प बल से, अपनी असाधारण धीरता से और दृढता से उन्होने विजय प्राप्त की।

सकटो और कष्टो के साथ संघर्ष करते-करते और अप्रमत्त भाव से आत्मसाधना करते-करते अन्त मे उनकी आत्मा पूर्ण रूप से निर्विकार, निष्कलुष, निष्कषाय और निरजन हो गई। उन्हे लोकोत्तर दर्शन और लोकोत्तर ज्ञान की प्राप्ति हुई। साधना

की मुख्य मंजिल यहाँ तय हो गई।

अभी तक महावीर वैयक्तिक विकास में तल्लीन थे। जब वे सर्वज्ञदर्शी हो गये तब जगत के कल्याण में तत्पर हुए। सर्वप्रथम उन्होने इन्द्रभूति, गौतम आदि ब्राह्मण विद्वानो की शंकाओ का समाधान करके उन्हे अपना शिष्य बनाया। वे भगवान् के गणधर कहलाये। देश-देश मे पैदल भ्रमण कर उन्होने तत्कालीन कुरूढियो, गलत धारणाओं, भ्रान्तियो और बुराइयो को अपने उपदेश से दूर किया। उन्होने धार्मिक, सामाजिक और साहित्यिक क्षेत्र मे जो बलवत क्रान्ति की, उसे संक्षेप मे इस प्रकार दर्शाया जा सकता है :—

## १. अहिंसामार्ग

भगवान् के समय मे हिंसा का बहुत दौर दौरा था। बहुत से लोग हिंसा को धर्म का अंग मानने लगे थे। यज्ञ के नाम पर मनुष्यो, गायो और घोडो आदि का निर्दयता पूर्वक वध किया जाता था। बाहर के क्रिया काण्ड मे ही धर्म समझा जा रहा था। भगवान् ने इस हिंसा और बाह्य आडम्बर का विरोध करके जनता को अहिंसा की महत्ता समझाई और कहा कि जगत् मे अहिंसा से बढकर कोई धर्म नही हो सकता और हिंसा से बडा कोई पाप नही हो सकता। भगवान् के उपदेश का लोगो पर अच्छा प्रभाव पडा और लोगो को हिंसा से घृणा हो गई। अब ऐसे हिसातमक यज्ञ नही होते, इसका श्रेय भगवान् महावीर के उपदेश को ही है।

## २. अनेकांतवाद

भगवान् के समय में बहुत-से मत-मतान्तर प्रचलित थे और वे एकागी सत्य को ही सम्पूर्ण सत्य समझते थे। सब का दावा था कि बस, हम ही सच्चे और सब झूठे है। भगवान् ने जनता को सर्वांगीण सत्य का स्वरूप समझाया। वस्तु के स्वरूप को विविध दृष्टि-बिन्दुओ से देखने की शिक्षा दी। पारस्परिक विरोध का मंथन करके सकीर्णता की जगह विराट्ता की स्थापना की। यह सिद्धान्त स्याद्वाद भी कहलाया।

## ३. कर्मवाद

जीवात्मा दैव, नियति या ईश्वर के हाथ की कठपुतली नही। वह स्वयं अपने दुःख-सुख का निर्माता और भोक्ता है। उसकी मुक्ति उसी के हाथ में है। इस प्रकार आत्म-स्वातन्त्र्य को बताने के लिए कर्मवाद का उपदेश दिया।

## ४. गुणवाद

उस समय जात-पात का बहुत जोर था। गुणों की कोई कीमत नही थी। जाति से ही उच्चता या निम्नता समझी जाती थी। भगवान् ने कहा— मनुष्य जाति एक है। गुणो से ही मनुष्य ऊँचा-नीचा होता है। उन्होने अपने श्रमणसंघ मे शूद्रो और ब्राह्मणो को समान दर्जा दिया।

## ५. क्रियाकाण्ड

बाह्य और दिखावटी कर्मकाण्ड के स्थान पर आत्मस्पर्शी सम्यक चरित्र को स्थापना की, जिससे व्यक्ति और समाज को समान रूप से शान्ति प्राप्त हो।

## ६. नारी प्रतिष्ठा

भगवान् के समय महिला जाति हीन दृष्टि से देखी जाती थी ब्राह्मणो ने उसे वेद का स्वाध्याय करने के लिए भी अनधिकारी घोषित कर रक्खा था। महात्मा बुद्ध ने अपने सघ मे स्त्रियों को स्थान नही दिया था। परन्तु महावीर स्वामी ने इस भेद-भाव का विरोध करके स्त्रियो को भी पुरुषों के समान अधिकार दिये। इस उदारता के फलस्वरूप उनके संघ मे ३६,००० महिलाएँ, जिनमे रानियाँ, महारानियाँ और राजकुमारियाँ भी सम्मिलित थी, दीक्षित होकर साध्वी बनी।

### ७. लोकभाषा का प्रयोग

उस समय विद्वान लोग बोल-चाल की भाषा को हीन दृष्टि से देखते थे और सस्कृत भाषा मे ही साहित्य लिखते थे, जिससे जनता धर्म के वास्तविक तत्त्व से अनभिज्ञ रहती थी। भगवान् ने अपने धर्म का बोल-चाल की भाषा मे उपदेश दिया। इससे साधारण जनता को बड़ा लाभ पहुँचा। वह अन्धकार से प्रकाश मे आ सकी।

भगवान् को वैशाख शुक्ला दशमी के दिन, जुम्भक ग्राम के बाहर ऋजुबालिका नदी के उत्तर तट पर, शामक नामक किसान के खेत मे, विशाल वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। केवलज्ञान होने के पश्चात् वे ३० वर्षों तक निस्पृह भाव से धर्म का उपदेश करते रहे। भारत के कोने-कोने मे उन्होने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह आदि का उपदेश दिया। उन्होने जो उपदेश दिया, उसमे न किसी प्रकार की स्वार्थ की भावना थी और न किसी प्रकार का आग्रह था। जिसे भगवान् का धर्म रुचिकर होता और जो उस धर्म मे दीक्षित होने की इच्छा करता था, उसे भगवान् यही उत्तर देते थे कि—'जहाँ सुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबधं करेह' अर्थात् हे देवो के प्यारे ! तुम्हे जैसे सुख उपजे, वही करो, उसमे ढील मत करो। इस प्रकार बिना किसी जबर्दस्ती के भगवान् ने अपने धर्म का प्रचार किया। भगवान् का उपदेश जनता को अत्यंत रुचिकर हुआ। अतएव उनके सघ मे १४,००० श्रमण और ३६,००० साध्विया सम्मिलित हुई। गृहस्थ शिष्यो की तो संख्या ही उपलब्ध नही है। वैशाली गणतत्र के अधिपति चेटक, मगध नरेश श्रेणिक और उनके पुत्र कोणिक आदि क्षत्रिय, आनन्द और कामदेव जैसे श्रद्धालु वैश्य, सकडाल पुत्र जैसे कुम्हार भी उनके अनुयायी थे। भगवान् के सघ मे शूद्रो का भी स्वागत समान रूप से किया जाता था। हरिकेशी जैसे श्वपाककुल-सभूत महात्मा भी इन्द्रभूति जैसे ब्राह्मणवर्ण के महात्माओ के समान ही आदर पाते थे।

भगवान् महावीर ने आज से अढाई हजार वर्ष पहले जो सामाजिक और धार्मिक आदर्श प्रस्तुत किये थे, उनका पूरी तरह अनुसरण जब तक हमारा देश करता रहा, सुखो, शान्त, समृद्ध और स्वतंत्र रहा। समय बीतने पर ज्यो-ज्यो वे आदर्श धु धले होते गये, देश फिर जाति-पाति के चक्कर मे पडता गया—जिसमे से भगवान ने उसे निकाला था। फिर से गुणो के बदले जाति की पूजा होने लगी। समाज में विषमता का विष फैलता गया और समाज खड-खड होकर दुर्बल हो गया। भारत का विभाजन भी जातिवाद का ही दुष्परिणाम है। महावीर के आदर्शो पर पूरी तरह भारत चला होता तो उसकी स्थिति आज निराली ही होती।

भगवान् के उपदेशो की अनेक विशेषताएँ है। वह देश और काल की सीमाओ से अतीत है। प्रत्येक देश और प्रत्येक काल मे समान रूप से उपयोगी है।

अन्त मे ७२ वर्ष की आयु में राजगृह के निकट पापापुरी ( पावा पुरी ) मे भगवान् समस्त कर्मों का क्षय करके निरजन, निराकार सिद्ध पद को प्राप्त हुए।

भगवान् के निर्वाण से विश्व का एक असाधारण पुरुष भूतल से उठ गया। उनका निर्वाण कार्तिक कृष्णा अमावस्या की पिछली रात्रि मे हुआ था। इस काली अमावस्या ने जगत् मे बाह्य अन्धकार ही नही फैलाया, वरन् भाव अन्धकार का भी प्रसार कर दिया। उस अन्धकार को दूर करने के लिए राजाओ ने दीपक प्रज्वलित किये, दीपमालिका मनाई और आज तक उसकी नकल करके प्रति वर्ष दीपमालिका प्रज्वलित करते है, परन्तु वह लोकोत्तर प्रकाश तो सदा के लिए अस्त हो गया।

★

भगवान महावीर के २५००वें निर्वाण महोत्सव के शुभ अवसर पर

## हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ

# अन्सारी-टेलर्स-बारां

बारां नगर में सुन्दर सिलाई के लिये प्रसिद्ध

विशेषता—❀ जेन्टस् कोट ❀ पेन्ट ❀ बुशर्ट आदि ।

एक बार सेवा का अवसर दें ।

# शुभ कामनाओं सहित
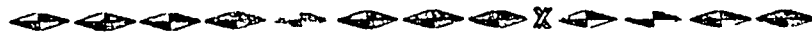
☎ ९४

डा. चन्द्रिकाप्रसाद गुप्ता

M.B., B.S.

**MNH**

मंगल नर्सिंग होम

एक्स रे एवं रोग निदान केन्द्र

दीनदयाल पार्क, बारां

भगवान महावीर २५०० वा निर्वाण महोत्सव पर
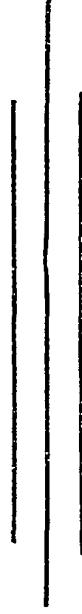
शुभ कामनाओं सहितः—

जयनारायण ओमप्रकाश गुप्ता सर्राफ

चादी एव चाँदी के जेवरात के विक्रेता

पुराने थाने के पास, बारां—३२५२०५

शुभ कामनाओं सहितः—
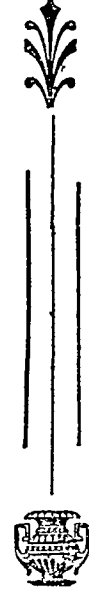
मानकचन्द पदमकुमार

ग्रेन मर्चेन्ट एन्ड कमीशन एजेन्ट

होस्पिटल रोड,

बारां (राज०)

भगवान महावीर २५०० वां निर्वाण महोत्सव पर

फोन : ११५

मन्डी प्रागण : ८५

# कृषी उपज मण्डी समिति

( 'अ' श्रेणी )

## बारां ( राजस्थान )

उत्पादकों, मण्डी कार्यकर्त्ताओं तथा उपभोक्ताओं का हार्दिक अभिनन्दन करती है। मण्डी प्रांगण में विशेष विकास कार्य नीलाम चबूतरा, आंतरिक सड़कें, जन्म व्यवस्था दुकानें, कार्यालय भवन, केन्टीन, कृषक, एव पशु, विश्राम गृह, पार्क, छायादार वृक्ष एवं चारदीवारी आदि।

रामनारायण चौधरी

अध्यक्ष

कमलेश कुमार

सचिव

भगवान महावीर २५०० वां निर्वाण महोत्सव पर

—❀ शुभकामना सहित ❀—

स्थापित : १९४८

फोन नं० : २७१
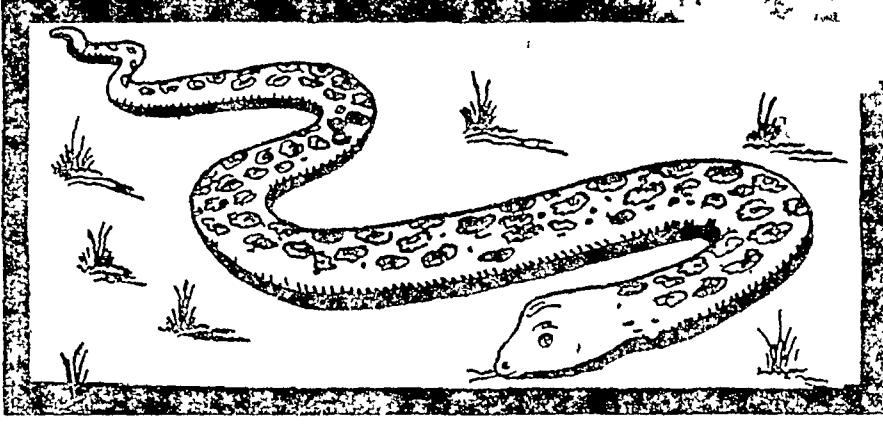
राजस्थान का प्रसिद्ध

# अजगर साबुन

रजिस्टर्ड : २१३२६८

निर्माता :

## कृष्णा इण्डस्ट्रीयल वर्क्स

"अजगर भवन" चम्पानगर, ब्यावर (राज०)

❀ अधिकृत विक्रेता ❀

नागौर—श्री पूनमचन्द व्यास
बारा—हीरालाल हजारीलाल जैन एण्ड सन्स
झुनझुनू—श्री राजस्थान जनरल स्टोर्स
(२) श्री विजय स्टोर्स
डूडलौद—श्री घनश्यामदास नन्दकिशोर
फतहेपुर—श्री जयकुमार सुरेशकुमार जैन
नवलगढ—श्री जोशी स्टोर्स
रीगस—श्री सत्यनारायण साबू
चिडावा—श्री मन्नालाल मदनलाल
करौली—श्री दुर्गालाल रमेशचन्द्र पटवा
डीडवाना—श्री राधाकिशन बालचन्द
कोटा—श्री किरपाराम लालचन्द
पोकरन—श्री व्यास जनरल स्टोर्स
फलोदी—श्री आशाराम फोफलिया
झालावाड—श्री रघुनाथप्रसाद माणकचन्द
सिरोही सीटी—श्री रामचन्द्र कुशालचन्द
जैसलमेर—श्री चन्दनमल मदनलाल भाटिया
बीकानेर—श्री सुरजमल राठी, गाधी एण्ड कं.
बगड—श्री मूलचन्द आशाराम
ओसिया—रानीदान सत्यनारायन
(२) श्री बल्लभ सोनी
बालोत्रा—श्री नारायणलाल नाथुलाल चौरन

# वर्तमान समस्याए और भगवान महावीर का उपदेश

विरधीलाल सेठी

वर्तमान समय की सबसे बडी समस्या पाश्चात्य भौतिकवादी सभ्यता है। इसने रहन सहन का स्तर ऊँचा करने की होड पैदा करदी है। पाश्चात्य देश कहते है कि रहन सहन का स्तर ऊँचा करो, आवश्यकताओ को खूब बढाओ, तभी तुम्हारी गरीबी दूर हुई मानी जावेगी और तुम सभ्य कहला सकोगे। प्रत्येक देश इस समय रहन सहन का स्तर ऊँचा करने की इसी अंधी दौड़ मे लगा हुआ है। यद्यपि महात्मा गाँधी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "हिन्द स्वराज्य" मे यह लिखकर हमे सावधान कर दिया था कि "यह सभ्यता अधर्म है पर इसने यूरोप वालो पर ऐसा रग जमाया है कि वे इसके पीछे दीवाने हो रहे है" "जो लोग हिन्दुस्तान को बदल कर उस हालत पर ले जाना चाहते है जिसका मैंने ऊपर वर्णन किया है, वे देश के दुश्मन है, पापी है"।

फिर भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमारे नेताओ ने इसकी उपेक्षा कर देश को उसी अन्धी दौड मे लगा दिया। अस्तु लोगो मे रहन-सहन का स्तर ऊंचा करने के नाम पर अधिक से अधिक भोग विलास तथा शान-शौकत के साधनो का परिग्रह बढाने की तृष्णा बहुत बढ गई और उसने अन्न जैसी आवश्यकता की वस्तुओ तक के अभावो की समस्या पैदा करदी है क्योकि तृष्णा का कोई अन्त नही है और उसे नियन्त्रित नही किया जावे तो भी उत्पादन कितना ही बढा दिया जावे, वह सब मनुष्यो की सम्मिलित तृष्णा की कुछ अशो मे भी पूर्ति नही कर सकता।

इस समय हमारे देश मे ही नही, संसार भर में अत्यधिक अशांति है। गरीवो को तो मूलभूत आवश्यकताओ की भी पूर्ति न होने से और साधन सपन्न लोगो को अच्छे-अच्छे सुख साधन भी उपलब्ध हो जाने से वर्ग सघर्ष और चरित्र संकट ने उग्र रूप धारण कर लिया है। देश मे फैलती जा रही हिंसात्मक प्रवृत्तियो, अनुशासनहीनता तथा सर्वत्र व्याप्त अप्रमाणिकता के लिए विभिन्न वर्ग एक दूसरे पर दोषारोपण कर रहे है। प्रसिद्ध लेखक जार्जबर्नार्डशा के कथनानुसार डेमोक्रेसी (लोकतंत्र) डेमनक्रेसी (राक्षसीतत्र) बन गई है क्योकि जहा चरित्र नष्ट हो जाता है वहाँ सब कुछ नष्ट हो जाता है (When character is lost every thing is lost)। यह सब इस पाश्चात्य भौतिकवाद की देन है तथा बढती हुई भीषण बेकारी भा उसी की तकलीफ की देन है। सन् १६७१ मे ससार के २२०० प्रसिद्ध वैज्ञानिको ने संसार निवासियो के नाम एक सदेश (जो मेटन सदेश के नाम से विख्यात है) प्रसारित किया था। उपरोक्त पाश्चात्य तकनीक द्वारा जिस विशाल पैमाने पर खनिज धातुओ और उर्जा का उपयोग किया जा रहा है, उससे उनकी समाप्ति के अतिरिक्त जलवायु-दूषण के भयकर खतरे से उन्होने उस सदेश मे सावधान किया था। पाश्चात्व देश स्वयं सुख और शाति के लिए आध्यात्मिकता का मार्ग बताने को हमारे देश की ओर देख रहे है। जिससे प्रकट है कि महात्मा गाधी ने इस पाश्चात्य भौतिकवादी सभ्यता और इसकी तकनीक के खतरे से

सावधान किया था वह सही था परन्तु खेद है कि तुम अब भी उसी के प्रवाह मे बहे जा रहे हैं। यहां विज्ञान का नहीं प्रत्युत पाश्चात्य तकनीक द्वारा उसके अविवेकपूर्ण और थोडे से लोगो के स्वार्थों के लिए किये गए उपयोगो का है। हमारे साधु, विद्वान और नेता आत्मा, आध्यात्मिकता तथा भगवान महावीर के उपदेशो अहिंसा, सयम, अपरिग्रह और अनेकांत की (वर्तमान समस्याओ के निराकरण के लिए) उपादेयता पर आये दिन भाषण तो दे देते है बडे सुन्दर, परन्तु प्रत्यक्ष या परोक्ष मे प्रोत्साहन दे रहे है उसी पाश्चात्य भोगवादी सभ्यता और उसकी तकनीक को। भगवान महावीर के २५०० वे निर्वाण महोत्सव के मनाने मे हमारी श्रद्धा का मापदण्ड भी यही है कि कितना धन इसके लिए खर्च किया। धर्म नीलाम किया जाता है, जो अधिक से अधिक बोली लगाता है वही धर्म रक्षक माना जाता है चाहे वह धन उसने अनैतिक उपायो से प्राप्त किया हो। भगवान महावीर के उपदेशो को अपने जीवन में उतारने की ओर जिनका ध्यान होगा ऐसे व्यक्ति बिरले ही होगे। पाश्चात्य भोगवाद ने धन के महत्व को अत्यधिक बढा दिया है। धार्मिक व सामाजिक कार्य क्रमो में भी अधिकाश धन व सत्ता को ही पूछ होती है चरित्र की नही।

भगवान् महावीर ने कहा था कि सबसे पहले अपने आपको (आत्मा को) जानो जो शरीर से भिन्न एक अविनाशी तत्व हैं। वह किसी भी देश कुल और योनि मे पुनर्जन्म धारण कर सकता है अत सबको अपना कुटम्बी मानो। ऐसा कोई कार्य न करो जो आत्म जावो के हित का विरोधी हो। उन्होने यह भी कहा कि सुख का मूल स्रोत तुम्हारी आत्मा के अन्दर है, पराश्रित नही है, कही बाहर से नही आता। उसे अनुभव करने की अनन्त शक्ति तुम में ही छिपी पडी है। बाह्य पदार्थों से प्राप्त सुख क्षणिक और परिणाम मे दुखदायी होता है तथा उनके परिग्रह अर्थात् उनके मोह ममत्व से व उनमे स्वामित्व की भावना से दुःख ही मिलता है। यदि सुखी रहना चाहते हो तो संयम से रहो। अपने जीवन के लिए कम से कम आवश्यकताएं रक्खो और भोगोपभोग की वस्तुओ और धन का संग्रह मत करो। इस प्रकार भगवान् महावीर का उपदेश व्यक्तिगत संपत्ति रखने का विरोधी है। जहां उनके द्वारा निर्दिष्ठ साधु की चर्या उस निष्परिग्रही जीवन की आदर्श स्थिति है वहाँ गृहस्थ के लिए भी कम से कम परिग्रह (धन सपत्ति) रखनेका उनका उपदेश है। उन्होने कहा है कि बहुत परिग्रह रखने वाला व्यक्ति मर कर नरक गति मे जाता है। परन्तु निष्परिग्रही या अल्प परिग्रही जीवन उसी व्यक्ति का हो सकता है कि जिसकी आवश्यकताए कम से कम हो अर्थात् जो संयमी हो अतः भगवान् महावीर ने व्यक्ति गत सुख शाति के लिए अहिंसा के अतिरिक्त संयम और अपरिग्रह दोनो को आवश्यक माना है। यही भगवान् महावीर द्वारा उपदेशित समाजबाद का आदर्श है कि प्रत्येक व्यक्ति (कम से कम वे व्यक्ति कि जिनके हाथ मे सत्ता है या जिनका समाज मे प्रभाव है) पहले अपने आपको सुधारे तो समाज भी सुधर जावेगा। हमारी अन्न की समस्या को ही ले। जो लोग संयम, अपरिग्रह, आध्यात्मिकता व समाजवाद को देश के लिए उपादेय मानते है, यदि वे स्वयं देश की अन्न की कमी के अनुरूप अपनी अन्न की आवश्यकता को थोडी २ कम करले, अन्न का संग्रह भी न करें और अपने उदाहरण से समाज के सब वर्गों को प्रेरित करें तो देश में अन्न की कमी की समस्या का आसानी से निराकरण हो जावे और हमे अन्न के लिए विदेशो से भीख न मांगनी पडे। परन्तु विडम्बना यही है कि हम सब अच्छे विचारो के होते हुए भी इस पाश्चात्य भोगवादी प्रवाह में वहे जा रहे है। आवश्यकता है कि हम सब अब भगवान् महावीर के २५०० वें निर्वाणोत्सव के पुण्य अवसर पर प्रतिज्ञा करलें कि इस प्रवाह मे हम और अधिक न बह कर भगवान् के उपदेशो अहिंसा, संयम, अपरिग्रह को अपने जीवन मे उतार कर संसार का मार्ग दर्शन करेंगे।

# जैन धर्म–समाज शास्त्रीय संदर्भ

डा० आर. ए. पी. सिंह
एम. ए. पी एच.डी.

धर्म की सार्थकता तभी है जब वह मात्र सिद्धांतों के रूप में न रहकर व्यवहार का अंग बन जाये; मात्र ऋषियो, मुनियो को साधना का विषय न रहकर जनजन में व्याप्त हो जाये। प्रस्तुत लेखमें लेखक ने जैन धर्म का एक समाजकास्त्री की दृष्टि से विवेचन किया है और बताया है कि समाज की समस्याओ का निराकरण करने मे, जैनधर्म के सिद्धांत पूर्ण रूपेण सफल हुए है। —सम्पादक

धर्म और समाज मे चिरस्थायी संबंध रहा है। मानव समाज के विभिन्न धार्मिक अनुभवों की प्रमुख कड़ियो में एक कड़ी जैन धर्म है। धर्म, समाज और सत्य तीनों मे घनिष्ट संबंध का पाया जाना एक निर्विवाद तथ्य है। समाज के द्वारा धर्म को सत्य की खोज करने हेतु एक शाश्वत साधन के रूप मे अपनाया गया है। इस संदर्भ में हमे सत्य को एक व्यापक अर्थ प्रदान करना चाहिये। सत्य का संबंध तत्वज्ञान से है–आत्मा, परमात्मा गुण और बोध उसका विस्तृत क्षेत्र है। परन्तु दूसरी ओर इस सत्य का सबध हमारे व्यावहारिक जीवन के सत्य से है, यथा—आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि।

एक तरफ मानव-समाज कुछ आदर्शों की स्थापना करता है, तो दूसरी तरफ मानव-व्यवहार का आनुभविक या वास्तविक पक्ष है। आदर्श और व्यवहार मे हमे अंतर देखने को मिलता है। आदर्श और मानव-व्यवहार मे तारतम्य बना रहे, ऐसा प्रयास धर्म के द्वारा किया जाता है। प्रत्येक धार्मिक-वाद इस उद्‌घोषणा पर अपना अस्तित्व बनाये रखना चाहता है कि उसके आदर्शों के आचरण से ही आदर्श और व्यवहार के बीच का अंतर निम्नतम रहने वाला है। इस प्रकार का मूल्याकन करना कि अमुक धर्म आदर्श और व्यवहार की मात्रा के अतर को कम कर सकता है पुनः विवाद को आमत्रित करना है। एक संतुलित मार्ग अगर अपनाया जाय, तो वह है समन्वयवादी दृष्टिकोण—क्योकि अंतिम लक्ष्य सब धर्मो का एक ही है—मानव-मात्र का कल्याण करना।

अगर हम जैन धर्म के इतिहास पर दृष्टिपात करते है, तो पाते है कि इस धर्म का उदय एक ऐसे काल मे हुआ था। जब मानव-समाज मार्ग-दर्शन की खोज मे था। विरोधों-अंतर्विरोधों का सामना करते हुए इस धर्म का चक्र अग्रसर होता गया। बौद्ध-धर्म और जैन-धर्म मे बहुत कुछ साम्य होते हुए भो विविधता के आयाम बने हुए रहे है; इसी कारण मूल रूप मे दोनो मतोका स्वतंत्र विकास होता रहा है। बहुत लबा काल-क्रम बीत चुका है लेकिन निरतरता निर्बाध गति से बनी हुई है।

कोई भी धर्म हो, उसकी मर्यादा तब तक

कायम रहती है, जब तक कि उसका संबंध जन-मानस से क्रियाशील रूप मे बना हुआ रहता है। चेतनशील धर्म सामूहिकता का बोध कराने मे समर्थ रहता है। फिर भी, ऐसा नही कहा जा सकता है कि अनेक धर्मो का अवतरण हुआ और उन पर पर्दा भी पड गया, बल्कि यो कहा जा सकता है कि अनेक समाजो का उदय हुआ, वे अब पर्दे के पीछे है, लेकिन उनका स्व-धर्म मानव धर्म के साथ अपना संबध बनाये हुए है।

जैन धर्म के विभिन्न सिद्धात सामयिक समाज का सम्बल बन सकते है। इसका किसी धर्म विशेष से भिन्न उद्देश्य नही है, बल्कि, आदर्शो को स्थापित करने का अपना विशिष्ट मार्ग है। किसी भी धर्म की व्याख्या करने पर उसके दो प्रमुख तत्व प्राप्त होते है—सस्कार और विश्वास। आज के वैज्ञानिक युग मे सभी धर्मो के कर्मकाड या सस्कार के पक्ष को चुनौती का सामना करना पड रहा है। समाज मे व्यापक रूप से शिक्षा का प्रसार हो रहा है, धार्मिक विश्वासो और आदर्शो को बीसवी सदी की कसौ-टियो पर कसा जा रहा है। सम्प्रति; धर्म सामूहिक विश्वास न रहकर, व्यक्तिगत विश्वास का क्षेत्र बनता जा रहा है। धर्म का ज्ञानात्मक पक्ष अधिक मर्यादित हो रहा है और व्यवहार का पक्ष सामाजिक स्तर पर दुर्बल हो रहा है। यह एक विचारणीय विषय है कि क्या धर्म का अस्तित्व मात्र ज्ञान-जगत मे बना रह सकता है ? चाहे किसी भी सज्ञा का प्रयोग किया जाय, जब-जब समाज पर सकट रूपी बादल मडराने लगा है, तो धर्म-रूपी छतरी का सहारा लिया गया है। कुछ भटकने के बाद समाज मे धार्मिक चेतना का विकास हुआ है। आज की परिस्थितियाँ भी कुछ उसी प्रकार की हैं। मानव-समाज एक संक्रमण काल मे प्रवेश कर चुका है। अत. मानव-समाज के हितार्थ कुछ आदर्शों का आचरण अब अपेक्षित ही नही, बल्कि अनिवार्य हो गया है। पुराने आदर्शो मे परिमार्जन करें, अथवा नवीन अवस्था मे समायोजन योग्य मूल्यो और आदर्शों का निर्माण करें; देश, काल और मानस के अनुरूप धर्म गतिमान रहा है।

वर्तमान धर्म-सकुल सामयिक समाज मे व्याप्त अज्ञान, शोषण, अत्याचार, हिंसा, गरीबी, घुटन, भ्रष्टाचार, असन्तोष, संघर्ष मानसिक व्याकुलता की तरफ से अपना मुख नही फेर सकता है। धर्म-सकुल से यह अपेक्षा की जाती है कि वह समाज की वर्तमान दशा का सही मूल्यॉकन करे और उसके अनुरूप समाज का मार्ग-दर्शन करे। सतुलित ज्ञान कर्म और दर्शन पर सभ्यकता का का आवरण अति मोहक है। आवश्यकता यह नही है कि आदर्शो मे ही परिवर्तन किया जाय, बल्कि प्रश्न यह है कि क्या कारण है कि लोग आदर्शोन्मुख न होकर स्वार्थपरक व्यवहार करते हैं ?

भगवान महावोर ने सत्य, ज्ञान और दर्शन आदि को कितना महत्वपूर्ण माना है इस प्रसग पर चर्चा यहाँ व्यर्थ है। आश्चर्य की बात तो यह है कि आज का समाज सत्य पर पर्दा डालकर पूर्वाग्रह के सहारे जीना चाहता है। शोषक भी पूर्वाग्रह से अतिरजित है, तो शोषित भी पूर्वाग्रह से मुक्त नही है। पूर्वाग्रह एक ऐसा विष है: जो समाज के सपूर्ण शरीर को जहरीला बना देता है। अगर सत्य, ज्ञान, एव कर्म मे तारतम्य होता तो विरोधाभास का जन्म ही नही होता।

धर्म का समाज शास्त्र से सम्बन्ध वास्तव मे एक बहुत पुराना विषय है। धर्म को समाज मे सामूहिकता का स्त्रोत माना गया है तो किसी विद्वान ने इसे वर्ग विशेष के मूल्यो का प्रतीक एव हितो का रक्षक भी माना है। खासकर 'कार्ल मार्क्स' का यह कथन प्रसिद्ध है— "धर्म सर्वहारा वर्ग के लिये अफीम है।" महान समाजशास्त्री 'पुरखीम' ने धर्म को समाज मे सामूहिकता का

प्रतीक माना है। धर्म मानव-व्यवहार को प्रभावित करता है, उसकी संस्थाओ को प्रभावित करता है। जीवन को परिभाषित करता है। बहुत अंशो तक धर्म का प्रतिबिम्ब सामाजिक वास्तविकता मे देखा जा सकता है। 'गुनार मण्डल' ने भारत की गरीबी के लिये यहा की संस्थाओं, सामाजिक मूल्यो और सामाजिक रचना को उत्तरदायी माना है।

भगवान महावीर अथवा संगठित रूप से जैन धर्म की उपादेयता को विभिन्न दृष्टिकोणो से महत्व पूर्ण माना जा सकता है। यहाँ हम केवल तीन विशेष पक्षो की चर्चा करेंगे जो कि हमारी दृष्टि में विशेष महत्व के है और हमारे लिये सामयिक समस्या के समाधान के लिये साधन हो सकते है।

## अहिंसा प्रधान समाज रचना—

हिंसा और अहिंसा का वाल्विक विवेचन लोकप्रिय हो चुका है। ज्ञातव्य है कि समाज मे विविध प्रकार से हिंसा मूलक व्यवहार परिलक्षित हो रहे है और इसकी सीमा इतनी बढ चुकी है कि मानवता त्रस्त हो रही है। मानव प्रकृति मे हिंसा है लेकिन अहिंसा की प्रवृत्ति को अपनाकर, अहिसा के साम्राज्य की स्थापना करनी चाहिये यह आज के समाज की आवश्यकता है अत। समाजशास्त्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रसंग है। अगर अहिसा का तत्व सामाजिक रचना में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाये तो हमारा जीवन सुखी हो सकता है, यह उपदेश बहुत ही पुराना है। परन्तु आज भी यह एक गवेषणा का विषय बना हुआ है कि अहिंसा को किस प्रकार लोकप्रिय सामाजिक मूल्य बनाया जाय। यहाँ तक कि अहिंसा का समाज शास्त्र विकसित हो रहा है, शाति पर अनुसंधान राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे है। अन्तर्राष्ट्रीय प्रबुद्ध समाज शाति और अहिंसा प्रधान सामाजिक व्यवस्था की खोज में है।

## आर्थिक प्रगति—

धर्म का प्रभाव आर्थिक व्यवहार पर भी पड़ता है यहां तक कि धार्मिक दृष्टिकोण भौतिक जगत की परिभाषा ही बदलता रहा है कभी आसक्ति तो कभी निरासक्ति। महान समाज शास्त्री

ने अपनी कृति मे यह व्यक्त किया है कि जैन धर्म ने आधुनिक विवेकपूर्ण व्यापारिक गतिविधियो के प्रति लोगो मे एक प्रवृति को विकसित किया है। वास्तव में अगर देखा जाय तो भारतवर्ष मे पिछले कुछ समय मे जिस गति से व्यापारिक मनोवृति और गतिविधि मे वृद्धि हुई है उसका कारण है जीवन मे नवीन आर्थिक उद्देश्यो और अर्जन करने की प्रवृति को स्वीकार करना। आर्थिक प्रगति एव निष्ठापूर्ण कर्म मे एक सह-सम्बन्ध देखा जा सकता है। ईमानदारी से धनार्जन करना अपने आप मे एक अमूल्य प्रेरणा है जिसकी सामयिकता भी निर्विवाद है।

## सत्य की गवेषणा—

आधुनिक समाज भौतिक एव प्राकृतिक जगत मे जिस गतिविधि से सम्बन्धित है, उसके प्रति सत्य निष्ठा का प्राचुर्य देखा जा सकता है। लेकिन हमारी अनेक सामाजिक समस्याओ का भी अंत हो सकता है, अगर हम सत्यनिष्ठा को जीवन के विभिन्न पक्षो मे भी उतना ही महत्व दे। सत्यनिष्ठा का आचरण, हमारी अनेको सामाजिक, वर्गीय, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक समस्याओ का समाधान कर सकता है। आज हम भगवान महावीर के उपदेशो मे से एक 'अहिंसा' का शांन्ति की स्थापना के लिये प्रचार और प्रसार करने मे सफल नही हो सकते जब तक कि हम उन विविध कारणो को समन्वित करके वास्तविक आचरण नही करेंगे। भगवान महावीर के उपदेश वर्तमान सामाजिक अशांति के समाधान के लिये पूर्णता में ही वरदान सिद्ध हो सकते है।

★

# अपरिग्रह और विश्व-शान्ति

रामेश्वरदयाल शास्त्री
(एडवोकेट)

भारतीय मनीषियो एवं तत्वचितको ने अपरिग्रह की भावना को अपने दर्शन में विशिष्ट स्थान दिया है। यही नही, अपने जीवन मे अपरिग्रहवाद को साकार रूप दिया है। जैन दर्शन का मूल अपरिग्रहवाद है जिसके सम्यक परिपालन से विश्व मे शान्ति बनी रही सकती है।

इस ससार मे प्राणीमात्र सुख और शान्ति चाहता है। चूंकि मानव ही सृष्टि मे पूर्ण चेतना सपन्न, सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, अतः वह अनादिकाल से सुख की खोज करता आ रहा है। मानव सुख पाने के लिये ही धन, जन और बल का संग्रह करता है तथा अनेकानेक भौतिक विलास के साधन जुटाता है। परन्तु हम प्रत्यक्ष देखते एवं जीवन मे अनुभव भी करते है कि इस प्रकार के संग्रहीत उपकरणो से सम्पन्न व्यक्ति दुखी ही है उसे सुख शान्ति नही क्योकि जुटाये गये धन, जन, विलास सामग्री से उसकी सुख की चाह पूर्ण नही होती, तृप्ति नही होती, अपितु उसकी सुखेच्छा व तृष्णा अहर्निशि बढती ही रहती है। तृष्णा की सतत वृद्धि दुख की ही वृद्धि है। अनेकानेक पदार्थों की तृष्णा एवं उनमे आसक्ति अशान्ति का मूल है।

यदि हम जीवन मे निश्चयरूप से सुख और शाति चाहते है तो हमे भगवान महावीर द्वारा निर्दिष्ट 'अपरिग्रह' व्रत को अपनाना ही श्रेयस्कर होगा। भगवान महावीर के अनुसार 'परिग्रह' सग्रहवृत्ति एव तृष्णा ससार के समस्त दुख-क्लेशो का मूल है। तृष्णा अनन्त आकाश के समान अनन्त है। पदार्थो मे सग्रहवृत्ति से तृष्णा और व्याकुलता निरन्तर बढती जाती है। परिग्रह और आरम्भ ही बन्धन है। आरम्भ एव हिंसा का जन्म ही परिग्रह से होता है। हम देखते है कि विश्व मे सर्वत्र अशान्ति है एवं हिंसा सुरसा की तरह निरन्तर बढ रही है इसका मूलकारण मानव की परिग्रह वृत्ति है अपनी आवश्यकता से अधिक वस्तु का सग्रह करना समाज मे दूसरे व्यक्ति को उस वस्तु का अभाव उत्पन्न करना है। समाज मे विषमता, हिंसा एवं अशान्ति का यही कारण है।

आज विश्व मे सुख शाति की स्थापना के लिये समाजवाद, साम्यवाद आदि जितने वाद माने जा रहे है वे सब व्यर्थ है। विश्व मे सुख-शाति का यदि कोई असशय राजमार्ग है तो वह केवल अपरिग्रहवाद है। अपरिग्रहवाद से ही विश्व मे, समाज मे शान्ति एव व्यवस्था उत्पन्न होगी एव समता भाव का प्रसार होगा। जिस समाज में समता होगी, उस समाज मे हिंसा के लिये कोई ठौर नही। अपरिग्रहवाद अधिकार की अपेक्षा कर्तव्य पर अधिक बल देता है, जिससे स्वहित एव परहित दोनो निश्चित है यदि हम भगवान महावीर द्वारा दर्शित इस अपरिग्रह दिव्य मार्ग पर निष्ठापूर्वक चलें एव इसका प्रसार, प्रचार करें तो परिग्रहवश भौतिकता की अग्नि मे झुलस रहे विश्व को निश्चय ही सुख-शाति मिलगी एवं विश्व का कल्याण होगा।

ससार मे जैसे सुमेरू पर्वत से ऊंची और आकाश से विशाल कोई अन्य वस्तु नही है, उसी प्रकार अखिल विश्व मे अहिंसा से बढकर कोई धर्म नही है।

कहानी

# वह महावीर

लेखक—लक्ष्मीचन्द्र 'सरोज'
एम० ए० (म०प्र०)

सिद्धार्थ ने त्रिशला का पुत्र लिया।

अमात्य झुके, राज्य पुरोहित और उपस्थित परिचारिक भी, पिता के आशीर्वाद व तनय के अभिवादन के लिए।

एक सहस्र आठ लक्षरण छयालीस गुरण, तीन ज्ञानधारी, धर्मचक्र प्रर्वतक तीर्थंकर। सिद्धार्थ पुलकित हुये। उनका सुमुख चमका। सद्य जात शिशु दमका।

धर्मप्रवर्तक तीर्थंकर! अमात्य ने पूछा। स्वर मे आह्लाद था, मानस मे उल्लास।

हा हा धर्मप्रवर्तक तीर्थंकर' कहकर सिद्धार्थ हँसे, त्रिशला हँसी। अमात्य हँसे और पुरोहित तथा परिचारक भी। जब तनयभाइन सबको हँसते देख हँसा तब अम्बर का सूर्य भी हँसने लगा। कुमार करूणा का सहचर था और वेदना का सहानुभवी।

× × ×

ससार सुख का साथी है पर वह दुख का साथी था, जीवमात्र का अबोधमानवो और मूक पशुओ का, व्यथितो और पीडितो का, पददलितो और जीवन्मृतो का।

दुखवाद के गहन विचारो से वह दार्शनिक बना। पूर्वार्जित ज्ञान और सामयिक परिस्थिति ने सहयोग दिया।

ससार का सुख! दु.खो का बीज सुख! क्षणिक इन्द्रिय जनित सुख! बिषय वासना मूलक सुख उसे रिझा न सका। लालसा हँसी अवश्य पर लज्जित हुई।

उसे पाना था वह सुख—जो अजर और अमल तथा अक्षय एव अनन्त हो।

जो हमेशा सुख ही बना रहे और दुख कभी भी भूले भटके भी स्वप्न मे भी नही बने।

× × ×

जब वह युवा हुआ तब राजमुकुट ने उसकी ओर आखे फाडकर देखा और राज सिहासन उसे अपने ऊपर आसीन देखने के लिए आकुल हुआ। वैभव और ऐश्वर्य ने उसके चरण चूमना चाहे; जीवन के आमोद और प्रमोद ने उसकी पूजा करनी चाही, परिजन ने उसके पथ मे नयन विछाये, जिसको देखो वही उसे सुखी करना चाहता था।

एक दिन वह आसीन था। एकाकी-सतप्त व्यथित। सध्या से कुछ समय ही पहले ही वह आ बैठा था। कमरे मे दीपक किसने जलाया, उसे इसका पता भी नही था। जनख की चहल पहल कब की हो निर्णय की नीरवता बन गई थी। पर उसे इसका पता नही था, वह अपने मे मग्न था।

सम्मुख दीप जल रहा था और उसका प्रति-बिम्ब बन रहा था। प्रदीप की ज्योति को शिखा के प्रकाश मे कभी उसके शरीर की छाया हिल उठती। कुछ झुक-झुक कर वह विचार रहा था।

मुझे भी जीवन के तिमिराच्छन्न मार्ग पर प्रेरणा दीप बनाता है, जिसके विमल ज्ञान प्रकाश मे सभी दिखे।

सहमा एक हल्का सा वायु का झोका आया। उसके मस्तिष्क मे केन्द्रीभूत विचार-धारा को गति मिली। वह अपनी दिशा मे वढने का उपक्रम करने लगी। उसने एक हल्की सी श्वास खीची और विचारा—

जीवन परिस्थितियो के सघर्ष का स्थल है, और जीवात्मा परिस्थिति का परिचारक है। कुमार का मस्तिष्क फिर झुक गया कुछ विचारने। पूर्ववत ही निस्तब्ध नीरव सतप्त व्यथित।

' सारा ससार सो रहा था। बाहर-भीतर सर्वत्र निशीथ का सन्नाटा था परन्तु वह राज प्रसाद के सुसज्जित कमरे विचारो की दीवारे बना मिटा रहा था। अपने और विश्व के लिए खोज रहा था—

वह सुख, जो उसने अभी तक नही पाया था और जिसे पाना अभी शेष था।

अपना दर्शन छोड मेरा दर्शन करो। मै तुम्हारे सामने जीवन की सार्थक सत्यमयी परिभाषा बनी खडी हूँ। उसके यौवन के क्षेत्र मे पदार्पण करके वासना ने कहा। वासना के स्वर मे अहकार था और अडिग विश्वास।

तुझे ही समझने का प्रयत्न कर रहा हूँ और साथ ही—कहकर उसने आगे के शब्दो को खोजना चाहा। लालसा नै सिर उठाया। लिप्सा ने सहस्रो स्वर्णिम ससार वसाये। आकाक्षा ने सुनहरे सपने देखे। आशा को गति मिली तो माया ने भी वढना चाहा। मोह और लोभ ने, काम और क्रोध ने भी सिर उठाये।

और साथ ही विजय प्राप्ती की बात भी विचार रहा हूँ। उसके मुख से पूरा वाक्य सुनते ही सभी के विश्वासो के प्रासाद गिरकर चकनाचूर हो गये। सबको लकवा सा मार गया। अब सभी हतप्रभ थे।

मनुष्य-जीवात्मा दुखी क्यो ? उससे किसीने ने पूछा। अपने कर्मो के कारण। अपने उत्तर से उसको शाति मिली और जिज्ञासा को तृप्ति। शका का समाधान और विचार को प्रमाण।

जन्म-जरा-मरण इनका जीवात्मा के जीवन मे अवसान नही परन्तु वह करके हो रहेगा। यह उसकी अन्तरात्मा की आवाज थी–तपस्या से कर्मो को जीतूंगा और सिद्धि शिला को प्राप्त करके ही रहूँगा।

जव अपने ऊपर इतना सुदृड विश्वास है तब फिर बिलम्ब-क्यो ? हृदय ने मस्तिष्क के और बुद्धि ने विवेक के साथ मिलकर प्रश्न किया। शुभस्य शीघ्रं विवेक ने समझाया। ठीक ही तो हैं। मति बोली।

दूसरे ही क्षण वह सन्तुष्ट था, सुखी था जैसे लक्ष्य को दिशा मिली हो। वह भावी जीवन के कार्यक्रम की रूपरेखा बना चुका था। उस तीस वर्ष के अरुण तरुण को चला ही जाना होगा। कालकोकला को परखने, अपने और विश्व का उद्धार करने 'प्रबन्ध पूरा हो चुका समय और शक्ति समीप है।' मगर कहा ? जनख की चहल पहल से कोसो दूर, किसी निर्जन प्रदेश मे माँ की ममता को छोड, परिजन के प्रेम को तोड, वहाँ जहाँ कोई नही जाना चाहता, चला ही जाना होगा और शीघ्रातिशीघ्र भी।

दूसरे दिन जब उसने जाने की वात कही तो त्रिशला ने दुख के मारे सिर पीट लिया और

सिद्धार्थ क्षरण भर के लिये पागल से हो गये परन्तु जब वस्तु स्थिति का बोध हुआ तो जननी और जनक ने अपने तनय के लिये शुभकामना की, अपना अहोभाग्य समझा।

और वह भी श्रद्धा पूर्वक सिर आगे बढा, अपनी सुनिश्चित दिशा मे। अपने मनोनीत पथ पर वह चल पडा सुख की खोज मे सुख का साधक सा। चलते समय उसने राजप्रासाद पर अन्तिम दृष्टि डाली, जिसके उत्तुग शिखर गगन चूमने का दम भर रहे थे।

माँ के ममत्व ने रोकना चाहा। परिजन के प्रेम ने रोकना चाहा, जग-जनक क्षेम ने रोकना चाहा परन्तु विश्व का वह व्यक्ति किसी से भी नही रुका। राज्य के ऐश्वर्य ने प्रलोभन दिया परन्तु वह निष्फल हुआ। राजलक्ष्मी रिझा न सकी तो उसे अपने ऊपर बडी ग्लानि हुई। मोह की बात मन मे ही रह गई और लोभ एक क्षोभ लेकर ही रह गया।

विश्व का व्यक्ति नही रुका, चल दिया, व्यक्ति और विश्व के लिये सच्चा सुख खोजने। यह वैराग्य के जागरण का सर्व प्रथम दिवस था जो केवल ज्ञान की प्राप्ति का भावी मुहूर्त्त था। वैशाली ने आँखे खोली पर वह जा चुका था। कुण्ड ग्राम का सर्वस्व लुट चुका था। बाहर से सभी उद्विग्न थे और भीतर से समुत्सुक थे कि कुमार जो पाते वह देते या नही ?

× × ×

किरीट छूटा, कुडल छूटे। मुद्रिका छूटी अम्बर छूटे। सिर पर भ्रमर से भँवरदार केश तक नही रहे। ससृति ने देखा—वह आत्मध्यान मे लवलीन हुआ। वह पाषाण सा निश्चल रहा। मृगो ने उसे प्रस्तर समझा तो शरीर घिस कर अपनी खुजली मिटाई। वह जन्मजात बालक सा निर्विकार परम दिगम्बर था। उसे अपने शरीर और ससार का भान नही था।

एक दिन वह खका कान्तार मे उतरा [illegible] ऋजु कूला, सरिता के समीप सालवृक्ष के नीचे उसने तपश्चरण आरम्भ किया उसकी कचनकाया क्षीण अवश्य हुई परन्तु ज्ञान कीज्योति बढती ही रही।

व्यसनो ने आक्रमण किया परन्तु वह विचलित नही हुआ। काम भी सेना सहित पहुँचा परन्तु पराजित होकर लौटा। रुद्र ने जी भर कर रात्रि भर उपसर्ग किये परन्तु वे भी निष्फल हुये। सुर सुन्दरियो की सेना ने उसका वरण-हरण करना चाहा पर उनका शृगार सगीत विलास व्यर्थ ही गया।

नीलाम्बर और वसुन्धरा ने साक्षी दी। जृम्भिका के निकट उसने पाया पूर्ण ज्ञान-केवल ज्ञान। जब उसने अभीष्ट प्राप्त कर लिया तब उसके वितरण का निश्चय किया।

धर्म-चक्र का प्रवर्तन करते हुये उसने कहा—सचेतन और अचेतन अनेक धर्मात्मक है। धर्म की ज्योतिर्मयी आत्मा श्रद्धा है। धर्म का मूलाधार अहिसा है। छोटे-बडे की मान्यता निस्सार है। उत्थान और पतन का मार्ग कर्म पर अवलम्बित है और वह हमारे हाथ मे है। निष्काम व्यक्ति में वीतरागता सम्भव है और वीतरागी मे केवलज्ञान, केवलज्ञानी जीवनमुक्त है। वह आज का अर्हन्त है और अनागत का सिद्ध है।

× × ×

वह पावापुर के पथ मे था, जीवन की यात्रा मे श्रान्त पथिक सा।

सुखद समय समीप है। उसने कहा—मैंने जो पाया वह दिया।

निसर्ग रो रहा था, पवन शान्त था, प्रकृति नीरव थी। वह अनन्त के पथ पर निर्वाण की ओर उन्मुख था। हार्दिक स्पन्दन गति खोने जा रहा था। उसका जीवन-विहग ऊर्ध्वगमन के लिये उत्सुक था।

उसने नेत्र बन्द कर लिये वह ध्यानारूढ हुआ। अन्तरात्मा में गु जित हुआ—णमोसिद्धाणम्। क्षण भर में ही उसने वह सुख पा लिया जो साध्य था और जिसे पाने के लिये साधना की थी। एक ओर दूर दिगन्त मे प्रतिध्वनि गु जित हो रही थी और दूसरी ओर देवताओं-मनुष्यों द्वारा जलाई हुई प्रदीपों की पंक्तियां प्रकाश फैला रही थी, उसकी सफलता बतला रही थी।

तब ही आकाश ने वसुधा से पूछा—वह कौन था?

'सुख का साधक' वसुधा ने आकाश को उत्तर दिया—महावीर, जो नर से नारायण बना।

# भगवान महावीर की परम तेजस्विता

यशपाल जैन

भगवान महावीर के पच्चीससौवे निर्वाण महोत्सव वर्ष मे देश-विदेश मे लोगो का ध्यान महावीर की ओर आकृष्ट हुआ है। वे जानना चाहते है कि वर्तमान युग मे महावीर की सार्थकता क्या है ? हम उनसे क्या सीख सकते है ? उनकी शिक्षाओं से युग-बोध किस प्रकार प्रभावित हो सकता है ?

इस लेख मे महावीर के सिद्धान्तो का विवेचन अभीष्ट विषय नही है। मै इस विषय पर सोचता हूँ तो कई चित्र उभर कर सामने आते है। यहाँ मै तीन चित्र प्रस्तुत करूँगा, जिनमे उपरोक्त प्रश्नो के उत्तर आ जाते है। उनमे पहला चित्र है, उनके गृह-त्याग के महान क्रान्तिकारी कदम का। ससार के अधिकाश प्राणी धन-सम्पति का सग्रह करते है, सत्ता जुटाते है, पर महावीर के यहा तो ये चीजे पहले से ही मौजूद थी। वह राजपुत्र थे। उनके चारो ओर वैभव था। कितने आनन्द का जीवन व्यतीत कर सकते थे। अपने धन से कितनो का अभाव दूर कर सकते थे। राजसत्ता से कितने बड़े-बडे काम सम्पन्न कर सकते थे। दूसरो पर शासन करने का रस भी ले सकते थे। इन भौतिक वस्तुओ का मद और मोह कम नही होता। इसलिए मै मानता हूँ कि इन सबका त्याग महावीर का क्रान्तिकारी कदम था। एक क्षण मे इस वैभव को उन्होने ऐसे त्याग दिया, जैसे कोई बालक हाथ के खिलौने को उठाकर फेंक देता है।

राम ने गृह-त्याग किया था, पर उसके पीछे पिता के वचन की रक्षा की भावना थी, फिर उनके साथ लक्ष्मण और सीता भी गये थे। बुद्ध ने घर-बार छोडा, पर रात के समय, जब यशोधरा और राहुल गहरी नीद मे सो रहे थे। शायद उनके मन मे रहा होगा कि दिन में जाने पर कहीं पत्नी, पुत्र और स्वजनो का आग्रह उन्हे विचलित न कर दे। राम और बुद्ध का त्याग कम नही था, पर महावीर तो दिन दहाड़े गये और सबसे बिदा होकर गये। भरा-पूरा घरबार, अतुल धन-सम्पत्ति और वैभवशाली राजपाट ऐसे छोड दिया, मानों उनका मूल्य मिट्टी के ठीकरे के बराबर भी न हो।

इस चित्र को देखकर मेरा मन विस्मय से भर उठता है। क्या महावीर धन-सम्पत्ति के महत्व को नही जानते थे ? क्या राजपाट की महत्ता उनसे छिपी थी ? नही, वह इस सबसे भली भाति परिचित रहे होगे, पर इससे भी अधिक उन्होने इस सनातन सत्य को माना होगा कि जो नश्वर है, वह कभी स्थायी सुख नही दे सकता। धन आता है, चला जाता है, राज उठते है, गिर जाते है, और वह समाज मानव के लिए कैसे स्पृहणीय हो सकता है, जिसमे राजा और रंक की चौडी खाई हो, एक देने का गर्व करे, दूसरा लेने का अपमान सहे। मानव के गौरव को स्थापित और प्रतिष्ठित करने के लिए महावीर के अन्तर मे गहरी भावना रही होगी और उसी से प्रेरित

होकर उन्होने मोह-माया के दुर्ग को एक ठोकर मे भूमिसात कर दिया होगा ।

## निर्भीक-तेजस्वी विभूति—

दूसरा चित्र है निर्भीक परम तेजस्वी विभूति का। घरवार तथा राजपाट के सारे वैभव को तृणवत त्याग कर महावीर साधना के मार्ग पर चल पडे है। न उनके पास कोई भौतिक साधन है, न कोई सगी-साथी। यो वह एकाकी दीख पडते है, पर 'स्व' का विसर्जन हो जाने से अब उनके लिए कुछ भी पराया नही रह गया है। सब उनके अपने वन गये है।

अनेक स्थानो मे घूमते हुए अस्थिग्राम पहुँचते हैं और वहाँ से कुछ दूर शूलपाणि यक्ष के मन्दिर मे ध्यान के लिए ठहरते है। ग्रामवासी यह देखकर काप उठते है। अरे, यह स्थान तो वडा भयकर है। वे यक्ष की विनाशकारी शक्ति को जानते है। महावीर से निवेदन करते है,"मुनिवर" यहाँ मत ठहरिये। यहाँ जो भी कोई रात बिताता है, उसे यक्ष जीवित नही छोडता। आप गाव मे चलिए और वही रात्रिवास कीजिए।"

ग्रामवासियो के भय का उनके चित्त पर कोई प्रभाव नही होता। वह वडे ही निर्भीक, पर मधुर शब्दो मे कहते है, "मैं गाँव मे चल सकता था, पर अब कैसे जाऊँ ? स्वतन्त्रता की साधना मे अभय का होना अनिवार्य है। मै इस सुनहरे अवसर को नही छोड सकता। मेरी कसौटी यहा है, मै उससे पीछे नही हट सकता।"

ग्रामवासी बेचारे निरुत्तर हो जाते है और चिन्तित अपने-अपने घरो को लौट जाते है।

रात्रि का आगमन होता है। वह सुनसान, वियावान वनस्थली एकदम निस्तब्ध हो उठती है। चारो ओर सन्नाटा छा जाता है। उस निविड़ अन्धकार मे हाथ से हाथ नही सूझता।

महावीर ध्यान मे निमग्न हो जाते है। अकस्मात भयकर कोलाहल होता है। किसी के अट्टहास से सारा वन-प्रान्तर गूज उठता है, पर महावीर अपने ध्यान मे लीन रहते है। उनकी एकाग्रता भग नही होती। थोडी देर मे एक भीमकाय हाथी आता है बडी क्रूरता से वह महावीर पर प्रहार करता है। वह तीव्र दातो से उन्हे सताता है। पर महावीर को उसका पता भी नही चलता। आखिर हाथी हताश होकर लौट जाता है।

फिर आता है एक भयकर विषधर नाग, जिसकी फुकार से सारा सोता वन जाग उठता है। पक्षी चीत्कार करने लगते है। वह फन उठा कर भगवान महावीर पर आक्रमण करता है उन्हे डसता है, लेकिन महावीर निश्चल खड़े रहते है। तब हाथी की भाति सर्प भी अपने मुह की खाकर चला जाता है।

यक्ष पराभूत हो जाता है।

इस प्रकार की एक नही, सैकड़ो घटनाएँ महावीर के साधना-काल मे घटी, पर महावीर इतने निर्भय, इतने एकाग्र-चित्त और इतने तेजस्वी थे कि उनके पैर कभी डगमगाये नही। वह निरन्तर आगे ही वढते गये।

मै इन घटनाओ को प्रतीक रुप मे मानता हूँ। मानव का सवसे बडा शत्रु उसके अन्तर मे बैठा है। बाहरी शत्रु पर विजय पाना आसान होता है, किन्तु इस भीतर बैठे शत्रु को जीतना बडा कठिन होता है। महावीर द्वारा अभय की सिद्धि का रहस्य इस बात मे है कि उन्होने अपने अन्तर के शत्रु को जीत लिया था।

## प्रेम अहिंसा के पुजारी

उनका तीसरा चित्र उभरता है प्रेम और अहिसा के महान पुजारी का। उनका प्रेम असीम

था। वह मानव-मात्र को ही प्रेम नहीं करते थे, उनके प्रेम की परिधि मे सभी जीवधारी आते थे। इसकी साधना उनके जीवन मे बचपन से ही आरम्भ हो गई थी। एक दिन अपने साथियो के साथ वह खेल रहे थे कि अचानक एक साप आ गया। सारे सगी-साथी डर के मारे कापने लगे, लेकिन महावीर को तनिक भी हैरानी नही हुई। उन्होने साथियो को समझाया, घबराने की जरुरत नही। "पर उनमें से एक भी बालक न रुका। महावीर अडिग खडे रहे। उन्होने बडे प्यार से साप को पकड़ लिया और दूर ले जाकर छोड आये।

कहा जाता है कि उनकी इस प्रकार की बहादुरी की घटनाओ के कारण ही उनका नाम "महावीर" पडा। उनमे इतना साहस उनके असीम प्रेम मे से उपजा था। प्रेम मैत्री और समता को जन्म देता है। जिसमे राग-द्वेष नही है, जिसका हृदय प्रेम से छलछलाता है, वह सबके प्रति अपनत्व का भाव रखता है। प्रेम और अहिसा पर्यायवाची है।

इस सन्दर्भ मे मुझे "चण्डकौशिक" की कथा वडी प्रेरणादायक लगती है। अपनी साधना के दूसरे वर्ष मे महावीर एक दिन उस स्थान पर ठहरे, जो भयकर विषधर चण्डकौशिक का निवास स्थान था। लोगो ने उन्हे बहुत रोका, पर महावीर कहाँ मानने वाले थे।

चण्डकौशिक के भय से लोग उस स्थान को छोडकर चले गये थे। उस नाग की दृष्टि मे इतना तीव्र विष था कि वह जिसकी ओर देख लेता था, वही भस्म हो जाता था। जब वह वन मे घूमकर लौटा तो देखता क्या है कि उसके घर मे एक व्यक्ति खडा है। किसका इतना दुस्साहस कि उसके घर के अन्दर प्रवेश करे। महावीर कायोत्सर्ग मुद्रा मे खडे थे। चण्डकौशिक ने क्रोध से उनकी ओर देखा, पर यह क्या? महावीर पर उस दृष्टि का कोई प्रभाव न पड़ा। वह ज्यो-के-त्यो खड़े रहे। तब नागराज आपे से बाहर हो गये। उनकी आखों में तीव्रतम विष भर आया, लेकिन महावीर पर उसका भी कोई असर नही हुआ: अपनी विफलता पर चण्डकौशिक का पारा अब आसमान पर पहुँच गया। उसने आगे बढकर पूरी शक्ति से महावीर के बाये पैर के अगूठे पर मुंह मारा, लेकिन ध्यान की शक्ति के आगे उसका विष व्यर्थ हो गया। फिर क्या था, उस विषधर ने दूसरी बार उनके पैर को डसा और जब उसका भी कोई परिणाम नही निकला तो वह उनके पैर मे लिपट कर गले मे पहुँचा और वहा जाकर मुह मारा, लेकिन महावीर चट्टान की तरह अडिग खड़े रहे। उनका बाल भी बॉका न हुआ।

चण्डकौशिक अपने आवेग और पराजय की निराशा से थक कर चूर होगया। उसने असहाय दृष्टि से महावीर की ओर देखा और फिर कुछ दूर पर जाकर चुपचाप बैठ गया।

जब महावीर की ध्यान प्रतिमा सम्पन्न हुई तो उनकी निगाह विशालकाय चण्डकौशिक पर गई। उन्होने बड़े प्रेम और आत्मीयता से उसकी ओर देखा। एक क्षण मे नागराज का विष धुल गया और जो दृष्टि अपने भयकर विष के कारण दूर दूर तक के लिये लोगो के लिये आतककारी बनी हुई थी, वह अमृत से भर उठी। यह था प्रेम और मैत्री का प्रभाव, अहिसा का पराक्रम।

मै नही जानता कि यह घटना सत्य है या नही, पर मेरा मन इस घटना से अधिक उसके पीछे की भावना पर जाता है और मै मानता हूँ कि यदि अहिसा के प्रति हमारी निष्ठा अडिग है, यदि सबके प्रति हमारा प्रेम निस्वार्थ है, यदि सबके प्रति हमारे हृदय मे समानता का भाव है तो हमारे सामने उग्रतम विरोध भी स्वत ही पराजित हो सकता है।

वर्तमान युग मे महावीर की यह तेजस्विता भारतवासियो के जीवन मे प्रकट हो जाय तो देश

का कायाकल्प हो सकता है। महावीर को पूजकर हम अपना जितना भला कर सकते है, उससे कही अधिक भला उनके मार्ग पर चलकर हो सकता है। वह दिन कितना धन्य होगा, जबकि मानव जाति उनके इस महान स्वरुप को देखेगी और उसके अनुरुप अपने जीवन को ढालने के लिए कृत-सकल्प होगी।

( युगवार्ता )

मुक्तक—

( १ )

ये मृग मरीचिका रेती मे जीवन ले लेती है।
मौज बहारो मे यौवन का जरा छलकता है।

( २ )

खडी द्वार पर मृत्यु सन्मुख हतप्रभ हो गया।
रूप का अभिशाप जल बुदबुदे सा फुट गया।

प्रीतमचन्द बडजात्या
बारा

# "व्यवहारिक जीवन में महावीर के आदर्श"

डॉ० हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ,
एम ए पी एच. डी.,
जयपुर

[महावीर के सिद्धान्तो की सार्थकता तभी है जब हम उन्हे अपने व्यवहार मे स्थान दें। कई लोग आक्षेप करते हैं कि महावीर के सिद्धान्त इतने सूक्ष्म है कि उन्हे व्यवहारिक जीवन मे उतारना असम्भव है। किन्तु आवश्यकता भगवान महावीर के सिद्धान्तो को सम्यक-रीति से समझने की है। तभी मानव सुखी हो सकता है। प्रस्तुत लेख मे डॉ० भारिल्ल ने भगवान महावीर के सिद्धान्तो का सरस शैली मे प्रतिपादन किया है।]

हवा पानी और भोजन आदि का जो महत्व हमारे जीवन मे है उससे कम धर्म, धार्मिक आस्था और धार्मिक आदर्शों का नही, किन्तु हम हवा, पानी और भोजन आदि की जितनी आवश्यकता और उपयोगिता अनुभव करते है उतनी धर्म और धार्मिक आदर्शों की नही।

समस्त प्राणी सुख चाहते है और दुःख से डरते हैं तदर्थ निरन्तर प्रयत्न भी करते है, किन्तु वास्तविक सुख क्या है ? और सुखी होने का सच्चा मार्ग क्या है ? यह न जानने के कारण उनके प्रयत्न सफल नही हो पाते। हवा, पानी और भोजन आदि भौतिक आवश्यकताओ की पूर्ति कर सकते हैं, किन्तु दुख के कारण भौतिक जगत मे नही, मानसिक जगत मे विद्यमान है। जब तक अन्तर मे मोह-राग-द्वेष की ज्वाला जलती रहेगी तब तक पूर्ण सुखी होना सम्भव नही है। मोह-राग-द्वेष की ज्वाला शान्त हो सके इसके लिये धर्म, धार्मिक आस्था और धार्मिक आदर्शों से अनुप्रेरित जीवन का होना अत्यन्त आवश्यक है।

धार्मिक आदर्श भी ऐसे होने चाहिए जिनका सम्बन्ध जीवन की वास्तविकताओ से हो। जो आदर्श व्यावहारिक जीवन मे सफलतापूर्वक न उतर सके, जिनका सफल प्रयोग दैनिक जीवन में सम्भव न हो, वे आदर्श कल्पना लोक के सुनहरे स्वप्न तो हो सकते है, किन्तु जीवन मे उनकी उपयोगिता और उपादेयता संदिग्ध ही रहेगी।

व्यावहारिक जीवन की कसौटी पर जब हम तीर्थंकर भगवान महावीर के आदर्शों को कसते है तो वे पूर्णतः खरे उतरते है। हम स्पष्ट अनुभव करते है कि उनके आदर्श कल्पना लोक की ऊंची उड़ाने नही वे ठोस धरातल पर प्रयोग सिद्ध सिद्धान्त है और उनका पालन व्यवहारिक जीवन मे मात्र सभव ही नही, वे जीवन को सुखी, शान्त और समृद्ध बनाने के लिये पूर्ण सफल एव सहज साधन हैं।

जीवन को पवित्र, सच्चरित्र एवं सुखी बनाने के लिए तीर्थंकर महावीर ने अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पाच महान आदर्शलोक के सामने रखे। व्यावहारिक जीवन में इनके सफल

प्रयोग के लिये उन्होने इन्हे साधु और सामान्यजनो (श्रावको) को लक्ष्य मे रखकर महाव्रत और अणुव्रत के रूप मे प्रस्तुत किया। उक्त आदर्शों को पूर्ण रूप से जीवन मे उतारने वाले साधु व शक्ति व योग्यतानुसार धारण करने वाले श्रावक कहलाते है, शक्ति व योग्यता के वैविध्य को लक्ष्य मे रखकर श्रावको की ग्यारह कक्षाए निश्चित की है, जिन्हे ग्यारह प्रतिमाए कहा जाता है।

भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित महान आदर्श अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह पर यह आक्षेप किया जाता है कि वे इतने सूक्ष्म एवं कठोर है कि उनका प्रयोग व्यावहारिक जीवन मे सम्भव नही है। यद्यपि यह सत्य है कि भगवान महावीर ने हिंसादि पापो के रचमात्र भी सहभाव को श्रेयस्कर नही माना है तथापि उनको जीवन मे उतारने के लिये अनेक स्तरो का प्रतिपादन किया है। अत प्रत्येक व्यक्ति को उन्हे जीवन मे अपनाना सम्भव ही नही, वरन् प्रयोग सिद्ध है। जहाँ साधु का जीवन पूर्ण अहिंसक एव अपरिग्रही होता है वही श्रावको के जीवन मे योग्यतानुसार सीमित परिग्रह का ग्रहण होता है तथा जहा गृहस्थ बिना प्रयोजन चीटी तक का वध नही करता है, वही देश, समाज, घर-बार, माँ-बहिन, धर्म और धर्मायतन की रक्षा के लिए तलवार उठाने मे भी सकोच नही करता। इस प्रकार हम देखते है कि भगवान महावीर के भूमिकानुसार आचरण एव अनेकान्तात्मक दृष्टिकोण को समझे बिना ही उक्त आक्षेप किया जाता है। जैनाचरण के व्यावहारिक पक्ष को सैद्धान्तिक रूप मे चरणानुयोग के शास्त्रो से एव प्रयोगात्मक रूप से जैन पुराणो के अनुशीलन से भली भाँति जाना जा सकता है।

हिंसादि पापो के त्याग की प्रक्रिया भगवान महावीर के शासन मे सप्रयोजन है। जैसे हिंसा चार प्रकार की कही गयी है। (१) सकल्पी हिंसा (२) उद्योगी हिंसा (३) आरम्भी हिंसा और (४) विरोधी हिंसा।

केवल निर्दय परिणाम ही हेतु है जिसमे ऐसे सकल्प (इरादा) पूर्वक किया गया प्राणाघात सकल्पी हिंसा है। व्यापार आदि कार्यो मे सावधानी बरतते हुए भी जो हिंसा हो जाती है वह उद्योगी और आरम्भी हिंसा है। अपने तथा अपने परिवार धर्मायतन समाज देशादि पर किये गये आक्रमण से रक्षा के लिये अनिच्छा पूर्वक की गई हिंसा विरोधी हिंसा है। उक्त चार प्रकार की हिंसाओ मे एक सकल्पी हिंसा का तो श्रावक सर्वथा त्यागी होता है किन्तु बाकी तीन प्रकार की हिंसा का तो श्रावक त्यागी होता है किन्तु बाकी तीन प्रकार की हिंसा उसके जीवन मे विद्यमान रहती है। यद्यपि वह उनसे भी बचने का पूरा पूरा प्रयत्न करता है, आरभ और उद्योग मे भी पूरी-पूरी सावधानी रखता है, तथापि आरभी उद्योगी और विरोधी हिंसा से पूर्ण रूपेण बच पाना सभव नही है। यद्यपि उक्त हिंसा उसके जीवन मे विद्यमान रहती है, तथापि वह उसे उपादेय नही मानता, विधेय भी नही मानता।

भगवान महावीर ने सदा ही अहिंसात्मक आचरण पर जोर दिया। जैन आचरण छूआ-छूत मूलक न होकर जिसमे हिंसा न हो या कम से कम हिंसा के आधार पर निश्चित किया गया है पानी छानकर काम मे लेना, रात्रि मे भोजन नही करना, मद्य-माँसादि का सेवन नही करना आदि समस्त आचरण अहिंसा को लक्ष्य मे रख कर अपनाये गये है।

भगवान महावीर ने अहिंसा को परम धर्म घोषित किया है सामाजिक जीवन मे विषमता रहते अहिंसा नही पनप सकता है, अत अहिंसा के सामाजिक प्रयोग के लिए जीवन मे समन्वय वृत्ति, सह-अस्तित्व की भावना एव सहिष्णुता अति आवश्यक है, उन्होने जन साधारण मे

सभापति शारीरिक हिसा को कम करने के लिए सह अस्तित्व, सहिष्णुता और समताभाव पर जोर दिया, तो वैचारिक हिसा से बचने के लिए अनेकात का समन्वयात्मक दृष्टिकोण भी प्रदान किया।

सहिष्णुता और समताभाव तब तक प्राप्त नही किया जा सकता है जब तक आग्रह समाप्त नही हो जाता क्योंकि आग्रह विग्रह को जन्म देता है, प्राणी को असहिष्णु बना देता है धार्मिक असहिष्णुता से भी विश्व मे बहुत कलह और रक्तपात हुआ है, इतिहास इसका साक्षी है। जब जब धार्मिक आग्रह सहिष्णुता की सीमा को लाघ जाता है तब तक वह अपने प्रचार के लिए हिसा अपनाई गयी, वही हिसा उसके ह्रास का कारण बनी। किसी का मन तलवार की धार से नही पलटा जा सकता, अज्ञान ज्ञान से कटता है, उसे हमने तलवार से काटने का यत्न किया, विश्व मे नासिकता के प्रचार मे इसका बहुत बडा हाथ है।

भगवान महावीर ने उक्त तथ्य को भली प्रकार समझा था, अत. उन्होने साध्य की पवित्रता के साथ साथ साधन की पवित्रता पर पूरा पूरा जोर दिया।

सहिष्णुता के बिना सह-अस्तित्व सम्भव नही है क्योंकि ससार मे अनन्त प्राणी है और उन्हे इस लोक मे साथ साथ ही रहना है। यदि हम सबने एक-दूसरे के अस्तित्व को चुनौती दिये बिना रहना नही सीखा तो हमे निरन्तर अस्तित्व के सघर्ष मे जुटे रहना होगा। सघर्ष अशान्ति का कारण और उसमे हिसा अनिवार्य है। हिसा प्रति हिसा को जन्म देती है और इस प्रकार हिसा प्रति हिसा का कभी समाप्त न होने वाला चक्र चलता रहता है। यदि हम शान्ति से रहना चाहते है तो हमे दूसरो के अस्तित्व के प्रति सहनशील बनना होगा।

आज हमने मानव-मानव के बीच अनेक दीवारे खडी करली है। ये दीवारे प्राकृतिक न होकर हमारे द्वारा ही खडी की गई है। ये दीवारे रग भेद, वर्णभेद, जातिभेद, कुलभेद देश व प्रान्तीय भेद आदि की है। यही कारण है कि आज सारे विश्व मे एक तनाव का वातावरण है। एक देश दूसरे देश से शकित है और एक प्रान्त दूसरे प्रान्त से। यहा तक कि मानव मानव की ही नही, एक प्राणी दूसरे प्राणी की इच्छा और आकाक्षाओ को अविश्वास की दृष्टि से देखता है भले ही वे परस्पर एक दूसरे से पूर्णत. असपृक्त की क्यो न हो, पर एक दूसरे के लक्ष्य से एक विशेष प्रकार का तनाव लेकर जी रहे है : तनाव से सारे विश्व का वातावरण एक घुटन का वातावरण बन रहा है।

वास्तविक धर्म वह है जो इस तनाव व घुटन को समाप्त करे या कम करे। तनाव से वातावरण विषाक्त बनताहै और बिषाक्त वातावरण मानसिक शाति भग कर देता है।

भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित उक्त पाच महान आदर्श यदि हम शक्ति और योग्यतानुसार अपने जीवन मे उतार लें उन्हे व्यवहारिक रूप मे अपना ले तो निश्चित रुप से हम विश्व शान्ति की दिशा मे अग्रसर हो सकेगे।

# युवक क्या करें ?

—दयाचन्द जैन
सेवा निवृत्त न्यायाधीश

आज की युवा पीढी दिशा बोध के अभाव मे भटक रही है। आवश्यकता युवको के उत्साह एवं कार्य क्षमता को सही मार्ग पर लगाने की है। प्रस्तुत लेख मे लेखक ने युवको का सम्यक् पथ-प्रदर्शन किया है।

—सपादिका

पुरानी पीढी और युवा पीढी की विचार धाराओ मे सदैव अन्तर रहा है। पुरानी पीढी जीवन के उतार-चढाव के बोझो के कारण झुकी-दबी रहती है और युवा पीढी, उत्साह से भरी हुई, नई उमंगो को सजोये, आशावादी। जहाँ पुरानी पीढी को अनुभव, धर्म समाज की गतिविधियो मे पकड कर पीछे खीचता हे, वहा युवको को उत्साह आगे की ओर ठेलता है। इसी कारण युवक क्रांति के सैनिक एवं सुधार के वाहक कहे जा सकते है। युवको को ही भविष्य मे समाज के जर्जर छकडे का पुन'निर्माण कर उसे आगे खीचना हे। उन्हें ही धर्म की नैया के मांझी बनना है।

आज का युग विशाल-परिवर्तनो का है। परिवर्तन यो तो विभिन्न स्तरो और मंचो पर सदा-सर्वत्र होते रहे है तथापि आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारो और तकनीकी जानकारी की सर्वतोमुखी उन्नति ने वृद्धो को तो झकझोर डाला है। स्थिति ऐसी आ गई है कि वृद्ध अपनी भावनाओ और मकल्पो और पूर्व-मान्यताओ को लेकर पहले की सी स्वतन्त्रता एव शान्ति से चल नही सकते। अतएव युवको का उत्तरदायित्व दोहरा हो जाता है।

युवको को तेजी से बदलते हुए युग के साथ चलना तो आवश्यक है ही, साथ ही प्राचीन एवं अर्वाचीन मे समुचित मेल बनाये रखना है। आज समस्त भारतीय समाज के लिए आर्थिक परिप्रेक्ष्य पूर्ववत नही रहे। आवागमन के साधनो और संचार-व्यवस्था की उन्नति के फल स्वरूप विश्व छोटा पड गया है। दूसरे शब्दो मे आख-कान के विषय-क्षेत्र विस्तृत हो गये है। इसलिए पुरानी मान्यता—कि धार्मिक ग्रन्थो की शिक्षा प्राप्त कर लेना भर सुचारू जीवन-यापन करने के लिए पर्याप्त और सतोप प्रद है, आज खंडित हो गई है। लगता है कि जो प्राथमिक शालाएं, विद्यालय, महाविद्यालय जैन संस्थाओ की ओर से पहले खोले गये थे, वे आज के युवको की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए अक्षम है। निर्वाणोत्सव के विशेष समारोह के इस वर्ष मे विभिन्न भारतीय विश्व-विद्यालयो मे, जो जैन-विद्या के आसन-पीठ स्थापित किये जा रहे है, वह इस दिशा मे सही कदम है। जैन युवको को उनका पूरा-पूरा लाभ उठाना है। इन पीठो से न केवल वे स्वय लाभ उठावे वरन् ऐसी व्यवस्था किये जाने मे भी वे पूर्ण सहयोग दे कि जैन-विद्या का

ज्ञान अजैनो को भी मुक्त रूप से प्राप्त होसके। ताकि एकात मान्यताओ का जो हठ सर्वत्र विद्यमान है उसके निवारण के लिए सबल प्रयत्न किये जा सके। वर्तमान तकनीकी युग मे जो अर्द्ध सत्य ( Half Truth) लगने वाले पहलू हैं उन्हे यदि परिवर्तित भी करना पडे, तो उसके लिए भी साहस-पूर्वक प्रागण बनाने का उपक्रम किया जावे।

किन्तु साथ ही यह चेतावनी दिया जाना भी अनुचित न होगा कि उक्त परिवर्तन के दौर मे, जैन मान्यता के मूलभूत आधार; आत्म द्रव्य की प्रतीति तथा उसी के चतुर्दिक हमारी समस्त गतिविधियो का समायोजन; को आख, कान और मस्तिष्क से ओझल न कर दिया जाये। आत्म द्रव्य की त्रिकाली सत्ता और महत्ता का स्थायी-विचार तो जैन युवको के लिये पूर्ण-संबल, मार्ग का पाथेय एव शाँति का दृढ वाहन है। इस सम्यग्दृष्टि के बिना तो सब कुछ निरर्थक है। पौद्गलिक विज्ञान की चकाचोध मे यदि युवक इस तथ्य को भुला देगे तो जडवादी हो जाने के परिणाम-स्वरूप उन्हे स्थायी शाति का वरदान मिलना नितात असंभाव्य है। अतः नित्य-प्रति सैद्धातिक और चारित्र-सुधार विषयक सत्साहित्य का नियमित अध्ययन युवको के लिये आवश्यक है।

चारित्र पर बल देने की आवश्यकता से इन्कार नही किया जासकता। अपने उतार-चढाव के जीवन मे यह सबल और क्षमता का सब प्रकार का स्त्रोत है। चरित्रवान व्यक्ति हो समय, कुसमय दुखितो और पीडितो तथा व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा करने मे, दुष्टदलन मे समर्थ हो सकता है। एतदर्थ शारीरिक व्यायाम और आत्मिक संयम का नियमित अभ्यास करते रहना युवको के लिये अत्यन्त आवश्यक है। इसी-लिये इस निर्वाण महोत्सव वर्ष मे युवक मडलो का संगठन एव विभिन्न समितियो की ओर से क्रीडा प्रतियोगिताओ का आयोजन तथा पुरस्कार प्रदान करने की योजनाएं की जारही है।

चरित्र गठन के साथ ही साथ युवको को समाज और देश के निर्माण का दायित्व उठाना है। व्यक्तियो से भिन्न समाज कोई वस्तु नही और समाज के बिना व्यक्तिके लिये अकेले मे कोई प्रतिष्ठा नही है। श्रावक-धर्म सामाजिक नीति, नियमो और रीतियो से ओतप्रोत है। जहां साधु परमेष्ठी का आचरण धर्म-व्यक्ति के उत्थान केलिये विहित किया गया है, वहाँ गृहस्थियो के आचार-विचार व्यवहार अनगारो को आत्मिक साधना और श्रावको के पारस्परिक निर्वाह और पुरुषार्थ सिद्धि मे सहयोगी है। समाज मे प्रचलित निरर्थक रूढियो और कुरीतियो को उखाड फेंकने के लिये उन्हें कठोर श्रम और सघर्ष करना होगा। आजकल सामाजिक जीवन में धन-पूजा, सम्पदा का दिखावा, विलास प्रियता, पश्चिम का अधानुकरण, विवाहो मे होने वाले अपव्यय, लडकी के परिवार से दहेज आदि के नाम पर रुपया ऐंठना, तेरहवें का भोज, उस अवसर पर घडी, बर्तन बांटना, शोभा यात्राओ मे लडकों का नृत्य आदि अनेक कुरीतियां घुस आई है। इन कुरीतियो के पोषण के लिये समाज के सदस्यो को अनैतिक व्यापार और असामाजिक व्यवहरण एवं भ्रष्टाचार का सहारा लेना पडता है जो कि श्रावकाचार के प्रतिकूल है। युवको को इन कुरीतियो का उन्मूलन करने हेतु सक्रिय पग उठाने है।

मद्य-मांस और मधु इन तीन मकारो का त्याग चरित्र की पहलो सीढी है। बिना हिंसा का स्थूल त्याग किये कोई भी जेन कहलाने का अधिकारी नही हो सकता। "जीओ और जाने दो" का नारा बुलन्द करने वाले ये युवक यदि भगवान महावीर के बनाये मार्ग पर चलकर निज का एवं समाज का कल्याण करने के अभिलाषी है तो श्रावकों का स्थूल आचरण तो जीवन में उतारना ही चाहिये।

जहां मान-कषाय की पुष्टि का स्थल हो वहां हमारे सामाजिक बन्धु अपनी थैलिया खोल देते है। गजरथ चलाने, पंचकल्याणक प्रतिष्ठाये कराने, संघपति नाम धराने के लिये लाखो रुपये की सम्पदा उमड पडती है। किन्तु अभी शोध सस्थान स्थापित करने की दिशा मे, सत्साहित्य का प्रकाशन और धर्म प्रचार के लिये उसका बिना मूल्य वितरण करने की दिशा मे कोई उल्लेखनीय प्रयास नही हो रहे है। शोध संस्थान स्थापित होजाने पर जिनवाणी का उद्धार होने का मार्ग तो प्रशस्त होगा ही, अनेको असंगत और आधार रहित मान्यताओ के परिष्कार का द्वार भी खुलेगा। सत्यान्वेषण के लिये किया गया इस प्रकार का प्रयत्न अनेकान्त पद्धति का उन्नायक होगा। कुछ ऐसे सस्थान अभी है तो सही तथापि वे पर्याप्त नही है।

छोटे-छोटे खडो मे बंटे हुये समाज का एकीकरण करने की आवश्यकता है। सकीर्ण दृष्टिकोण अपनाने के फलस्वरूप समाज को आत्मघाती दृश्यो मे होकर गुजरना पड रहा है। घातक परिणाम इस हद तक सामने आये है कि आर्हत सिद्धान्तो के अनुयायी कुछ समाज तो नष्ट प्राय हो चुके है। जैन साहित्य के पारायण से तो एकीकरण मे कोई बाधा नही जान पडती। हाँ रुढि द्वारा उत्पन्न की हुई बाधाओ के बंधन अवश्य आडे आते है, जिन्हे तोडने की परम आवश्यकता है।

अन्त मे एक आवश्यक परामर्श देना उचित लगता है कि जाति और उच्चता-निम्नता जन्म से नही परन्तु कर्म और आचरण गत है। आगम कहता है कि जहा आचरण पापमय है वहा गोत्र नीच है। विपरीत इसके जहा पाप विरहित आचरण है गोत्र उच्च है। विचार कर देखने से पता लगता है कि एक ही भव मे गोत्र बदल जाता है। जाति के साथ गोत्र का कोई बन्धन नही है। जाति (व्यवहार की) केवल समाज का कार्य विभाजन है। अतएव डा० करणसिंह कश्मीरी का उद्बोधन सही लगता है कि आज के युगधर्म के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को एक ही जीवन मे प्राप्त अवसरो के अनुरूप क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और ब्राह्मण चारो ही बनना उचित और आवश्यक है।

यही आज का दिशा बोध है! कि बहुना?

## क्षणिक ! जीवन

पदमकुमार काशलीवाल

कल पर न कर भरोसा
करना है जो,
आज ही कर ले,
कौन जाने—
कल क्या रग लायेगा।
अरमानो की बरात
सजी रह जायगी
यह फूल सा जीवन
तेरा!
मिट्टी मे मिल जायेगा।
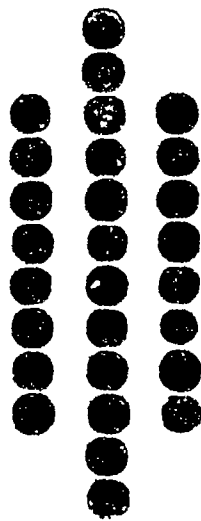
अहिंसा के पुजारी महावीर के चरणों में श्रद्धा सुमन सहित :—

शुभ कामनाएं

फोन— दुकान ३५
निवास १०६

तार--महावीर

# मैसर्स—अमरलाल मानकचन्द

सम्बन्धित फर्म—

## टोंग्या ब्रादर्स बारां
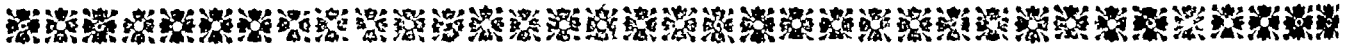
महावीर जयँती के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभ कामनायें

दूर सदेश : 'प्रकाश'

दूरभाष { दुकान : ७
निवास ३१

# सेठ मंगलजी छोटेलाल

बैंकर्स--ग्रेन सीड्स मर्चेंटस एन्ड कमीशन एजेन्टस

बारां ३२५२०५ (राज०)

*With Best Compliments From :*

# NIPHA MACHINERY

MANUFACTURERS PRIVATE LIMITED

*Manufacturers and Exporters of :*

Jute, Textile, Cotton, Ginning, Machinery, & Spares, Sheet Metal Components, Dies, Jigs & Fixtures

*Registered Office*
25, Netaji Subhas Road,
CALCUTTA-1
Tele : 22-0946 & 22-5814-15
Telex : NIPHA CA-3257

Works-I
80/2, Makhardah Road,
Howrah (W. Bengal)
Tele : 66-4213

*Delhi Office*
S-285, Panchshilla Park,
NEW DELHI-17
Tele : 626103
Telex : NIPHA ND-2902

Works-II
Plot No 29, Sector 6
Faridabad (Haryana)
Tele : 88-233

*NOW PROMOTES*

**SIDDHARTHA FERRO ALLOYS LIMITED**

25, Netaji Subhas Road, CALCUTTA-1.

---

ON THE OCCASION OF LORD MAHAVIR 2500th NIRWAN MAHOTSWA

*With Best Compliments From :*

**Phone : 68**

# Suraj Medical Stores

WHOLESALE CHEMISTS
BARAN (Rajasthan)

*STOCKISTS :—*

BRAUNS, B. E., F. D. C., FRANCO, GRIMALT, TATAFAISON, IDPL, P. C. I.

# वर्तमान समस्यायें और महावीर का संन्देश

—रिषभदास रांका

भगवान महावीर न तो जैनियो के प्रथम तीर्थकर थे और न ही अन्तिम। उनके पहले अनेक तीर्थकर हो गये। इसी युग मे भगवान महावीर के पहले २३ हुये और २४ वे वे स्वय थे। भविष्य मे भी अनेक तीर्थकर होगे, ऐसा उन्होने कहा था। उन्होने कहा था कि मै जो धर्म कह रहा हूँ वह नित्य है, ध्रुव है और शाश्वत है। मेरे पहले भी अनेक तीर्थकरो ने कहा था और भविष्य मे भी कहेगे। उन्होने यह भी कहा था कि सभी जीव सुख से जीना चाहते है, दु ख सभी को अप्रिय है, मरना भी कोई नही चाहता। इसलिए यदि सुख से रहना चाहते हो तो जिस तरह के व्यवहार की दूसरो से अपेक्षा रखते हो वैसा ही व्यवहार दूसरो के साथ करो। उन्होने दु ख का प्रारम्भ दूसरो के साथ परायेपन के व्यवहार को कहा था उन्होने सब जीवो के साथ समता के व्यवहार को सुखकर बताया था क्योकि उन्होने कहा था कि सभी प्राणियो मे आत्मा से परमात्मा, नर से नारायण तथा जीव से शिव बनने की क्षमता है। हर जीव अपने भाग्य का विधाता है। सुख-दुख का कर्त्ता है। उनकी क्षमता का आधार गहरा था। उनके ये वचन दीर्घ काल की साधना के परिणाम थे। वे पूर्णतया अनुभवपूर्ण थे। इसी कारण उसके पीछे यह आत्म विश्वास था, कि मै जो कह रहा हूँ नित्य है, ध्रुव है और शाश्वत है। उन्होंने कभी नही कहा कि तुम मेरी शरण मे आओ, मेरी भक्ति करो, मै तुम्हारा उद्धार कर दूगा। बल्कि उनका यही उपदेश था कि तुम्ही तुम्हारा उद्धार कर सकते हो, तुम्ही तुम्हारे शत्रु हो। जीव मात्र के प्रति आदर यह उनका जीवन था। वे प्राणी मात्र के प्रति आदर रखने को कहते है।

महावीर क्षत्रिय थे। उनका जन्म का नाम वर्द्धमान था। महावीर शब्द उनकी वीरता का परिचायक मात्र है। जो शत्रुओ को जीतता है वह वीर कहलाता है पर अपने आपको जीतने वाला अपने दुर्गुणो—कषाय—अहन्ताओ—ममताओ को जीतने वाला महावीर होता है। ऐसे महावीर की परम्परा वीरत्व की परम्परा है, कायरो की नही। तभी महात्मा गाधी ने भी कहा है कि—'अहिसा धर्म, वीरो का धर्म है। कायरो का नही।'

महावीर का धर्म उनके समय मे निर्ग्रन्थ धर्म कहलाता था किसी प्रकार की ग्रन्थि नही—ग्रन्थि हीन। मूर्च्छाओ, आसक्तियो और परिग्रहो से दूर, जिसमे किसी प्रकार का आग्रह नही, जो सबका धर्म था अर्थात् जन-धर्म सबके लिए। वह स्त्री का उद्धार कर सकता था, पुरुष का भी, गृहस्थ का भी और गृहत्यागी का भी, धनवान का भी और निर्धन का भी, ब्राह्मण का भी और चाडाल का भी, नगरवासी का भी और वनवासी का भी। जिसने समता अपनाई फिर वह चाहें कोई भी क्यो न हो अपना उद्धार कर सकता है।

महावीर ने किसी को अपना भक्त बनने को नही कहा। उन्होने तो मानव के भीतर जो आत्म-ज्योति अप्रगट थी उसे प्रगट करने का काम किया। उन्होने कहा—'सुख कहा ढूँढते हो, वह तो तुम मे ही स्थित है, सुख बाहर नही, भीतर है, जिस रागद्वेष, अपने-पराये मे तुम सुख की कल्पना कर रहे हो, परिग्रह, समृद्धि मे सुख खोज रहे हो वह सुख कहा है ? वहा तो दुख का अपरम्पार पारावार लहरा रहा है।

महावीर के अनुसार हमारी स्थिति ठीक उस बुढिया जैसी है जिसकी सूई तो घर के भीतर खोई थी पर उसे ढूढ रही थी राजपथ पर, सार्वजनिक प्रकाश व्यवस्था के आंचल मे। किसी ने पूछा—माँ क्या ढूढ रही हो ? उत्तर मिला—बेटे, मेरी सूई खो गई है, उसे ही ढूढ रही हू।

कहा गिर गई माई आपकी सूई किसी अनजान व्यक्ति ने प्रश्न किया। बुढिया ने बडी चतुराई से जबाब दिया—बेटे, खोई तो घर मे ही है किन्तु घर मे इस समय बहुत गहरा अन्धेरा है। अन्धकार मे भला सूई ढूढी जा सकती है ? इसी लिये मैं इस प्रकाश के नीचे आ गई हूँ। क्या हमारी स्थिति उस बुढिया से जरा भी भिन्न है ? महावीर ने ठीक ही कहा था, सुख बाहर नही है। इसीलिये समता द्वारा अपना और दूसरो का सुख प्राप्त करने के लिये सयम रूपी एक मूल मन्त्र दिया महावीर ने।

यदि उनके अनुयायी उनके धर्म को विश्व-कल्याणकारी मानते हो तो सहज मे ही उसका प्रसार मानव मात्र के कल्याण के लिए करना सहज कर्तव्य हो जाता है। ऐसे श्रेष्ठ, मगलमय धर्म को केवल कुछ लोगो अर्थात् जैनियो तक ही सीमित रखना उचित नही होगा क्योकि जैनियो की मान्यता है कि उनका धर्म सर्वोत्कृष्ट है। यदि उसका कुछ भी श्रवण कोई करले, तो उसका कल्याण हो जाता है। रोहिणिया चोर के कान मे एक शब्द पडते ही उसका कल्याण हो गया तो फिर उस धर्म का लोगो मे किया हुआ प्रचार व्यर्थ कैसे हो सकता है ?

ससार के सभी सयाने एक मत है। देश, काल परिस्थितियो के अनुसार भले ही उनकी भाषा या शैली मे कुछ अन्तर दिखाई दे जाय किन्तु फिर भी मूल बात सभी ने एक ही कही है। सभी ने कहा है कि सभी भगवान के बेटे है। सबको भाई समझ कर प्रेम करो। हिसा मानव जीवन का अभिशाप है। सभी एक ब्रह्म के रूप है, सभी को आत्मवत् समझो। प्राचीन सत्पुरुष ही नही, बल्कि आज के समस्त दार्शनिक, मुनि, सन्त अर्थात आज के सयाने लोग भी यही बार बार दोहराते है कि समता के बिना कोई सुखी नही हो सकता। समाज मे समता का लाना ही समाज मे सुख और शान्ति स्थापित करने का एक मात्र उपाय है। यही विश्व शान्ति का रास्ता है, सुखी बनने का उपाय है। आज ससार की सबसे बडी समस्या है असमता। जब तक ससार मे असमता रहेगी, असन्तोष रहेगा, अभावग्रस्त तथा समृद्धो का सघर्ष चलता रहेगा, तब तक शान्ति और सन्तोष की कामना आकाश मे फूल खिलाने के समान ही व्यर्थ होगी। आज तो सघर्ष इतना अधिक तीव्र हो गया है कि उसके लिए समता के बिना दूसरा कोई उपाय शान्ति का रह ही नही गया है।

नये युग मे समता लाने का प्रयत्न अपने ढग से विकसित हुआ है। पिछले साठ वर्षो मे रूस और अन्य पश्चिमी देशो मे इसके लिए प्रयोग हुए—क्राति द्वारा समता लाने के लिए प्रयोग। ऐसी क्रातियो मे लाखो ही नही, करोडो मनुष्यो के प्राण लेकर भी सुदृढ राजसत्ता इस प्रयोग मे सफलता नही पा सकी, क्यो ? क्योकि समता लाने के लिए जहा भगवान महावीर ने समता, सयम और तप को साधन माना था, वहा हिसा क्रूरता, दण्ड, कानून और नियत्रण द्वारा समाज मे समता लाने के लिए प्रयत्न हुए। मूल मे ही

कहते है कि जो सभा जय प्रकाश जी और उनके बीच हुई थी उसकी सम्पन्नता महावीर की जय के साथ ही विनोबा भावे ने की थी ।

खैर आप कहेगे कि विनोबा जी तो महान सन्त है, वे इस मार्ग को श्रेष्ठ मानते है यह तो स्वाभाविक ही है किन्तु आज के वैज्ञानिक इस विषय मे क्या कहते है ?

आप उस विषय मे भी जान ले । वैज्ञानिको और बुद्धिवादियो को लगता था कि हमारे वैज्ञानिक प्रयोगो द्वारा हम ऐसी चीज बना देगे कि जिससे ससार मे शान्ति का निर्माण हो । अभावग्रस्तो का अभाव दूर हो । जो ससार की शान्ति मे बाधक है उन्हे सबक सिखाया जाय । अणुबम बनाये गये, उससे भी अधिक सहारक शस्त्रास्त्रो का निर्माण किया गया । पर देखा गया कि इससे शान्ति निकट आने के ऐवज मे हमसे और भी ज्यादा दूर खिसक गई । और उससे उत्पन्न होती जा रही है और अधिक घोर अशान्ति, निराश और कुठा । फिर उन्होने विचार किया कि हम जनता के उपयोग की वस्तुए इतनी अधिक तादाद मे बनायेंगे, इतने कम समय मे कि जिससे सबको तत्काल उपलब्ध हो सके । किन्तु जब उन उपलब्धियो के बावजूद ससार मे अभाव ज्यो का त्यो रहा अपितु अभावग्रस्तो का समूह बढ गया । तब उन्हे महसूस हुआ कि उनकी शोध व्यर्थ ही नही गई. अपितु ससार मे विनाश का सर्जक भी बन गई, सब वैज्ञानिक घबराये । १९७१ मे सुरक्षा परिषद के मन्त्री से ससार भर के २३०० से अधिक वैज्ञानिको ने निवेदन किया कि यदि इसी प्रकार विज्ञान का उपयोग होता रहा तो ससार को विनाश से कदापि नही बचाया जा सकता । विनाश अवश्यम्भावी है । क्योकि जिन रासायनिक प्रक्रियाओ के द्वारा जीवनोपयोगी वस्तुओ का उत्पादन बढ रहा है और उनका उपयोग बढ रहा है, उससे जलवायु और जमीन दूपित हो रही है । यह दौड़ यदि इसी रफ्तार से चलती रही तो वह दिन दूर नही जब ससार विनाश के गर्त मे जा गिरेगा । यह रफ्तार अधिक से अधिक सौ वर्ष मानवो अथवा प्राणियो को देगी, बस । फिर अभावग्रस्त और समृद्धो का सघर्ष भी अधिक उत्पादन से कम नही हो पाया है । वह तो जगली आग की भाति पल-प्रतिपल बढता ही जा रहा है । जब तक स्वेच्छा से समृद्ध व्यक्ति सयम नही अपनायेंगे, यह खाई को नही पाटा जा सकता । जब तक समृद्ध अभावग्रस्तो की जरूरतो का ख्याल कर अपनी जरूरते कम नही करेगे, समस्या नही सुलझ सकती उलझ भले ही जाय ।

पिछले वर्ष आमंस्ड्म मे फिर वैज्ञानिक व विचारक एकत्र हुए, उन्होने एक निवेदन 'ब्लू प्रिन्ट आफ रवावैल' मे इसी बात को पुन जोरदार शब्दो मे दोहराया ।

उपर्युक्त कारणो की तह तक पहुँचने पर यही महसूस होता है कि आज ससार को भगवान महावीर के उपदेशो की अत्यधिक आवश्यकता है । भगवान महावीर ने वास्तव मे आज से २५०० वर्ष पूर्व जो बात कही थी वह आज के सन्दर्भ मे भी उतनी कारगर है । उन्होने ठीक ही कहा था कि मेरा धर्म नित्य है, ध्रुव शाश्वत है और दूसरी बात भी हमे माननी होगी कि सभी सयाने एक मत ।

ऐसे विश्व-कल्याणकारी धर्म की बात उनके २५०० व निर्वाण महोत्सव के अवसर पर अपनाना और उसका प्रचार-प्रसार करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि है । मै तो यह कहूँगा कि हम सबके सुख और कल्याण के लिये, सन्तोष और मगल के लिये यह करना ही आज के युग मे सच्ची मानवता को प्राप्त करना है ।

जैनी मानते है कि भगवान महावीर का धर्म विश्व कल्याणकारी, इहलोक तथा परलोक दोनो

का ही कल्याण करने वाला है। तभी स्वाभाविक ही उनमे इस धर्म के प्रसार के लिये उत्साह होना स्वाभाविक है। किन्तु वह उत्साह तभी सार्थक होगा। जब हम इस धर्म को स्वय के भीतर उतारे। जब तक हम स्वय उसे नही जीते, दूसरो को उपदेश देना कोरे गाल बजाने जैसा ही होगा। हमे भगवान महावीर को अपने हृदय मे स्थान देना है। जब वे धर्म का स्वय आचरण करेगे तभी उसका वे दूसरो मे भी प्रचार, प्रसार कर सकेंगे। मै स्वय सिगरेट पीऊ और अपने पुत्र को कहूँ कि बेटे सिगरेट पीना हानिकारक है तो मेरे उस कहने का कोई औचित्य नही है। इसलिये मै सभी जैनियो से आग्रहपूर्वक निवेदन करता हूँ कि वे भगवान महावीर के धर्म को यदि विश्व-कल्याणकारी मानते हो तो उन्हे जैन धर्म जिस रूप मे और जिस भावना से समझ मे आया हो वैसा उसका स्वय भी पालन करे। मै इस विवाद मे नही पडता कि सच्चा जैन धर्म कौनसा है। मेरा तो यह विश्वास है कि महावीर ने जो कुछ भी कहा है वह सत्य है। मै मानता हूँ महावीर की बात कि प्रत्येक मनुष्य मे अपने विकास की पूर्ण क्षमता है। आत्मा मे अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य और अनन्त सामर्थ्य और अनन्त आनन्द है। भले ही उस पर कर्म-बन्धनो के आवरण आ गये हो किन्तु फिर भी सूर्य को बदली मे छिपाया नही जा सकता' दीपक को कपड़े से ढक देने से उसका प्रकाश मन्द नही हो जाता। वैसे ही हम श्रम करके वे आवरण हटा सकते है। अधिक न सही, सूर्य की बात भी मै नही करूगा। हर व्यक्ति मे लालटेन की तरह इतना प्रकाश तो अवश्य ही उपलब्ध है कि जो उसे ठीक मार्ग का दर्शन करा सके और वह यदि धर्म मार्ग पर चलता है तो अगला कदम कहाँ रखा जाय यह वह जानता है। इसीलिए धार्मिक बनने की जरूरत है। धार्मिकता दिखाने की बस्तु नही है, जीवन मे उतारने की बात है। अहिसा की श्रेष्ठता से कौन परिचित नही? सत्य क्या है वह छोटा बच्चा भी जानता है। सिर्फ जरूरत है इस बात की कि तदनुसार आचरण किया जाय। इसलिए धर्म क्या है यह दूसरे से पूछने की अपेक्षा अपनी आत्मा से ही पूछिये और जो वह कहे तदनुसार आचरण करिये। रास्ता अपने आप मिल जायगा। अमुक-बुद्ध की बात उत्तराध्यनन मे लिखी है, उसका रहस्य यही है। जब मनुष्य धर्माचरण कर आत्मा को विशुद्ध करने की ओर कदम बढाता है तो वह अपना पूर्ण विकास कर पाने मे सक्षम होने लगता है। बस इसमे शर्त इतनी सी ही है कि धर्माचरण करने लगेगे तो उसका दूसरे पर भी प्रभाव पड़ेगा। हममे प्रकाश उत्पन्न होगा तो लोगो को भी अन्धकार से त्राण अवश्य ही प्राप्त होगा।

हम भगवान महावीर के धर्म को अपने व दूसरो के कल्याण के लिए, इहलोक और परलोक के कल्याण हेतु अपनाव। यदि ऐसा कर सके तो निश्चित ही हमारी उस महान विश्व-कल्याणकारी पुरुष के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी। उनके प्रति शब्दो से, बडे-बड़े वाक्यो से आदर प्रगट करने की अपेक्षा उनके उपदेशो को जीवन मे उतारना और प्रचार करना ही उनके प्रति की गई सर्वोच्च श्रद्धाजलि होगी।

# भगवान महावीर के आध्यात्मिक संदेश

अगरचन्द नाहटा
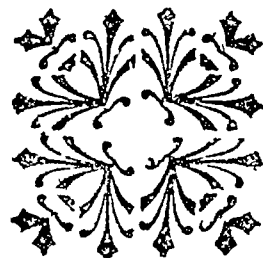
भारत आध्यात्म प्रधान देश है। यहा के ऋषि, मुनियो ने आत्मा परमात्मा और जगत के सम्बन्ध मे जितना गहरा और विस्तार से चिंतन किया है, वैसा अन्यत्र नही किया गया। भारतीय साधको ने आत्मा को ठीक समझने के लिये, उसका साक्षात्कार तथा अनुभव करने के लिये और परमात्म पद प्राप्ति के लिये जितना समय और श्रम लगाया है, उतना विश्व मे अन्य साधको ने नही लगाया। इसीलिये आत्मा के सम्बन्ध मे कई दार्शनिक विचार सामने आये क्योकि योग्यता और प्रणालियाँ भिन्न २ होती हैं, अत उन दृष्टिकोणो के अनुसार दर्शन साहित्य मे भी विचार भेद पाया जाना स्वाभाविक ही है। अन्य दार्शनिको ने आत्मा के किसी एक स्वरूप को सामने रखते हुये अपना मत कायम किया। पर जैन दर्शन ने अनेक दृष्टिकोणो का समन्वय करने का जो प्रयत्न किया वह बहुत ही मौलिक और महत्वपूर्ण है।

जैन दर्शन के अनुसार यह जगत, जीव और जड़ दो पदार्थों का समूह है। जीव चैतन्य या ज्ञान स्वरूप है और जड मे चैतन्य या ज्ञान नही होता। सुख-दु:ख की अनुभूति जीव ही करता है। छ द्रव्यो मे आत्मा को छोड़कर धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाश, पुद्गल और काल ये पाँचो द्रव्य जड हैं। छ द्रव्यो मे केवल पुद्गल ही रूपी है अर्थात दिखाई देने वाला है, शेष अरूपी है। आत्मा दिखाई नही देती केवल अनुभव की जाती है। जो दिखाई देता है, वह शरीर है। शरीर से आत्मा भिन्न है। शरीर पुद्गल द्रव्यो से बना हुआ जड पदार्थ है। जब शरीर में से जीव निकल जाता है तो शरीर हमारे सामने पडा रहता है, पर उसमे सुख-दुखादि अनुभव करने की शक्ति या ज्ञान नही रहता। अनेकान्त दृष्टि से आत्मा स्वरुपत: नित्य है पर शारीरिक परिवर्तन की दृष्टि से अनित्य है। अपने किये हुए शुभाशुभ भावो-परिणामो और प्रवृत्तियो द्वारा रागद्वेष के कारण यह जीव कर्मो का बधन करता है और उन कर्मों को उसे स्वय ही भोगना पडता है। अत: जहाँ तक किये हुए कर्म नष्ट न हो जायें और नये कर्मों के बन्ध को रोका नही जाये, वहाँ तक आत्मा अपने रूप-स्वरूप अर्थात् मोक्ष को प्राप्त नही कर सकती। जैन दर्शन ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता या कर्मफल दाता नही मानता। जैन-धर्म के अनुसार प्रत्येक आत्मा मे परमात्म भाव भरा हुआ है पर शुभा-शुभ कर्मों के कारण आत्मा का मूल स्वभाव दब गया है, ढक गया है। जब संवर और निर्जरा के द्वारा कर्मों की समाप्ति हो जायेगी, तब यह आत्मा परमात्मा बन जायेगी।

कर्मों के कारण ही जीवों में बहुत अन्तर दिखाई देता है। कर्मों के मिटते ही यह अंतर भी समाप्त हो जायगा और सब एक समान सिद्ध, बुद्ध, और मुक्त हो जायेंगे।

आत्मा का वास्तविक स्वरूप क्या है? वर्तमान स्वरूप किन कारणो से बना है और शुद्ध स्वरूप का कैसे प्राप्त किया जा सकता है? इन बातो पर जैन धर्म के प्रवर्तकों, तीर्थंकरों ने बहुत गहरा चिन्तन किया है। संयम, तप और ध्यान के द्वारा उन्होंने आत्म ज्ञान और केवल ज्ञान प्राप्त किया और फिर जगत के कल्याण के लिए अपनी उपलब्धि और अनुभूति को जगह-जगह घूमकर प्रचारित किया। इससे अनेको अन्य आत्माओ ने आत्म-धर्म की साधना की और वे परमात्मा बन गये। जिनके कर्म पूर्ण रूप से समाप्त नही हो पाये वे कुछ जन्मो के बाद सिद्ध, बुद्ध और मुक्त होगे।

आत्मा का लक्षण बतलाते हुए भगवान महावीर ने कहा है—

णाणं च दंसणं चैव, चारित च तवो तहा।
वीर्यं च उवयोगं चैवं जीवस्स लक्षणम्॥

अर्थात् ज्ञान, दर्शन, चरित्र, तप, वीर्य और उपयोग ये आत्मा के लक्षण है। इसलिये मोक्ष-मार्ग का विवेचन करते हुए सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक चरित्र को मोक्ष-मार्ग बताया है। जीव के दो भेद किये गये है (१) मुक्त (२) संसारी। मुक्त आत्मा परमात्मा है। कर्म हा बंधन है और उनका छूट जाना ही मोक्ष है। इस प्रसंग मे-कर्म क्या है? कैसे बनते है? कैसे भागने मे आते है? किन उपायो से छूटते है?

इस तरह के बधे, फल और मोक्ष के संबध मे लाखो श्लोक जैन साहित्य मे प्राप्त है। कर्मों के संबंध मे इतना गभीर और विस्तृत विवेचन संसार के किसी भी दर्शन मे नही पाया जाता।

कर्म-बन्ध के पांच कारण बताये गये हैं १. मिथ्यात्व २. अविरति ३. प्रमाद ४. कषाय और ५ योग। आत्मा के साथ कर्मों का बंध भी चार प्रकार का होता है १. प्रकृति बन्ध २ प्रदेश बन्ध ३. रस बध और ४ स्थिति बन्ध। कर्मों के आठ भेद है १. ज्ञाना वरणीय २ दर्शना वरणीय ३. मोहनीय ४. वेदनीय ५ नाम ६ गोत्र ७ अतराय ८ आयु। जिन परिणामो या कार्यो से आत्मा के साथ कर्मों का बन्ध होता है उन्हे आस्त्रव और जिन भावो या प्रवृत्तियो से आत्मा से कर्म अलग होते है, उसे निर्जरा कहा जाता है। आस्त्रव शुभ और अशुभ दो प्रकार के होते है। पुण्य शुभ और पाप अशुभ है। मनुष्य, देव, नरक और तिर्यंच इन चार गतियों में जीव परिभ्रमण करता है, सुख-दुख उठाता है. उसका कारण अपने किये हुए शुभाशुभ कर्म ही है।

भगवान् महावीर ने जो आध्यात्मिक संदेश दिया है, जैन आगम से चुने हुए कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे, है इससे प्रत्येक आत्मा को बडी प्रेरणा मिलेगी। भगवान् महावीर का कहना है—"जे अेवं जाणेइ ते सव्वं जाणेइ" अथात् जो एक आत्मा को जानता है वह सब को जान लेता है। इसलिए सब से पहले आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। सम्यक् दर्शन को मोक्ष के लिए सबसे पहला और आवश्यक स्थान दिया है क्योकि आत्मा अनादि काल से कर्मो से बंधा हुआ है, अपने स्वरूप को भूल चुका है। इस शरीर को ही आत्मा मान रहा है, पौद्गलिक जड़ पदार्थो मे 'मैं' और 'मेरा' का ममत्व बना रखा है। इसलिए सबसे पहले आत्मा चेतन स्वरूप है. शरीर आदि दृश्यमान सारे पदार्थ पौद्गलिक अर्थात जड है। आत्मा का स्वरूप इनसे भिन्न है, इस भेद-विज्ञान से ही आत्मा का सम्यक् दर्शन नामक गुण प्रकट होता है। सम्यक् दर्शन के बाद जो भी पदार्थों का ज्ञान पहले था, आगे होगा वह सब सम्यक् ज्ञान कहलायेगा। जहाँ तक सम्यक

दर्शन नहीं है वहा तक की जो भी जानकारी है उसे अज्ञान कहा गया है। सम्यक ज्ञान के बाद सम्यक् चारित्र की उपलब्धि होती है। ज्ञान से वस्तु का सच्चा या सही स्वरूप जान लेने पर जो वस्तुऐ या बातें हेय है-छोडने योग्य है, उनको छोड देना और जो उपादेय है उन्हे ग्रहण कर लेना ही सम्यक् चारित्र है। आत्मा जो पर पदार्थों और पर भावो मे आसक्त है, उसकी आसक्ति मिट जाने पर वह अपने शुद्ध चैतन्य स्वरुप ज्ञान मे ही रमण करेगा, स्वरुप मे स्थित रहेगा। यह आत्म रमणता ही वास्तव मे सम्यक् चारित्र है। पर पदार्थो की इच्छा का त्याग या निरोध ही तप है। इच्छाओ, वासनाओ, कामनाओ पर विजय प्राप्त कर लेने पर आत्मा से कर्म दूर हो जाते हैं और आत्म शुद्ध, स्वरुप, सहजानन्द, परमानन्द सभी गुण और शक्तियो से परिपूर्ण होजाते है। फिर कर्म बन्धन का कोई कारण नही रहता। इसीलिये जैन धर्म मे परमात्मा की शुद्ध अवस्था प्राप्त होने के वाद फिर संसार मे आना या अवतार ग्रहण करना सभव ही नही है।

कर्मों के बीज हैं राग और द्वेष, और द्वेष भी राग के कारण ही उत्पन्न होता है। इसलिये मूल बीज 'राग' ही है, राग का समाप्त हो जाना ही वीतराग अवस्था है। इसलिये जैन तीर्थंकरो का सबसे अधिक प्रसिद्ध विशेषण है- वीतराग। राग और द्वेष का नष्ट हो जाना ही सम्यक्त्व और समभाव है, इसकी पूर्ण उपलब्धि ही वीतराग है। इसलिये मोहनीय कर्म को सबसे प्रबल माना जाता है, बाकी ७ कर्म तो आत्मा के १-१ गुण का घात करते हैं या आवरित करते है, पर मोहनीय कर्म सम्यक दर्शन और सम्यक चारित्र दोनो गुणो को आवरित करता है, ढकता है। इसलिये आत्म विस्मृति रूप मिथ्यात्व आत्मा का परम शत्रु है।

भगवान महावीर ने आत्मा को सबोधित करते हुए जो प्रेरणादायक और उद्‌बोधक संदेश दिया है, उसके कुछ आगम बाक्य नीचे दिये जा रहे है— आत्मा को ही दमन करना चाहिये क्योकि आत्मा ही दुर्दम्य है। उसका दमन करने वाला इस लोक और परलोक मे सुखी होता है। दूसरे लोग बन्धन और बन्ध के द्वारा मेरा दमन करें इसकी अपेक्षा यही अच्छा कि मैं संयम और तप के द्वारा अपनी आत्मा का दमन करूं। पुरूष, तू अपने आपको निग्रह कर, स्वय के निग्रह से ही तू समस्त दुखो से मुक्त हो जायगा। वस्तुत' बन्धन और मोक्ष अपने भीतर ही है। आत्मा के साथ युद्ध कर। बाहरी दुश्मनो के साथ युद्ध करने से कोई लाभ नही। आत्मा को आत्मा द्वारा जीतकर मनुष्य सच्चा सुख पा सकता है। दुर्जय संग्राम मे १० लाख योद्धाओ पर विजय प्राप्त करने की अपेक्षा अपने आप पर विजय प्राप्त करना ही सच्चो और परम विजय है।

आत्मा ही सुख दुख करने वाली तथा उसका नाश करने वाली है सत्प्रवृत्ति मे लगी हुई आत्मा मित्ररूप है और दुष्प्रवृत्ति मे लगी हुई आत्मा शत्रु है अर्थात आत्मा ही अपना शत्रु और वही अपना मित्र है। दुराचार मे प्रवृत्त आत्मा हमारा जितना अनिष्ट करती है उतना गला काटने वाला दुश्मन भी नही करता। जिस प्रकार आत्मा राग-द्वेष द्वारा कर्म-बन्ध करता है और समय आने पर उन कर्मों का फल भोगना पडता है उसी तरह यह आत्मा कर्मों का नाश करने पर परमात्मा बन जाती है। हे पुरुष! तू स्वय ही अपना मित्र है फिर बाहर मे क्यो अन्य किसी मित्र की खोज कर रहा है? स्वरूप दृष्टि से सभी आत्मायें एक समान है। आत्मा और शरीर भिन्न-भिन्न है। आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है। दुख अपना किया हुआ है, किसी अन्य का दिया हुआ नही। आत्मा को जीत लेने पर सबको जीत लिया जाता है। अपनी आत्मा को सदा पाप कर्मों से बचाये रखना

चाहिये जब तक वृद्धावस्था नही आजाती, व्याधियों का जोर नही बढता, इन्द्रियां क्षीण नही होती, तब तक विवेकी आत्मा को धर्म का आचरण कर लेना चाहिये। जो रात और दिन एक बार अतीत की ओर चले जाते है, वे पुनः कभी नहीं [illegible]। जो मनुष्य धर्म करता है उसके ये रात-दिन सफल हो जाते है। अतः समय मात्र भी **प्रमाद मत करो** क्योंकि आयु क्षीण होती जाती है।

कविता —

## * "पांच पुण्य" *

रचयिता—प्रेमजी प्रेम

उन्हे मिला है मोक्ष
जिन्होने पुण्य कमाये पाच
अ-परिग्रह, अस्तेय, अहिंसा
ब्रह्मचर्य अरु साच।
अ-परिग्रह अर्थात वस्तु का सग्रह
व्यर्थ न करना,
अ-स्तेय का अर्थ चुराकर चीज
न निज घर भरना,
अ-हिसा, पर-हिय न दुखाना,
ब्रह्मचर्य, व्रत शील धारकर
सत्यव्रती बनने हित जिसने
लिया स्व-मन को बाच।
उन्हे मिला है मोक्ष
जिन्होने पुण्य कमाये पॉच।

# भगवान महावीर का
# जीवन परिचय

प्रस्तुत कर्ता—सुरेन्द्रकुमार पापडीवाल, कक्षा १०

अधिकाश व्यक्तियो की यह धारणा रहती है कि भगवान महावीर क्या थे ? महावीर का जन्म ईसा पूर्व ५९९ मे हुआ था। वास्तव मे महावीर का व्यक्तित्व काल की सीमाओ मे नही बाधा जा सकता है। महावीर ने जो चिन्तन दिया वह चन्द्र व सूर्य के प्रकाश की तरह विश्व व्यापी है। महावीर क्या थे ? यह समझने के कुछ आधार सूत्र है भगवान महावीर के पाँच नाम साहित्य में आते है—वर्धमान, सन्मति, वीर, अतिवीर और महावीर यह पाँचो नाम उनके गुणो के आधार पर रखे है। भगवान महावीर का चिन्तन चन्दन की तरह शीतल और पारिजात पुष्प की तरह सुरभिमय है।

भगवान महावीर का जन्म वैशाली मे हुआ। वैशाली उस समय अत्यन्त समृद्ध गणतन्त्र था। महाराजा चेटक इस गणतन्त्र के प्रभावकारी अध्यक्ष थे। महावीर की माता त्रिशला महाराजा चेटक की पुत्री थी तथा महावीर के पिता का नाम सिद्धार्थ था। एक बार सगम नामक देव महावीर की परीक्षा के लिए उस उद्यान मे पहुँचा जहाँ पर महावीर अपने साथियो के साथ जिस वृक्ष पर चढने उतरने का खेल खेल रहे थे उस वृक्ष पर जाकर उस देव ने भयकर विषधर का रूप बनाया और उसके तने से लिपट गया वहाँ पर उपस्थित सभी बालक सर्प को देखकर भयभीत हो गये, किन्तु महावीर नही डरे, उन्होने अपने साथियो से कहा कि भयभीत न होइये इसको उठाकर अभी दूर फैंक देते है। साथियो के मना कर देने के बावजूद भी उन्होने सर्प को पकड कर दूर फैंक दिया। सगम नामक देव ने महावीर की अनेको परीक्षा ली, लेकिन भगवान महावीर सभी मे सफल हुये। एक बार इन्द्र वृद्ध का वेष बनाकर महावीर के समक्ष उपस्थित हुआ और महावीर से अनेक प्रकार के प्रश्न करने लगा महावीर ने उसके प्रश्नो के जो उत्तर दिये उससे स्वय काला-चार्य भी आश्चर्य चकित हो गया।

महावीर अपने परिवार के राजसी वातावरण मे धीरे-धीरे बड़े हो रहे थे। उन्होने समाज के अन्दर अनेक भयकर विषमताये देखी, उन्होने देखा कि समाज मे स्त्रियो का स्थान नगण्य माना जाता है।

महावीर का इन सब बातो को देखकर दिनो दिन चिन्तन बढता गया और इन समस्याओ के बारे मे सोचने लगे।

महावीर अब एक सुन्दर स्वस्थ और ओजस्वी युवक थे। परिवार वालो ने सोचा कि महावीर

का विवाह कर दिया जाये। माता त्रिशला और सिद्धार्थ यह चाहते थे कि बेटे का विवाह किसी अच्छे राजवश की सुन्दर राजकुमारी से हो।

अन्तत कलिग जनपद के शासक जिन शत्रु की कन्या यशोदा के साथ महावीर का विवाह निश्चय हुआ। इस विवाह के सम्बन्ध मे जैन साहित्य में दो परम्पराये पायी जाती है, एक परम्परा के अनुसार महावीर का विवाह हुआ और उनके एक कन्या भी हुई जिसका नाम प्रिय दर्शना रखा गया। दूसरी परम्परा के अनुसार महावीर का विवाह नही हुआ।

प्रव्रज्या के पथ पर—

महावीर परिवार का त्याग करके सन्यस्त हो रहे है यह समाचार विजली की तरह सारी वैशाली नगरी मे फैल गया।

आखिर मगसिर सुदी १० ईसा पूर्व ५६६ प्रव्रज्या की तिथि निश्चित हुई और अपार जन समूह ने जय जय कार के शब्दो का तुमुलघोष किया।

अन्तिम वस्त्र का परित्याग—

महावीर ने दीक्षित होते समय सम्पूर्ण वस्त्राभूषणों का परित्याग कर दिया था और दिगम्बर अवस्था अगीकार की थी।

महावीर ने साढे बारह वर्षों तक कठोर तप किया वह गर्मी, सर्दी, वर्षा आदि से भी विचलित नही हुये और दीर्घकाल तक तपस्या मे लीन रहे।

निर्वाण और निर्वाण स्थली—

भगवान महावीर विहार करते हुये पावानगर पहुँचे। यही कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन रात्रि के अन्तिम प्रहर मे उनका निर्वाण हुआ।

भगवान महावीर की निर्वाण स्थली पटना जिले मे आज भी स्थित है वहाँ पर भगवान की चरण पादुकाये है। जैन मान्यता के अनुसार दीपावली भगवान महावीर के निर्वाण की स्मृति मे मनाई जाती है।

**

सांसारिक भौतिकवाद की चकाचौंध से
दूर आत्म चिन्तन का एक
पवित्र स्थल,
मन्दिर !

—सुधा सेठी

# "नारी और निराशा"

—सन्तोष कुमारी बज

प्रायः नारियो के मुख से यह सुनने मे आता है कि हमारा जन्म व्यर्थ है, भगवान किसी को नारी न बनाये ! परन्तु यह सोचना नितान्त गलत है । ऐसा वह तस्वीर के एक पहलू को देखकर कहती हैं । उनका ध्यान नारी के गौरवपूर्ण जननी रूप की ओर नही जाता, जिस पद को ससार मे श्रेष्ठतम स्थान प्राप्त है ।

नारी इस संसार रूपी घडी मे उस कील के समान है जिस पर समय रूपी ज्ञान को दर्शाने वाली सुइयां टिकी रहती है । जैसे कील का मुख्य धर्म स्थिरता है वैसे ही नारी का मुख्य धर्म शील, संयम, त्याग, स्नेह व व्यवस्थापकता है । जिस प्रकार अगर घडी की केन्द्रीय कील टूट जावे अथवा खराब हो जावे तो घडी समस्त मशीनरी के ठीक होते हुए भी अपने एक मात्र कार्य समय दर्शाने मे असमर्थ हो जाती है, उसी प्रकार यदि नारी भी अपने गुण, संयम, शील, त्याग, स्नेह आदि पर स्थिर न रहकर उससे च्युत हो जावे तो निश्चित ही इस संसार से ज्ञान का प्रकाश लुप्त हो जायेगा ।

अतः मैं नारी समाज से अनुरोध करती हूँ कि वह इस निराशा वाद का त्याग कर अबला से सबला बने और अपनी गौरवपूर्ण मर्यादा व पद को समझकर दत्त चित्त से अपना कर्तव्य निभावें तथा सामाजिक बुराइयो को दूर करके अपनी शक्ति का परिचय दें ।

भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण
महोत्सव के शुभ अवसर पर

* हार्दिक शुभकामनाओं के साथ *

सरदार बाई दवाखाना

हरनावदा शाहजी

हमारा ध्येय :

गरीबों की निःशुल्क सेवा है ।

डा० राधेश्याम खंडेलवाल

एम. बी. बी. एस.



भगगान महावीर के २५०० वे निर्वाण महोत्सव
के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ

नारायणलाल रामगोपाल

ग्रेन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

हरनावदा शाहजी

ब्राच कोटा–फोन २२२८

सम्बन्धित फर्म :

अशोका स्पाइसेन, कोटा

फोन : ३०९८ तार : नील कमल


भगवान महावीर के २५०० वे निर्वाण महोत्सव
के शुभ अवसर पर

शुभ कामनाओं सहित

घनश्यामदास योगेन्द्रकुमार

ग्रेन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

हरनावदा शाहजी, डि० कोटा



भगवान महावीर के २५०० वे निर्वाण महोत्सव
के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभ कामनायें

मोहनलाल मुरलीधर

सम्बन्धित फर्म—

मोहनलाल एण्ड कं०,

खण्डेलवाल मेडीकल स्टोर

हरनावदा शाहजी

भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण

महोत्सव के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभ कामनाये

**गोपाल पान भण्डार**

बारां ( राज० )

बारां नगर में

स्वादिष्ट एव उत्तम पान के लिये विख्यात ।

★

तार : 'सीसवाली'

शुभ कामनाओं सहित —

**शाह गोपीलाल कैलाशचन्द्र जैन**

क्लोथ, ग्रेन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

बृजराज धानमंडी, सीसवाला (कोटा-राज०)

शुभ कामनाओं सहित :—

आफिस . १८८
दुकान : ४५
निवास . ४५

**मे० धन्नालाल महेन्द्रकुमार**

सभी रासायनिक खाद, औषधियाँ, व पशु आहार विक्रेता

बारां (राज०)

**वितरक-हिन्दुस्तान जिंक लि०, उदयपुर**

**इन्डियन पोटाश लि०, चंडीगढ़**

सम्बन्धित फर्म—

मे०—मदनलाल धन्नालाल रामपुरिया, बारां

मे०—मुकन्दीलाल मूलचन्द बारां

मे०—धन्नालाल गुलाबचन्द सर्राफ.बारां

भगवान महावीर के २५०० वे निर्वाण महोत्सव पर

**शुभ कामनाओं सहित**
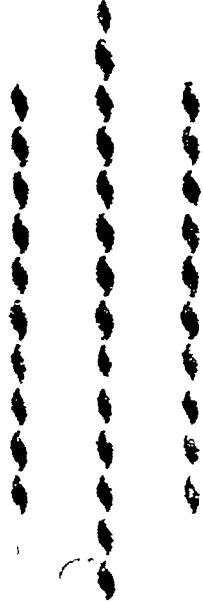
**श्रीकृष्ण रामगोपाल कसांडिया**

ब्रास मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

**चौमुखा बाजार बारां**

भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण महोत्सव पर

हार्दिक अभिनदन करते।

व्यापारी की उन्नति सच्चाई मे है।

फोन : १२४

**सोगानी ब्रादर्स**

जनरल मरचेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

बारां ( राजस्थान )

सम्बन्धित फर्म — **पन्नालाल बिरधीचन्द सर्राफ**

शाह धनराज भँवरलाल

ए. सी सी एजेन्ट

चेतन आयल मिल्स बारां

भगवान महावीर के ५०० वे निर्वाण महोत्सव पर आपका हार्दिक अभिनन्दन करते है. —

फोन १४८ तार : विनोद

**मे० विनोदकुमार एण्ड सन्स**

**बारन ( राजस्थान )**

सम्बन्धित मर्म फोन : ८६

**मे० मन्नालाल रामनाथ सर्राफ**

**बारां (राजस्थान)**

भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण महोत्सव के शुभ अवसर पर

**शुभ कामनाओं सहित।**

**भंवरलाल जानकीलाल चौरसिया**

ग्रेन सीड्स मर्चेन्ट एन्ड कमीशन एजेन्ट

**बारां ( राजस्थान )**

भगवान महावीर के २५०० वे निर्वाण महोत्सव

के अवसर पर

शुभ कामनायें

फोन : २५ तार : जालान

**मैसर्स ताराचन्द जालान**

ग्रेनमर्चेन्ट एवं कमीशन एजेन्ट

प्रताप चौक बारा ( राज० )

शुभकामनाओं सहित

**जैन ट्रेडर्स**

स्टेशन रोड़, बारां

किर्लोस्कर इंजिन एवं पम्पसेट के विक्रेता

शुभ कामनाओं सहित

**किरनकुमार एन्ड कम्पनी**

बारां

सम्ब० फर्म-१. महेन्द्रकुमार मनसुखलाल

बारा

—२. हँसमुखराम पुरूषोत्तमदास

अटरू

भगवान महावीर के २५०० वे

निर्वाण महोत्सव के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाऐं

**रावत ट्रेडिंग कम्पनी**

बारां ( राज० )

अधिकृत विक्रेता—ओरियन्टल पखे

किर्लोस्कर पम्पिग सेट

# शब्द भी वंदना : मौन भी वंदना

—कमलाकर

पी० आर० ओ० कोटा

आंख में रूप है, प्राण मे प्रार्थना,
कीर्तनमय सकल कर्म आराधना।

नीद है शांति-सुख की समाधि गहन,
स्वप्न ही ध्यान है, जागरण धारणा।

जब अहं का चरण पर समर्पण हुआ,
जिन्दगी है सुधा-सिन्धु अवगाहना।

टेरती अनवरत सांस की धड़कनें,
मूंद जपकी गुफा ध्येय रूपाक ना।

देव ही दृष्टिगत सृष्टि के रूप में,
भोग मे भी हुई योग की भावना।

ध्यान में और गहरे दिखाई दिये,
और आभ्यंतरिक हो गई अर्चना।

हाथ मन के जुड़े, पट हृदय के खुले,
शब्द भी वदना: मौन भी वंदना।

# हम अहिंसक हैं, मगर कायर नहीं हैं।

—शर्मन लाल 'सरस'

सत्य की अर्थी सजाई जा रही है।
झूठ इतना हर अधर पर छा गया है।
प्यार को दो क्षण शरण मिलना कठिन है।
हर दिलो मे दम्भ इतना आ गया है।
पुण्य ने करवट बदल ली आज खुद ही—
पाप अब सर्वत्र जय, पाने लगा है।
सभ्यता के शब्द अब शाति न देते
आदमी को आदमी खाने लगा है।

इसलिये महावीर के संदेश द्वारा—
दानवो को अब मनुजता की शकल दे।
पापियो के हनन से सौ बार अच्छा—
हम उन्हें सतमार्ग के पथ पर बदल दें।
दे रही इतिहास की स्याही गवाही—
प्यार का, तलवार, लोहा मानती है।
बल परखने के प्रथम जग जान जाये—
यह धरा महावीर जनना जानती है।

युग भले बारुद की खेती उगाले-
किन्तु उसके पास वह शक्ति नहीं है।
आस्था जब तक अहिंसा मे न होगी—
अणुबमो से शाति हो सकती नही है।
इसलिये विद्वेष की परतें हटा लो।
हम तुम्हारे साथ है, बाहर नही है।
जग हमारे लक्ष्य को दुर्बल न समझे
हम अहिंसक है, मगर कायर नही है।

क्या कहा? उत्कर्ष पर है यह जमाना
कल नही देगी, कभी ऐसी कला है।
रौंद कर छाती क्षितिज की आज मानव
चन्द्रमा से और अब आगे चला है।
किन्तु जब तक साथ ना चारित्र देगा—
ज्ञान अरु विज्ञान कोरा भार होगा!
कर न पाये इन्द्रियो पर जो नियत्रण,
वन्धु भौतिक सुख नरक का द्वार होगा।

# तो सत्य धर्म निष्फल प्रियवर-

—लक्ष्मीचन्द्र 'सरोज'

जो सन्मति का सन्देश विश्व को शान्ति नही दे पाये।
तो सत्य धर्म निष्फल प्रियवर क्यो भला व्यक्ति श्रद्धा लाये?
अरे आहतो का रोदन अब, बे बश कर कष्ट बढाता।
अथक बिलखती आखो से, मोता से अश्रु लुटाता॥
इसीलिये मैं सत्य धर्म के अनुयायी से कहता हूँ—
यदि तुम आत्मा की समानता की प्रीतिन जो दृढ कर पाये
तो सत्य धर्म निष्फल प्रियवर क्यो भला व्यक्ति श्रद्धा लाये?
विश्वधर्म को धरा मनुज जो नही दूसरा अपनाती।
उसी धर्म को-विज्ञ मण्डली छोड दूर है भगजाती॥
इसीलीये मैं आज भटकते धार्मिक जन से कहता हूँ-
ग्रथों का सुख-सार न यदि दैनिक जीवन मे आ पाये-
तो सत्य धर्म निष्फल प्रियवर क्यो भला व्यक्ति श्रद्धा लाये?
तुम्हे धर्म से प्रेम किन्तु जब धर्म-क्रिया ना मैं लेखूं।
तेरो बाह्याकृति पर अपनी धार्मिक प्रतिभा क्यों लेखूं?
इसीलिये मैं आज मचलते धर्म बन्धु से कहता हूँ-
यदि अपनो की ही बात सत्य को नित्य नही जो कर पाये-
तो सत्य धर्म निष्फल प्रियवर क्यो भला व्यक्ति श्रद्धा लाये?
जो प्रतिमा नई त्रिठाकर मन्दिर पर कलश चढाया।
जो पूजा विविध बनाकर भक्तिभाव लेकर गाया॥
इसीलिये मैं आज पिछडते निज समाज से कहता हूँ।
लक्ष्मी का उपयोग विश्व-हित करो, न जो तुम कर पाये-
तो सत्य धर्म निष्फल प्रियवर क्यो भला व्यक्ति श्रद्धा लाये?
माना चीटी को शक्कर दी ओर श्वान को भी रोटी।
कुछ टुकड़े देकर याचक को, यही भावना है खोटी॥
इसीलिये मैं आज बहकते धर्म, बन्धु से कहता हूँ-
अपने जैसी सुविधायें यदि नही सभी को दे पाये-
तो सत्य धर्म निष्फल प्रियवर क्यों भला व्यक्ति श्रद्धा लाये।

कविता—

## "सीमाओं में क्यों अनंत"

—दयाचन्द जैन 'रजनीश'
चौमुखा, बारा

भगवन् !
कहाँ वो मेरी औकात
जो कर सकू बखान
अपनी निस्तब्ध लेखनी से
तुम्हारे गुण-गान, आचार-विचार
और जीवन सचार !
जी मे आता है हर बार यही विचार
बाँधकर सीमाओ मे अनत
क्यो डालते हो 'तुम' दरार।
फिर ! मै ठहरा 'रजनीश'
जो स्वय किसी प्रकाश पुज से
है देदीप्यमान।

और तुम !
आत्म ज्ञाता, दिग्दृष्टा, धर्म प्रणेता,
अहिसा के पुजारी, शीलव्रत धारी,
सत्य के प्रभारी।
अधिक सज्ञाओ से सुशोभित करना भी
होगा अपमान तुम्हारा।
हाँ, किसी से कुछ करने को कहूँगा
तो बस इतना, सफलतम जीवन
के लिये एक कदम बढाना होगा
'महावीर' बनने के लिये।

भगवान महावीर के २५०० वां निर्वाणोत्सव पर शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

# ओम किराना स्टोर

चौमुखा बाजार बारां

बारां (राज०)

अहिंसा के पुजारी महावीर के चरणो में श्रद्धा सुमन सहित :—

शुभ कामनाएं

# शाह नेम जी छीतर मल

बारां (राज०)

किसान माचिस, पहलवान एव शेर छाप बीडी के विक्रेता

On the occassion of lord Mahavir

2500 th Nirvan Mahotswa

**With Best Compliments**

# RATHOR, TRADING CorP.

DHANBAD (Bihar)

'अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष' के आयोजन द्वारा 'संयुक्त राष्ट्र परिषद' महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार दिलवाने के लिये संघर्ष कर रही है, जबकि जैन धर्म में प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ के युग से महिलाओं को मुक्ति का पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त है।

—सम्पादिका

## नारी दीक्षा—

श्री सोहनराज कोठारी

*जिला एव सत्र न्यायाधीश कोटा*

अध्यात्म जगत में तुम पहले व्यक्ति हो
जिसने नारी को पुरुष के समान दिया स्थान
कहा— "यदि वह सकल्प और साहस से यात्रा कर ले
तो वह भी पा सकेगी मोक्ष का वरदान"
रमणी राक्षसी है, वैतरणी है, है अशुचि का भण्डार
इसको झुठलाया, दिलाया उसे जन-जन का सत्कार
धर्मसघ मे प्रवर्जित कर रखा नारी को पास
और उसका सम्मोहन पैदा न कर सका कभी संत्रास
माता की ममता को गुरुत्व की समता में
बदल तुम रहे सदा बेलाग
तुम्हारी दृष्टि में स्त्री-पुरुष का भेद ही नही रहा
तुम बन चुके थे वीतराग।

## स्मरण का महत्व—

तुम बन गये पूरे अस्तित्व जो बोलता नही रहता है मौन
तब भला तुम्हारी पूजा श्लाघा करेगा कौन
स्रष्टा बन गये पर रहा न कभी कर्त्तापन
कृति रही न शेष जब छोड दिया तन
नृत्यकार से अलग होता नही नृत्य
तुम्हारे जीवन से अलग हुआ नही तुम्हारी चेतना का सत्य
पर तुम्हारी ज्योतिर्मय आत्मा ने प्रशस्त कर दी युगों की राह
उत्प्रेरक बनकर उपलब्ध करा सकती जागृत जीवन की चाह
जिसने भी तुम्हारे को स्मरण कर, मांगा जागरण का वरदान
और खोज करने निकला स्वय को
तो आनन्द ही पाया और बन गया भगवान।

# वर्धमान महावीर

—कैलाश मड़बैया
टीकमगढ

भीषण संघर्षों में आकर नीलकंठ से,
जनमानस की पीड़ाओ का,
भौतिक रंग की क्रीडाओ का,
जहर पी गये।
युग परिवर्तक, आत्म चेतना, दिव्य ज्ञान के तत्वान्वेषी,
अपने को ही जीत,
जगत वीर नही-'महावीर' बन गये।
तपती दोपहरी सी जलती मरुस्थली-उस 'कौशाम्बी मे
त्रिशला आंचल-तृषा बुझाने,
'सिद्धार्थ' का सिद्ध अर्थ कर,
सागर पीकर-सजल मेघ से,
मानवता के प्राण बन गये,
निराडम्बर, वीतरागी,
तुम अलोकिक साधना के सार्वभौमिक, संविरामी।
सृष्टि को समता, समन्वय, साधना दे,
जरा जन्म के आवरण से मुक्त होकर,
निर्विकल्पिक-चेतना केत्राग्र बन गये।
सम्यक ज्ञानी-ज्ञान मीमासा किये तुम हृदयंगम,
सम्यक दर्शन-सौम्य दर्शन शुभ विहगम,
सम्यक चरित्र-दूध से धोया धवल आचार दर्शन,
-आध्यात्मक के, हित आत्म चिन्तन।
बस यही निर्वाण को दे चिदानंदी मन्त्र पावन।

तुम क्षितिज के पार तक, उपसर्ग जीते
ज्ञान गंगा कर प्रवाहित, साधना के घट न रीते
मोह-माया, कामिनी-कंचन से जैसे तुम रहे निर्लिप्त,
देवता, साधक, अहिंसक !
शांति, करुणा, अपरिग्रह से मजे हुए निर्विकारी तृप्त ।
विश्व के कल्याण में तुम आदमी को
जीव हित देते गये-ऐसे अमिट सिद्धांत
चौराहे के भटके मनुज को-
ज्योति जैसा दीप्त-शाश्वत 'अनेकांत'
आज युग की बन्दना तुमको समर्पित
वेदना इतनी बढी कि मन हुआ उन्मत्त,
सास का कर्जा प्रगति पथ गढ़ रहा है
आदमी पर आदमियत का तकाजा चढ रहा है ।
और छलते आदमी को, आदमी वेषी,
मर रहे हैं आज अनगिन
देव ·· ··· · ··· शिवकेशी'
और ऐसी विषमता में स्मरण कर,
रो रहा मन ।
पर 'रजत-निर्वाण' पर,
कवि का अमर वन्दन ।
नमन, शत् शत् नमन

**

# प्रतीक्षा-सूर्य की

दिनेशराय द्विवेदी

धर्म;
जो अनेक अनाम सूर्यो के
तपोबल से पैदा होता रहा है,
अज्ञान के गहरे सागर मे
ऊब डूब हो रहा है।
कौन है ?
जो सूर्य की अनुपस्थिति में
उसे बचायेगा ?
कम से कम वे दीप
जिनमे सूर्य की शक्ति सचित है
उन्हे जलाकर ही
सूर्य के उगने की प्रतीक्षा करो
उसे थोडा जीवन-दान दो
सूर्य के आने तक वचा लो।
सूर्य आयेगा
उसे उठा
अपने सीने से लगा लेगा।
जो धर्म,
अन्धकार के सागर मे डूब रहा है
स्थापित कर देगा
उसे फिर
किसी शिखर पर !

# वीर-सन्देश

रचियता—दयाचन्द जैन 'रजनीश'

करो 'वीर' के काम 'वीर' के पद को पा लोगे,
जीवन सफल बना लोगे।

दुनियां मे फैला है घन घोर अन्धेरा,
क्यो तेरे अन्तर मे है तम का डेरा,
बनो सत्य, अहिसा के वरदान,
दुनियां को नाग पाश से मुक्त करा लोगे,
करो वीर के काम·······

जीओ और जीने दो सिद्धान्त 'वीर' ने सिखलाया,
'गाँधी' ने भी अपरिग्रह को समाजवाद है बतलाया,
करो ब्रह्मचर्य व्रत पालन, उज्वल चरित्र बना लोगे,
करो वीर के काम ··· ··

क्या रक्खा है दुनिया मे तेरा और मेरा,
यह दुनियां तो है एक रैन बसेरा,
पा लोगे मोक्ष अगर दुनिया से मोह हटा लोगे,
करो वीर के काम·······

बाँधो मत इन आदर्शो को तस्वीरो मे,
इनका सिर्फ मनन करो जीवन मे,
डालोगे गर दीवारे धर्मो मे खुद अपना विध्वस करा लोगे,
करो वीर के काम·······

# नव युवकों से—

हास्य कवि हजारीलाल जैन, 'काका'

कहना है दो शब्द हमे, अपने इन वीर जवानो से।
जो लालच वश भटक रहे है उन दहेज दीवानो से।।
तृष्णा बढती वृद्धा पन मे, त्याग जवानी करती है।
उसी तपस्या के बल पर ही, टिकी हुई यह धरती है।।
शीश हिमालय तक का रौंदा उसी जवानी ने आकर।
भारत माँ की बेडी काटी, सीने पर गोली खा कर।।
बनकर राम-राज्य ठुकराया अब उनकी सन्तानो ने।
कहना है दो शब्द हमे, अपने इन वीर जवानो ने।।
जब भी तुम डट गये, जिस जगह, विजय श्री ही पाई थी।
एक अगूठे से अर्जुन ने मात तुम्ही से खाई थी।।
जिसके चरण-चन्द्रमा चूमे, क्या दहेज टिक सकता है?
यह दहेज का दानव तुम से दो क्षण मे मिट सकता है।।
तुम्हे कसम है अब मत खेलो, बहिनो के अरमानो से।
कहना है दो शब्द हमे, अपने इन वीर जवानो से।।
पुरखो की इज्जत धो डाली, जरा शर्म नही खाते हो।
बाप बेच देता जितने मे, उतने मे बिक जाते हो।।
बल-पौरुष थक गया कि तुम पर तृष्णा ने अधिकार किया।
सरे-आम राम के वशज, ने बिकना स्वीकार किया।।
सच पूछो तो यह दहेज, पल रहा आज धनवानो से।
कहना है दो शब्द हमे अपने इन वीर जवानो से।।
उठो जवानो! समय आ गया, आगे कदम बढाना है।
यह दहेज अभिशाप बन गया, इसको दूर भगाना है।।
कितनी बहिने हुई विजाति, कितनी फासी लगा चुकी।
कितनी बहिने जहर-पान कर अपना जीवन लुटा चुकी।।
क्यो हत्यारे बनने जाते बहिनो के बलिदानो से।
कहना है दो शब्द हमे अपने इन वीर जवानो से।।
अपने बल का करो भरोसा, पर धन की मत आस करो।
जगह-जगह सम्मेलन कर, इन प्रस्तावो को पास करो।।
जो दहेज मागेगा उसकी शादी मे नही जाऊँगा।
ऐसे हत्यारो के घर पर खाना कभी न खाऊँगा।।
'काका' का कहना मर्दों से, आशा नही जवानो से।
कहना है दो शब्द हमे, अपने इन वीर जवानो से।।

# वीर प्रभु तुम शक्ति दो

विजय 'विभाकर'

वीर प्रभु तुम शक्ति दो,
बन्धन सभी हम काट दे ।
मोह जाल में फँसी,
मन-मीन को निकाल दे ।

किसी का ह्रास ही, ह्रास हमारा न बने ।
किसी का रुदन ही, रुदन हमारा न बने ।
न बने किसी का पाना, सुख हमारा ।
न बने किसी का खोना, दुःख हमारा ।

पराश्रय ही सब दुःखो का मूल है प्रभु,
जिन्दगी मे चुभता विषैला शूल है प्रभू ।
पूर्ण स्वावलम्बी हम बन जाये ।
आश्रित न किसी पर हम रह पाये ।

जीवन में सदा हसते रहे हम ।
कर्त्तव्य-पथ पर बढते रहे हम ।
दीन-दुखियो की सेवा मे प्रभु ।
हर सकट विहँस सहते रहे हम ।

मानवता की रक्षा हित प्रभु,
जीवन सकट मे डाल दें ।
मोह जाल में फँसी,
मन-मीन को निकाल दे ।

# प्रेरणा गीत

—श्री सुन्दरलाल सेठी

बायाँ सुणों तो सही री बहना सुणो तो सही।
महावीर की वाणी ने थे भूल क्यों गई।।

महावीर निर्वाण महोत्सव, आज मनाबा चालो।
पच-पाप से दूर रहो थे, जीव दया ने पालो।।
सोलह सपना देख्या माता ने, जीव घणो हरषायो।
फल पूछ्यो महाराज से, जब वीर जन्म फल पायो।।
बायाँ सुणो तो सही री बहना सुणो तो सही।
महावीर की वाणी ने थे भूल क्यो गई।।

महावीर को जन्म हुयो जब, इन्द्र ने खुशीयाँ मनाई।
देवाँ जब कियो महोत्सव, घर-घर बजी शहनाई।।
सुनी नही उने मात-पिता की, अपनी बात पर अडग्यो।
मात-पिता ने छोड-छाडकर, तप करबा ने कढग्यो।।
बायाँ सुणो तो सही री, बहना सुणो तो सही।
महावीर की वाणी ने थे भूल क्यो गई।।

खूब तपाई कचन काया, ज्ञान हिया मे धरल्यो।
ससार-समुन्दर से पार उतरग्यो, म नचीत्यो सब करल्यो।।
या बाता ने चोखी तरे से, हरदा मे थे छोको।
भुनसारे ही उठता थे, तो महावीर ने ढोको।।
बायाँ सुणो तो सही री बहना सुणो तो सही।
महावीर की वाणी ने थे भूल क्यो गई।।

# महावीर-सन्देश

—शर्मनलाल 'सरस'

( १ )

खीच पाओ तो मधुर व्यवहार से खीचो।
सीच पाओ तो हृदय की धार से सींचो।
तलवार की तो जीत से हर हार अच्छी है,
जीत पाओ तो मनुज को प्यार से जीतो।

( २ )

जब गंध अधिक बढती, तब बाग उजड़ जाता है
आवाज अधिक बढ़ती, तब राग उखड़ जाता है।
हर चीज की सीमा है—फिर भी सही मानो—
जब स्वार्थ अधिक बढ़ता,व्यवहार बिगड़ जाता है।

( ३ )

व्यवहार से हर काम निकल आता है।
होशियार से हर काम सम्भल जाता है।
तुम तो जरा सी बात को रोते हो यार—
प्यार से पाषाण पिघल जाता है।

# म हा वी र

तुम सरल शुद्ध,
तुम भावुकता-सरि से निर्मल ज्ञानोदय से
पावन प्रबुद्ध

पशुता का प्राबल्य बना जब,
मानवता का भाग्य
और आत्म-सौन्दर्य सत्य, शिव
क्षुब्ध, रूद्ध सन्मार्ग
लिए अनाचरो वाहन
स्वार्थ हुआ फलितार्थ
त्राहि त्राहि सर्वत्र मुखर था—
कोलाहल का राग।

लिए क्षमा का सम्बल कर मे
मन मे सत् का प्यार
नयनो मे सम–भाव, हृदय
शुद्ध अहिंसा सार
बडे साधना के कठोर-तम
पथ पर हे। रणधीर
फ़लो मे बन मलय सुवासित
शूसौं मे महावीर

सत्य अहिंसा की वाणी के
कवि, गायक अनिरुद्ध
तुम वीतराग; तुम मुक्त, काम
कैवल्य-धाम तुम शुद्ध बुद्ध
हे। सरल शुद्ध
तुम श्रेयपय-ध्विनि के प्रतिपल
पावन प्रवाह अविकल अरुद्ध
तुम सरल शुद्ध ॥

—अनूपचन्द जैन

## मुक्तक :—

सवैया—

—सुन्दरलाल सेठी

१

जो जैन है वह दुखी नहीं है और जो दुखी है वह जैन नही है।
दुखी और जैन मे महा विलोमताई है।
वीतराग देव पाय के हू कष्ट नाही मिटो,
तो बताओ कष्ट नाश हेतु कौन सी दवाई है ?
पिता अरिहन्त, देव सिद्ध, मातृ जैन वाणी,
यथा ख्यात चारित्र जैस भाई है।
दान मे न हीन, सदा चैन से निमग्न,
ऐसी सुन्दर जैन की अपार प्रभुताई है ॥

२

नित उठ मन्दिर जावो थे तो, प्रभुजी से ध्यान लगावो।
माला फेरो अरिहंत नाम की, जीवन सफल बनाओ ॥
घणा आलसी बणग्या थे तो, घट्टी से ना हाथ लगावो।
बिजली की चक्कियाँ के भरोसे, चूल्हा ने वास करावो ॥
धर्म-कर्म को ध्यान न राखो, लोगाँ ने राते रोटी मेलो।
ब्यालू करवाने था भी बिसरग्या, कस्यो पकड्यो है गेलो ॥
अब तो सुधारो थाका घर ने, शुद्ध भोजन की आदत डालो।
वीर वाणी पर करो आस्था, सत्य बचन ने बोलो

३

रोज मन्दिर जायँ, लेकिन पाप न छोडे।
झूठ बोले रोज, लेकिन जाप न छोड़े ॥
नित्य दवा खायें, मगर परहेज नही कुछ।
ठीक हो जावेंगे, बोलो आप ही बोलें ॥

# सत्य बोध

—प्रीतमचन्द बडजात्या, बारी

सोच रहा परिणति जीवन की सागर के उस पार
जहाँ मिलन धरती का हो क्या है दूर क्षितिज के पार
इस दावानल से परे जा रहा देखो वह नभ का पछी
लौट-लौट आता है लेकिन विचरण करता वो पछी

यह भू-लोक मधुर विष सम फिर भी अति सुख का अनुभव
यहाँ कैद हो रहता भवरा अति मदोन्मत्त ही फूलो पर
कितना जीवन भी क्षण भगुर, सोच नही पा रहा मनुज
यह सौरभ धरती का लेने, बार-बार काटो पर छिदता बेबस

तो असीम सुख कहा मिले, ना भू पर ना नभ पर
यह मन की आकुलता की कौन मिल सकता सम्भव
तेरे अन्तर की सुख शान्ति को क्यो खोज रहा पागल मन
बैठ हृदय मे स्वय ढूँढ शाश्वत चिर सुख साधन !

# दोषी कौन ?

—निर्मलकुमार 'द्रोही'

एक हमारे पूर्वज, पहुँचे गुरु के पास ।
नैनो मे आँसू लिये और चेहरा लिये उदास ।।
बोले मै हूँ गुनहगार कैसे छुटकारा पाऊँ ?
शुभ कर्मो का उदय होय, तो मै भी मुक्ति पाऊँ ।।

गुरु बोले तब, यदि तुम अपने मन मे इच्छा कर लो ।
बुरे कर्म न होने पाये, कडा नियन्त्रण कर लो ।।
वो बोले प्रभु, कैसे होगा, काम ये बडा कठिन है ।
कैसे करूँ नियन्त्रण, इस पर, मन ये मेरा मलिन है ।।

अच्छा ऐसा करो, एक थैला तुम बनवा लो ।
काम करो जब भी गलत, उसमे इक ककर डालो ।।
बोले गुरू, तुम जब-जब भी उस थैले को देखोगे ।
कितने बुरे कर्म किये है, अपने मन मे सोचोगे ।।

उसका पश्चाताप, तुम्हारे मन को धो डालेगा ।
पावन मन इन कर्मों से, खुद ही छुटकारा पा लेगा ।।
खुश हो लौटे घर को वे, थैला इक तुरत बनाया ।
डालू गा ककर मै फौरन, सोच गले से लटकाया ।।

देख पडोसी को वो यूँ, लगे सोचने मन मे ।
ये भी तो पापी है, क्यो न गिनूँ पाप इसके मै ।।
फिर क्या था भटसे, उनने थैला इक और बनाया ।
नाम पडोसी का उस पर, पक्के रग से लिखवाया ।।

खुद का थैला तो बन्द हुआ, बस ध्यान पडौसी का रहता ।
जब भी उसने कुकर्म किया, झट थैले मे ककर पड़ता ।।
जब भी उन थैलो को देखा, मन मे सन्तोष ये आया ।
मै तो खुद मन का सच्चा हूँ, बस दोष पड़ौसी का पाया ।।

उन्ही की परम्परा को तो हम अभी तक निभा रहे है ।
अपने दोषो को हम, दूजो के सिर पर लगा रहे है ।।
सदियो से जो होता आया, हम अब उसको कैसे छोड़ें ।
इस सनातन परपरा को कैसे तोडे, क्यूँ कर तोड़ें ।।
आप ही सोचे !

और सोच कर बतलाये कि दोषी कौन ? मै या वो ।।

★★

# महावीर वाणी

सकलन कर्ता—बाबूलाल जैन, एडवोकेट

१—धर्म मे दृढ रहने का आदेश इसलिए है कि इस जीव को चार वस्तुओ का मिलना कठिन है :— १ मनुष्यत्व २ धर्म श्रवण ३. धर्म श्रद्धा एवं ४. धर्माचरण।

२—आत्मा शाश्वत पदार्थ है। वह अनादिकाल से अगणित भव परम्परा मे भ्रमण करती आ रही है। फिर भी वह अपने स्वरूप मे स्थिर है।

३—इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त, असीम है ज्यो-ज्यों प्राप्ति होती जाती है त्यो-त्यो इच्छा-शक्ति बढती चली जाती है, इसलिए महावीर ने आत्म-निग्रह का उपदेश दिया है।

४—जो निष्काम भावना से प्रभावित होकर सयम की आराधना करेगा वह संसार में उत्तम भिक्षु का गौरवमय पद प्राप्त कर लेगा।

५—निष्काम भावना से जो धर्माचरण किया जाता है उसका फल असख्यात गुना अधिक होता है।

६—सच्चा साधक वह है जो अपनी जीवन चर्या को अपनी साधना के अनुकूल बनाकर अपने महान और उच्चत्तम ध्येय की ओर अग्रसर होता जाता है।

७—भोगो का परित्याग करना ही दु ख से छुटकारा पाने का सर्वोत्तम उपाय है।

८—इन्द्रियो की आधीनता त्यागो। इन्द्रियो को अपने आधीन बनाओ।

****

भगवान महावीर के २५०० वाँ निर्वाण महोत्सव के

## शुभ कामनाओं सहित

हाजमे की विश्वासनीय टिकियाँ हमेशा अपने पास रखिये ।

# जैना फार्मेसी नई दिल्ली

स्टाकिस्ट:— जैन मेडिकल स्टोर्स, बारां

---

भगवान महावीर के २५०० वाँ निर्वाण महोत्सव के शुभ अवसर पर

# हार्दिक शुभ कामनाएं

# मोहम्मद इसहाक-मोहम्मद इब्राहीम

रुपया छाप एवं घमला छाप बीड़ा के निर्माता

बारां ( राज० )
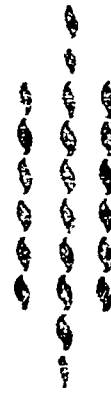
शुभकामनाओं सहित—

**सत्यनारायण महेन्द्रकुमार कसेरा**

बारां

सभी प्रकार के स्टील एवं पीतल के बर्तन के विक्रेता

शुभकामनाओं सहित—

तार :
फोन : २४०८

**शाह एण्ड कम्पनी**

बारां

मुख्य कार्यालय—
नई धानमण्डी, कोटा

ग्रेन मर्चेन्ट एण्ड कमीशन एजेन्ट

शुभकामनाओं सहित—

फोन : १७१

**दी ग्रेट इण्डिया ट्राँसपोर्ट कम्पनी**

हॉस्पीटल रोड़

बारां

शुभकामनाओं सहित—

फोन : १७ P.P. तार :

**अमोलकचन्द अजयकुमार**

बारां

ग्रेन मर्चेन्ट एन्ड

# प्रेरणा के स्त्रोत

प्रेरणा के स्त्रोत

# मुनि श्री १०८ श्री सुदर्शन सागर जी महाराज

## जीवन–परिचय

—प्रस्तुत कर्त्री–श्रीमती माणक सेठी

हे योगी ! निश्चय से तू आत्मा को अमूर्ति, ज्ञानमय, परमानन्द, नित्य निरजन जान । न तेरा कोई मित्र है न तेरा कोई शत्रु है, न तेरा स्वामी है, न तेरा सेवक । तुमने अनन्तकाल चतुर्गति मे भ्रमण किया । ऐसी कोई पर्याय नही जिसमे तुमने जन्म नही लिया । जिस पर्याय मे तू गया, उसे ही अपनी मानकर मस्त हो गया । यह तेरी भूल अनादिकाल से चली आरही है । तेरी कालाब्धि पूर्ण हुई तब भरत खड आर्य क्षेत्र के राजस्थान के उत्तम जैन कुल मे जन्म लिया । श्री भगवान का शरण लिया । पूज्य आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज से सुजानगढ मे दिगम्बरी दीक्षा ली सुदर्शन सागर पर्याय का नाम रखा । दीर्घ आयु पायी, नीरोग शरीर पाया, इन्द्रियो की पूर्णता पायी ।

"हे प्रभु ! कोई अभाव नही रहा । सिर्फ तीन बातो का अभाव रहा, प्रथम तो सम्यक् दृष्टि बनू, दूसरा समाधिकरण करू, तीसरा ऊर्ध्वगमन करू । इनमे मैं आपकी सहायता चाहता हूँ । आपकी मदद से पुरुषार्थ मे सहायता मिलती है । पुरुषार्थ मे ध्यान होता है और ध्यान मे ही कर्मो का क्षय होता है कर्मो का क्षय होने पर ही ससार से छुटकारा पा सकता हूँ । हे प्रभु ! मै सिद्ध आत्माओं के देश, सिद्ध-पुरी मे ही अखण्ड निवास करना चाहता हूँ ।"

बारम्बार इस भावना का चितवन करने वाले मुनि श्री सुदर्शन सागर जी का जीवन-परिचय देना अधिक उचित तो नही लगता क्योकि मनुष्य का परिचय उनका जन्म एवं जीवन की घटनाओं से नही वरन् उसके कृतित्व से मिलता है । किन्तु फिर भी हमारी युवा पीढी मुनि श्री के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर सकती है । एक सामान्य परिवार मे जन्म लिया । परिस्थितियों से स्वयं को

निर्लिप्त मानते रहे । सत्सग मिलने पर गृह त्याग कर दीक्षा धारण करली । कहने का तात्पर्य यह है कि यदि मन मे इच्छा है तो निमित्त तो क्षणमात्र मे जुट जाते है ।

वि० स० १८५५ मे कोटा राज्य के इन्द्रगढ जिले के ककरावदा ग्राम मे जन्म लिया । पिता का नाम श्री विशनादास जी एव माता का नाम धन्नाबाई जैन बघेरवाल गोत्र ठग था । बचपन का नाम कवरलाल था । १।। वर्ष की अल्पायु मे ही पिता की मृत्यु हो जाने के कारण व्यवसाय मे व्यस्त होना पडा । आपका विवाह केशवरायपाटन की श्रीमती सुन्दरबाई से हुआ । उनसे आपको १ पुत्री एव दो पुत्र, तीन सन्ताने हुई । परिस्थितियो के वशीभूत होकर ककरावदा छोडकर बारा (कोटा) मे बस गये ।

बचपन से ही भगवान जिनेन्द्रदेव के प्रति पूर्ण भक्ति-भावना आपकी रग-रग में व्याप्त थी । आप बडी तल्लीनता से, ताडव नृत्य के साथ पूजन किया करते थे । आपने अनेक वार सम्मेद-शिखरजी यात्रा , पचकल्याणक महोत्सवो एव वेदी प्रतिष्ठाओ मे ताडव नृत्य किया ।

सन् १९६० मे गृह-परित्याग कर कोटा में आचार्य शिवसागर जी महाराज से ब्रह्मचर्य व्रत लिया । बीजोलिया मे कुछ समय पश्चात आचार्य श्री धर्ममाल के समक्ष पाचवी प्रतिमा धारण की । आचार्य श्री सन्मति सागर जी से भागलपुर-चपापुरी मे ७ वी प्रतिमा धारण की । केशलोच शुरू कर दिया । निरन्तर तत्वाभ्यास मे रत रहे । त्याग की सीढियो पर क्रमानुसार चढते हुए वीर स० २४९५ मे बासवाडा मे घॉटोर के पचकल्याणक महोत्सव मे मुनि श्री जयसागर जी से वैशाख सुदी तीज को क्षुल्लक दीक्षा ली । तत्पश्चात् मुनि श्री विद्यानन्द जी एव मुनि श्री ज्ञानभूषण जी के साथ इन्दौर मे चातुर्मास किया । अजमेर मे आचार्य श्री धर्मसागर जी से पुन क्षुल्लक दीक्षा ली, पर्याय का नाम सुदर्शन सागर रखा गया । इन्ही के सघ मे रहकर लाडनूँ मे चातुर्मास किमा । वहा से सघ सुजानगढ आया, जहॉ पर आचार्य श्री दयासागर जी का परलोक गमन हो गया था । तभी क्षुल्लक श्री सुदर्शन सागर जी को बीमारी ने घेर लिया । दस दिन तक आहार त्याग दिया ।

मगसर सुदी प्रतिपदा वीर स० २३९८ को सुजानगढ नसियॉ मे, प्रभातकाल मे, ५००० जैनियो के समक्ष पण्डित सुजानमल जी बाल ब्रह्मचारी से मुनि दीक्षा ली । दीक्षा के वाद १५ दिन तक निराहार रहे ।

सुजानगढ से विहार कर सीकर मे चातुर्मास किया । वहा से सघ सहित जयपुर, अलवर, तिजारा होते हुये २० मार्च १९७३ को ज्वर तेज हो जाने के कारण सब वस्तुओ का त्याग कर, साय ७ वजे सल्लेखना व्रत धारण कर, आत्मा मे लीन हो गये । रात्रि के १-१५ बजे देवलोक सिधार ३ अप्रेल को समन्तभद्र विद्यालय के प्रागण मे दाह सस्कार किया गया ।

बारा के इस देदीप्यमान नक्षत्र ने स्वय की आत्मा का उद्धार तो किया ही, नई पीढी के समक्ष एक उज्ज्वल आदर्श रखा । श्रमण-सस्कृति की मुनि-परम्परा का पालन करते हुए आत्मा का कल्याण किया । हम सब की ओर से उस महान आत्मा को विनम्र श्रद्धाजलि ।

**
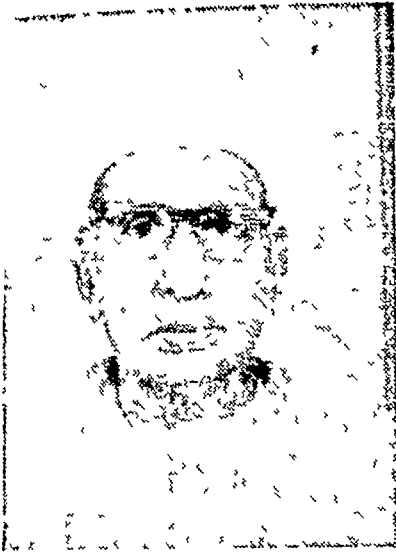
# श्री हजारीलाल बज :-

## एक परिचय

जन्म सबत्—१६६०
जन्म स्थान—बारा जिला कोटा
पिता का नाम—श्री हीरालाल जी बज

अत्यन्त साधारण आर्थिक स्थिति वाले दिगम्बर जैन परिवार में जन्म हुआ। २॥ वर्ष की छोटी सी उम्र मे ही मा का स्वर्गवास हो जाने के कारण ननिहाल मे ही आपका पालन-पोषण हुआ। दुर्भाग्यवश पिता के व्यापार मे भी लगातार हानि होती रही। मुसीबतो ने भी पीछा नही छोडा। आर्थिक परिस्थिति के वशीभूत होकर कक्षा तीसरी तक ही अध्ययन कर सके। ननिहाल वालो की सहायता से पुन कारोबार जमाया। १६ वर्ष की अल्पायु मे ही पिता का भी देहान्त हो गया। सारा भार आपके ऊपर आ पडा। सबत् १७७८ मे आपका विवाह हुआ। धीरे धीरे व्यवसाय उन्नति करता गया। छोटे से व्यवसाय से प्रारम्भ करके अपनी ईमानदारी एव सत्यनिष्ठा के कारण आज आप प्रसिद्ध व्यवसायी बन चुके है। छोटे से व्यवसाय एव तग परिस्थितियो मे भी अपनी आय का एक नियमित भाग आप दान स्वरूप निकालते रहे है। चालीस वर्ष पूर्व जैन औषधालय की स्थापना करके उसके सचालन मे सक्रीय आर्थिक सहयोग देकर उक्त सस्था को जीवित व कार्यरत रखने मे आपका पूर्ण योगदान इसका ज्वलन्त उदाहरण है। आपकी योग्यता एव भावना की पवित्रता नई पीढी के लिए एक चुनौति है।

आप शुरू से ही समाज के प्रति समर्पित रहे है। कर्मठता, व्यवहार, कुशलता, कार्य-क्षमता आप मे कूट कूट कर भरी हुई है। आपने अपने जीवन-काल मे जैन-मित्र-मन्डली के उप मन्त्री पद पर रहकर कुरीति निवारणार्थ सघर्ष किया है। कन्या-विक्री, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, आदि कुरीतियो को मिटाने मे आपने शासन को बाध्य किया। वर्तमान मे भी आप दहेज प्रथा को समूल नष्ट करने के लिए प्रयत्नशील है। खानपुर (चादखेडी) अतिशय क्षेत्र की व्यवस्था का भार जब से आपको दिया गया, आप दिन रात क्षैत्र की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहे। स्वाध्याय भवन, कमरो का निर्माण, मदिर का मकराने का फर्श, समवशरण की रचना के लिए राशि का एकत्रीकरण आदि आपकी कार्य-क्षमता के उदाहरण है। इसीलिए खानपुर मेले में उपस्थित जन समुदाय ने आपको 'तीर्थ-भक्त' की उपाधि से सम्मानित किया है।

भगवान महावीर के २५०० वे निर्वाण महोत्सव के शुभ अवसर पर हम उनके दीर्घ-जीवन की कामना करते है एव आशा करते है कि समाज को हमेशा उनकी सेवाओ का लाभ मिलता रहेगा।
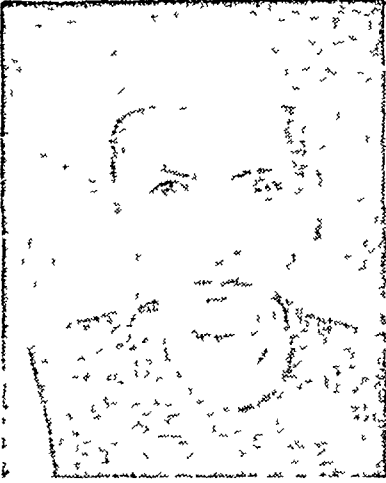
# जीवन-परिचय

—श्री ताराचन्द जैन

| | | |
|---|---|---|
| निवासी | — | बारा (राज०) |
| पिता का नाम | — | श्री त्रिभुबनदास जी जैन |
| जन्म | — | स० १६५८ |

सौराष्ट्र के एक छोटे से गॉव के स्थानक वासी जैन परिवार मे आपका जन्म हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा राजकोट मे हुई। किशोरावस्था की देहली पर कदम रखते ही माता का साया हमेशा के लिये उठ गया। पिता के साथ भूतपूर्व कोटा राज्यान्तर्गत तहसील मागरोल मे व्यवसाय मे प्रवृत हुये। कुछ ही वर्षों के पश्चात आपने बारा नगर मे कपडे की दूकान स्थापित करके व्यवहारिक एवं व्यावसायिक कुशलता से अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ करली।

दीर्घकाल से इस प्रदेश मे स्थायो रूप से बस जाने के कारण आपने ज्ञानोपार्जन कर उच्चस्तरीय हिंदी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया।

धर्म कार्य मे आपकी अभिरूचि पर्याप्त है। जैन दर्शन के मूल ग्र थ प्राकृत (अर्ध मागधी) मे होने पर भी आप उसके भावार्थ को सस्कृत तथा हिंदी मे समझाने मे निपुण है।

जैन समाज की एकता के आप पूर्ण रूपेण हिमायती हैं। दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी मन्दिर मार्गी आदि समस्त जैन सम्प्रदायो को एक मन्च पर लाने का श्रेय आप ही को है। धार्मिक त्यौहारो को सम्मिलित रूप से मनाने की प्रवृति मे आपका पूर्ण रूप स सहयोग रहा है। धामिक एव सामाजिक कार्यो मे आपने यथा शक्ति सहयोग देकर एव समाज के नवयुवको को नव जागरण का सन्देश देकर अहर्निश समाज की बहुमुखी प्रगति की अभिलाषा भी आप मे तीव्रतर है।

उत्तरावस्था के कारण शरीर पूरा साथ न देने पर भा आप इस समय श्री श्वेताम्बर जैन सघ के अध्यक्ष है। वस्त्र व्यापार सघ बारा के अध्यक्ष पद का भार भी आप पूर्ण कुशलता से निर्वाह कर रहे है।

भगवान महावीर के २५०० वे निर्वाण वर्ष के अवसर पर हम उनके दीर्घ जीवन की कामना के साथ ही हम यह भी आशा करते है कि धार्मिक एव सामाजिक कल्याण के कार्यो मे हमे हमेशा उनका मार्ग दर्शन प्राप्त होता रहेगा।

# श्री शिवलाल भाई

# जीवन परिचय
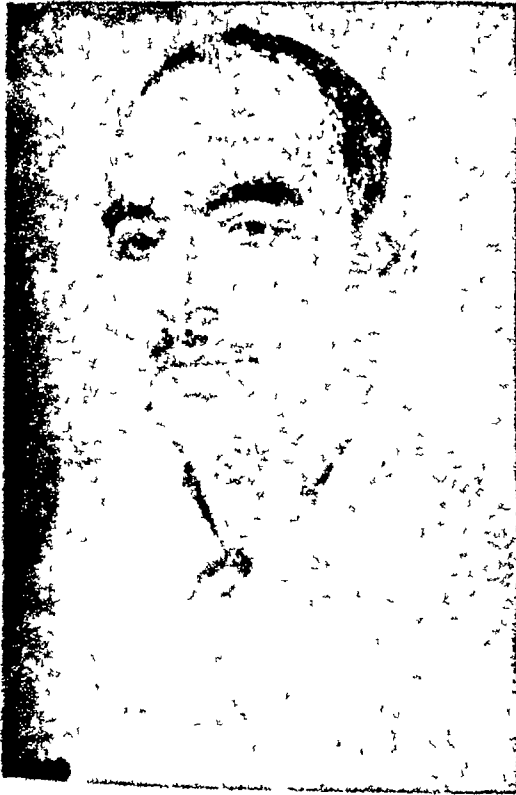
भगवान महावीर का २५०० वा निर्वाण महोत्सव सिर्फ भारत में ही नही वरन् समूचे विश्व मे अत्यन्त उत्साह से मनाया जारहा है। बारां नगर मे भी "भगवान महावीर २५०० वा निर्वाण महोत्सव समिति" के तत्वावधान मे पूरे वर्ष में विभिन्न कार्यक्रमो के भव्य आयोजन किये जा चुके हैं एवं कियेजारहे है। इस समिति कोअध्यक्षता का गुरुत्तर भार श्री शिवलाल भाई को स्थानीय जैन समाज द्वारा सर्वसम्मति से सौंपा गया। अपने व्यावसायिक कार्यों मे अत्यधिक व्यस्त रहते हुये भी अपने दायित्व को जिस निष्ठा, उत्साह एव परिश्रम से वहन कर रहे है, यह बात स्थानीय जैन समाज ही नही वरन् बारा के जन-जन के हृदय में आपके प्रति श्रद्धा उत्पन्न करती है।

श्री शिवलाल भाई मात्र जैन समाज के हितार्थ ही नही वरन् बारा नगर के सामाजिक विकास में भी अमूल्य सहयोग देते रहे है। आप सार्वजनिक धर्मादा संस्था के कई वर्षों तक अध्यक्ष रहे है। आपके कार्यकाल में धर्मादा संस्था भवन मे डिस्पेन्सरी खोली गई। सरकारी अस्पताल के सामने एक विशाल धर्मशाला बनवाई गई। सस्कृत महाविद्यालय के अध्यक्ष के रूप में एक विशाल छात्रावास का निर्माण लगभग २५०००) रु० की लागत से करवाया।

स्थानीय वर्द्धमान स्थानकवासी श्वेताम्बर जैन श्रावक संघ का उपासना गृह 'पारसी जी' की बगीची' भी आपके प्रयत्नो से क्रय की गई। समीपस्थ भूमि मे महावीर कालोनी के नाम से एक कालोनी का निर्माण भी आपकी कार्यकुशलता के कारण पूर्ण हो सका।

इस प्रकार विभिन्न संस्थाओ के अध्यक्ष के रूप मे शिवलाल भाई ने बारां नगर एवं जैन समाज की जो सेवाऐं की उसके कारण बारा का प्रत्येक नागरिक श्री शिवलाल भाई को सम्मानपूर्ण दृष्टि से देखता है।

**श्री निर्मलकुमार सेठी**

## जीवन परिचय

साधारण जैन परिवार मे जन्म लिया। दुर्भाग्य से जन्म के कुछ समय बाद ही मातृ-स्नेह से वञ्चित हो गये। लेकिन श्रीमती सोसरबाई धर्मपत्नी श्री भवरलालजी सेठी के अतुल स्नेह एव असीम ममता के कारण उन्हे कभी माँ का अभाव महसूस नही हुआ। उन्ही की प्रेरणा एव निर्देशन मे इनकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा सम्पन्न हुई। उनके धार्मिक एव सामाजिक उत्थान से परिपूर्ण विचारो का श्री सेठी पर अमिट प्रभाव पडा। भौतिक शास्त्र विषय मे एम. एस-सी प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण कर कुछ समय तक प्राध्यापक पद पर कार्य किया। सम्प्रति यूनिवर्सल केबल्स के सेल्स इन्जीनियर पद पर कार्य कर रहे है। 'स्मारिका' प्रकाशन के लिये आपके प्रयत्न सराहनीय है। सामाजिक कुरीतियो के प्रति सघर्ष प्रारम्भ से ही श्री सेठी की विशेषता रही है। जैन सिद्धान्तो का जीवन मे परिपालन करने वाले, सादगी की प्रतिमूर्ति सेठी का व्यक्तित्व नवयुवको के लिये प्रेरणादायक है।

✽ ✽

# श्री महावीर सेठी

## जीवन परिचय

जन्म तिथि— १६ जनवरी १६५३

जन्म स्थान— बारां ( जिला कोटा )

शिक्षा— बी ई. आनर्स (पिलानी) योग्यतासूची में चतुर्थ स्थान

संप्रति—श्रीराम केमिकल्स इंडस्ट्रीज (डी. सी. एम.) कोटा में इंडस्ट्रीयल इन्जीनियरिंग डिपार्टमेंट में इंजीनियर

एक साधारण परिवार मे जन्म लेने वाले श्री महावीर सेठी पर सादा जीवन उच्च विचार वाली कहावत पूर्णतया चरितार्थ होती है। आप हिन्दी एवं अंग्रेजी के कुशल लेखक एवं वक्ता है। समाज की पुरानी परम्पराओ के आधुनिकी करण मे आपकी गहन रुचि है। प्रतिपल जीवन मे सफलता के लिये संघर्ष रत रहने की प्रेरणा आपने अपने गुरुओ से पाई है।

निर्वाण महोत्सव के शुभ अवसर पर हम कामना करते हैं कि समाज का यह नवोदित नक्षत्र निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर होता रहे।

# श्री प्रेमचन्द बिलाला आत्मज श्री चन्दालालजी बिलाला

## जीवन परिचय

जन्म— २८ जुलाई सन् १६४०

जन्म स्थान— बारां जिला कोटा ( राज० )

शिक्षा— मेट्रिक बारां से, बी. काम., एम. काम., एल-एल बी. एवं बैंक की प्रतियोगी परीक्षायें कोटा से

संप्रत्ति—एजेन्ट, बैंक आफ बड़ौदा, गलिया कोट (राज०)

अत्यन्त शोचनीय, आर्थिक स्थिति वाले परिवार में जन्म लेकर अपने परिश्रम एव लगन स व्यक्ति किस उच्च स्थान को प्राप्त कर सकता है, इसका ज्वलन्त उदाहरण हमे श्री प्रेमचन्द बिलाला के जीवन से मिलता है। प्रेम, सेवा, सहयोग, सहिष्णुता, नम्रता और सबसे बढ़कर लक्ष्य प्राप्ति के लिये उत्कृष्ट परिश्रम इन सबने मिलकर आज उन्हें इस महत्वपूर्ण पद पर पहुंचाया है।

# बाराँ नगर के प्रमुख जैन संस्थानों का परिचय

(श्री सुन्दरलाल जी-सेठी के सग्रह के आधार पर )

**प्रस्तुत कर्त्ता—रतनकुमार जैन, 'ब्रज'**

चम्बल नदी की चार प्रमुख सहायक नदियो के मध्य स्थित हाडौती क्षेत्र का प्रमुख ऐतिहासिक एव व्यापारिक केन्द्र बारा, राजस्थान प्रान्त की प्रमुख अनाज मण्डियो मे एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह नगर १४वी शताब्दी मे इर्द-गिर्द के बारह पुरो से मिलकर बना, अत इसका नाम बारॉ पडा।

बारा नगर मे प्रारम्भ से ही जैन धर्म का प्रभुत्व रहा। इसके आस-पास चहुँ ओर प्राचीन जैन मूर्त्तियो का पाया जाना इसका ठास प्रमाण है। बाहुल्य से प्राप्त,उच्चत्तम कला से मण्डित इन जैन मूर्त्तियो पर क्षेत्रीय समाज का ध्यान समय पर न जाने से ये काफी मात्रा मे बाहर लेजाई जाकर विक्रयभी की जा चुकी हे। अभी इस क्षेत्र मे अनेक मूर्त्तिया जमीन के गर्भ मे दबी हुई है, जिनकी ओर समाज एव पुरातत्व विभाग का ध्यान देना अत्यावश्यक है।

## यहां के प्रमुख जैन संस्थान

### श्री दिगम्बर जैन नसिया—

यह बारा के पूर्व मे स्थित है। यहाँ की अनेक प्राचीन प्रतिमाओं मे से मुख्य दो—श्री शान्तिनाथ एव श्री नेमीनाथ भगवान की प्रतिमाये प्रमुख रूप से दर्शनीय है। श्री शान्तिनाथ
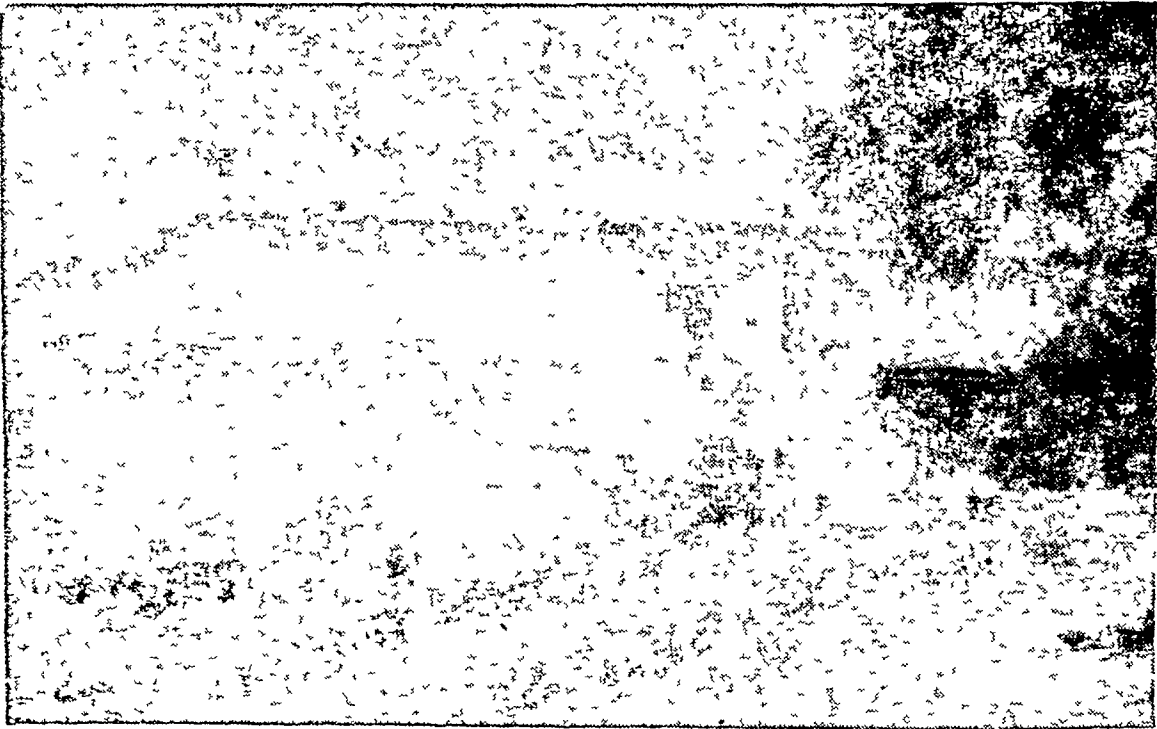
भगवान की खडगासन प्रतिमा ७ फीट ऊँची और श्री नेमीनाथ भगवान की ५ फीट ऊँची है जो

पास ही स्थित रामगढ की पहाडी पर से लाई गई है और अत्यन्त मनोहारी है। नसिया के पृष्ठ भाग मे मुनि श्री कुन्द कुन्द स्वामी के चरणो का एक चबूतरा भी स्थित है, जा उनके यहाँ से समाधि मरण किये जाने का दिग्दर्शन कराता है। यही पर श्री नेमीनाथ भगवान की छतरी के छज्जे पर श्री कुन्द कुन्द स्वामी की प्रशस्ति भी लिखी हुई है।

**श्री दिगम्बर जैन संयुक्त मन्दिर—**

१७वी शताब्दी मे निर्मित अनेक प्राचीन एव नव-निर्मित मनोज्ञ प्रतिमाओ से मण्डित यह मन्दिर लगभग नगर के मध्य मे स्थित है। मन्दिर मे अनेक नयनाभिराम जैन चित्र बने हुए है।

**श्री पद्मप्रभु दिगम्बर जैन मन्दिर—**

स० १६५६ मे जैन अग्रवाल समाज के सौजन्य से यह निर्मित हुआ। इसमे श्री पार्श्वनाथ भगवान की विशाल पद्मासन प्रतिमा है।

**श्री दिगम्बर जैन चैत्यालय—**

सर्राफा बाजार मे स्थित इस चैत्यालय का निर्माण श्री श्रीनाथ जी अग्रवाल ने सन् १६६१ मे स्थानीय समाज के सहयोग से पच कल्याणक प्रतिष्ठा कराकर किया। जिसमें श्री १००८ आदिनाथ भगवान की प्रतिमा विराजित है।

**श्री श्वेताम्बर जैन मन्दिर—**

नगर के उत्तरी अचल मे स्थित इस मन्दिर का निर्माण सेठ साहब दीवान बहादुर श्री केसरीसिहजी (दानमलजी वाले) कोटा के सहयोग से हुआ। इसमे १००८ भगवान बलभद्र स्वामी एव चन्दा प्रभु भगवान की प्रतिमाये विराजित है।

**श्री स्थानक वासी उपासरा—**

यह नगर के उत्तर पश्चिम मे स्थित है जिसमें साधु-साध्वियो के ठहरने की समुचित व्यवस्था है।

**श्री महावीर भवन—**

कुछ ही वर्ष पूर्व इस भवन का निर्माण कराकर स्थानीय श्वेताम्बर समाज ने इसके पृष्ठ भाग में एक जैन कालोनी का भी निर्माण किया है जो आपसी सहयोग एवं सह जाति सौहार्द का सुन्दर उदाहरण है।

**श्री महावीर जैन औषधालय—**

लगभग ४० वर्ष से सेवा रत औषधालय के भवन का निर्माण दिगम्बर जैन समाज द्वारा कुछ वर्षों पूर्व किया गया। औषधालय द्वारा निरन्तर रोगियों की निःशुल्क सेवा की जा रही है।

**श्री दिगम्बर जैन नोहरा—**

सयुक्त (जोडले) मन्दिर के पीछे समाज का एक नोहरा भी है। जो यहाँ का सबसे विशाल नोहरा है जिसमे लगभग २,००० व्यक्तियों के बैठने की सुविधा के साथ-साथ प्रकार की भी सुविधाएँ है।

सभी जैन मन्दिरो में प्राचीन ग्रन्थो का संग्रह प्रचुर मात्रा में है,

# हाड़ौती अंचल के प्रमुख अतिशय क्षेत्र

—बाबूलाल जैन
बी काम

राजस्थान के कोटा, बूदी एव झालावाड क्षेत्र हाडौती के नाम से अभिहित किये जाते हैं। अति प्राचीन काल से ही यह प्रदेश जैन धर्म का केन्द्र रहा है। इस प्रदेश मे अति प्राचीन जैन प्रतिमाएँ पाई गई है जो कि विभिन्न कलात्मक मदिरो मे प्रतिष्ठित की गई है। ये मन्दिर जैन स्थापत्य कला के अद्वितीय नमूने है। झलरापाटन का शातिनाथ जी का मन्दिर, चादखेडी (खानपुर) अतिशय क्षेत्र एव केशोरायपाटन का मुनिसुव्रतनाथ मदिर अतिशय क्षेत्र होने के साथसाथ कलात्मकता के कारण विगत सहस्त्रो वर्षो से जन जन के आकर्षण के केन्द्र बने हुए है।

## दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र—चांदखेड़ी—

प्रकृति की शात, सौम्य सुषमा की गोद मे बसा हुआ यह क्षेत्र अपने अतुल वीतराग वैभव को चारो और विकीर्ण करता हुआ जन मानस को अपनी ओर आकर्षित करता है। इस मन्दिर की रचना वास्तुकलाविदो को भी आश्चर्य मे डाल देती है। मन्दिर के भूगर्भ मे एक विशाल तल प्रकोष्ठ है, जिसमे सवत् ५१२ मे निर्मित्त आदिनाथ भगवान की, लाल पाषाण की, सवा छ फीट ऊची अवगाहना की पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। भगवान आदिनाथ की सम्पूर्ण वीतरागता मानो पुञ्जल पाषाण मे साकार हो उठी है निकट ही पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति है। आसपास मे चद्रप्रभु एव सभवनाथ जी की प्रतिमाए है। बाहरी चौक मे सहस्त्रकूट चैत्य बना हुआ है। एक अलग प्रकोष्ठ मे अष्टप्रातिहार्य युक्त भगवान महावीर की प्रतिमा विराजमान है जो मूर्तिकला मे अद्वितिय है। ऊपर चौक मे एक समवशरण है जिस पर सुपार्श्वनाथ भगवान विराजमान है। मदिर के बाहर एक विशाल मान स्तभ है। इस मन्दिर मे ५४६ जिन बिम्ब विराजमान है।

भगवान आदिनाथ की अवगाहना प्रतिमा इस मन्दिर से ६ मील दूर बारह पाटी पर्वतमाला के नीचे दबी हुई थी। श्री किशनदास जी ठग बघेरवाल साँगोद निवासी को एक रात स्वप्न मे बारहपाटी से प्रतिमा को यहा लाकर विराजमान करने का सकेत मिला। प्रतिमा बैलगाडी मे रख कर सागोद ले जाई जा रही थी। मार्ग मे रूपली नदी पर कारणवश गाडी ठहराई गई। पुन' गाड़ी चलाने पर वह आगे न चलकर वही अविचल हो गई। अत नदी के एक ही भाग मे उक्त मन्दिर

का निर्माण सेठ किशनदास जी बघेरवाल द्वारा करवाया गया। यह निर्माण-कार्य ४ वर्ष (सवत् १७४२ से १७४६ ) मे पूर्ण हुआ। इसी वर्ष माघ सुदी ६ सवत् १७४६ को भट्टारक जगतकीर्ति जी के नेतृत्व मे पचकल्याणक प्रतिष्ठा हुई। मन्दिर के बाहर मान स्तम्भ के शिलापट्ट पर अकित लेख इस बात का प्रमाण है। इस समय क्षेत्र एक समवशरण के निर्माण का कार्य चल रहा है। मदिर की व्यवस्था एक २५ सदस्यीय कमेटी द्वारा की जाती है।

## अतिशय क्षेत्र केशोराय पाटन :—

कोटा से ६० मील दूर चबल के किनारे पर स्थित मुनिसुव्रत नाथ मदिर के प्राचीन भारतीय मूर्तिकला का अद्वितीय नमूना है। इस मन्दिर के भूगर्भ मे एक तल प्रकोष्ठ है जो नदी की सतह से भी नीचा है। इसी प्रकोष्ठ मे २० वे तीर्थ कर मुनि सुव्रतनाथ जी की श्याम पाषाण की बनी हुई ४ फीट ऊँची पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। यह प्रतिमा बहुत ही चमत्कारिक एव मनोज्ञ है। कहते है कि यवन शासक मोहम्मद गौरी ने इस मूर्ति को नष्ट करने के लिये सैकड़ो प्रहार किये पर इस प्रतिमा पर मात्र कुछ खरोचे आई। तब क्रूद्ध होकर मोहम्मद गौरी ने इसे छैनियो एव टाकियो से काटने का आदेश दिया। पहले प्रतिभा का पैर का अ गूठा काटा गया। अंगूठा काटते ही इतनी तीव्र दूध की धार निकली कि आक्रमणकारियो को वहाँ से भागना पडा।

विद्वानो का अभिमत है कि आचार्य नेमिचन्द्र ने इसी मन्दिर मे "द्रव्यसग्रह" ग्रन्थ की रचना विक्रम सवत् ११२५ मे की थी। अत १२ वी शताब्दी मे इस मन्दिर का अस्तित्व तो स्वय सिद्ध है ही, पर कहा जाता है कि यह प्रतिमा ढाई हजार वर्ष पुरानी है और यह मन्दिर लगभग २००० वर्ष प्राचीन है। इसी तल-प्रकोष्ठ मे ६ प्रतिमाएँ १३ वी शताब्दी की बनी हुई है। इसके पिछले हिस्से में उत्तर की ओर ३ वेदिया है। इमी तरह दक्षिणी हिस्से मे एव प्रागण की वेदी मे एक छतरी है जिसमे १२ वी एव २० वी सदी की मूर्तियाँ बिराजमान है। यह मन्दिर अब जीर्ण-शीर्ण अवस्था मे है। अत पुरातत्त्व विभाग को इस ओर पूर्ण ध्यान देने की आवश्यकता है।

श्री शान्तिनाथ जी का मन्दिर, झालरापाटन—झालावाड से ४ मील दक्षिण मे जैनियो का प्रमुख नगर झालरापाटन है। यहाँ के बडे-बडे शिखर बन्द मन्दिर स्थापत्य कला के उत्कृष्ट नमूने है। इसमे शातिनाथ जी का मन्दिर अत्यन्त भव्य एव कलात्मक है। इसके ऊँचे-ऊँचे विभिन्न अलकरणो से अलकृत शिखर बडे सुन्दर है। मन्दिर मे भगवान शाँतिनाथ जी की विशाल खड़गासन, नयनाभिराम प्रतिमा विराजमान है। प्रमुख वेदी के चारो ओर विशाल चौक है। चारों ओर सुन्दर कमरे बने हुए है जिनमें स्वर्ण एव रजत से सजी हुई वेदियो मे कलात्मक मूर्तियाँ विराजमान है। मन्दिर के प्रत्येक पत्थर पर देव-देवी, मुनिराज की मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गई है।

इस मन्दिर का प्रामाणिक इतिहास तो उपलब्ध नही है, हाँ ! जन श्रुतियो के अनुसार यह मन्दिर एक हजार वर्ष पुराना है। न तो मन्दिर की किसी शिला पर लेख मिला है और न ही प्रतिमा पर कुछ अकित है। कहा जाता है कि इस मन्दिर का निर्माण भैसा साहू ने करवाया था। एक बार वे भैंसो पर रागा आदि लाद कर ले जा रहे थे। मार्ग मे रात्रि-विश्राम के लिये रुके।

सवेरे उठकर देखा तो सारा रांगा चाँदी मे परिणित होगया । तब वे उसे वापिस करने दूकानदार के पास गये । दूकानदार ने उस चाँदी को लेने से इन्कार कर दिया । पुन देखा—तो रागा ही निकला। यह घटना तीन बार घटित हुई । बीच रास्ते मे जाकर रागा रजत मे परिवर्तित हो जाता । अन्त मे भैसा साहू ने इस द्रव्य को जैन मन्दिर के निर्माण के लिये व्यय करने का विचार किया । इस प्रकार इस मन्दिर का निर्माण हुआ । इस मन्दिर की प्रतिष्ठा विक्रम सवत् ११०३ मे पीपा साहु ने करवाई ।

उपरोक्त तीर्थ क्षेत्रो एव अतिशय क्षेत्रो के अलावा हाडौती क्षेत्र मे अन्य अनेक कलात्मक मन्दिर विद्यमान है । कोटा नगर मे जैनियो की गली मे श्री आदिनाथ जी का चैत्यालय, बघेरवालो का जैन मन्दिर, बडा मन्दिर आदि है । पाटनपोल मे प्राचीन मन्दिर एव नशिया जी दर्शनीय है। बूदी के जैन मन्दिर प्राचीनतम हैं । बारॉ भी जैनियो का केन्द्र रहा है । इस प्रकार हम देखते है कि सम्पूर्ण हाडौती क्षेत्र वर्तमान मे भी प्राचीन जैन गौरव का पूर्ण दिग्दर्शन कराने मे समर्थ है ।

"जो बदला लेने की बात सोचता है वह अपने ही घाव को हरा रखता है जो अभी तक कभी का अच्छा हो गया होता ।"

—बेकन

★ ★ ★ ★ ★

आज जो मैने वनस्पति में जीवन-प्राण की स्थिति सिद्ध की है वह कोई नई बात नही है । मैने तो मात्र हमारे प्राचीन जैनाचार्यों द्वारा प्रतिपादित सत्य की पुनर्सिद्धि ही की है ।

—जगदीशचन्द्र बोस

★ ★ ★ ★ ★
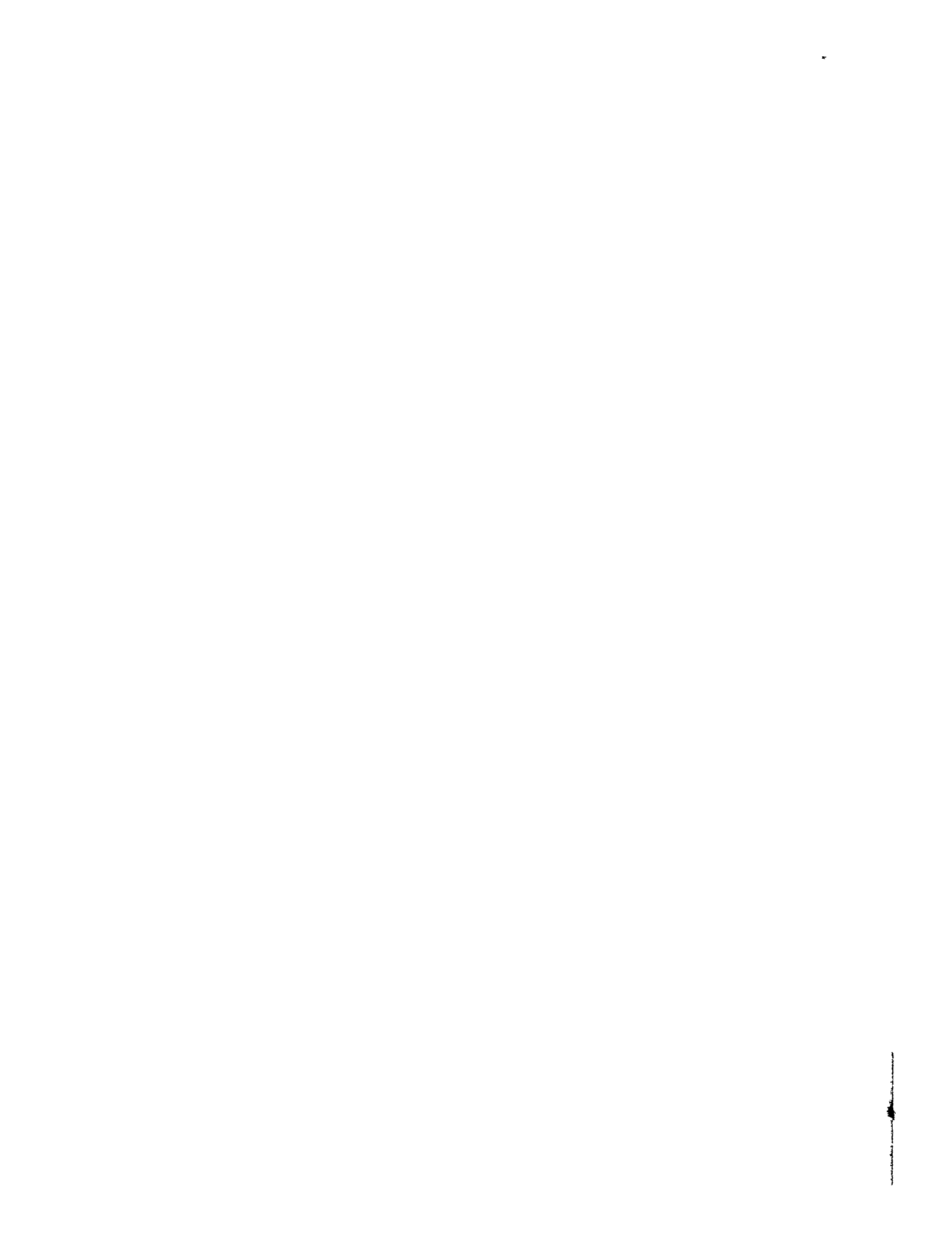
## 'भगवान महावीर २५०० वां निर्माण महोत्सव समिति बारां

द्वारा

दि० १३-११-७४ से आज तक प्रस्तुत

# कार्यक्रमों का विवरण

प्रस्तुतकर्त्ता
**रतनकुमार बज**
मंत्री
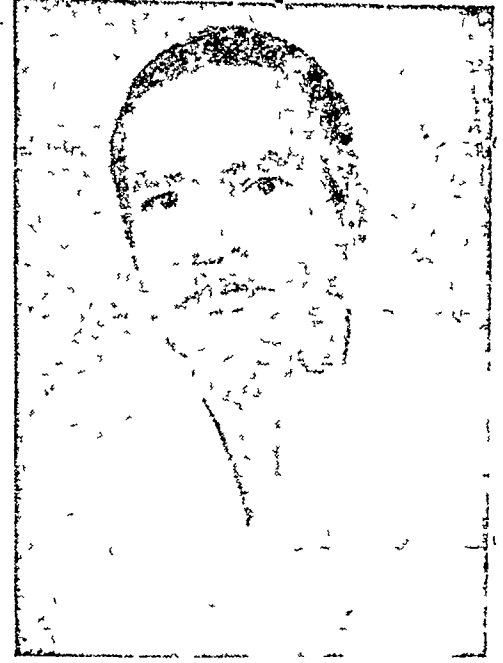
दीपावली, १३ नवम्बर १९७४ से भगवान महावीर स्वामी का २५००वा निर्वाण वर्ष देश तथा विदेश मे अत्यन्त उत्साहपूर्वक मनाने हेतु केन्द्रीय स्तर पर एव प्रांतीय स्तर पर, सरकारी तथा गैर सरकारी समितियो का निर्माण किया गया। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए बारा मे भी भगवान महावीर २५०० वाँ निर्वाण महोत्सव समिति का गठन किया गया, जिसकी कार्यकारिणी के निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मिति से चुने गये—

| | | |
|---|---|---|
| संरक्षक | — | श्री महावीर जैन R.A.S. |
| अध्यक्ष | — | श्री शिवलाल भाई |
| उपाध्यक्ष | — | श्री दयाचन्द जी जैन<br>अवकाश प्राप्त न्यायाधीश |
| | | श्री भंवरलाल जी सोगानी |
| | | श्री धन्नालाल जी मुनीम |
| | | श्री मूलजी भाई |
| कोषाध्यक्ष | — | श्री मनसुख भाई |
| मन्त्री | — | श्री रतनकुमार बज |
| उपमन्त्री | — | श्री बाबूलाल जी एकाउन्टेन्ट राजस्थान बैंक बारां |

इनके अतिरिक्त कार्य के समुचित संचालन के लिये कुछ समितियो का भी गठन किया गया, जिनके संयोजक इस प्रकार हैं—

| | | |
|---|---|---|
| वित्त समिति | — | श्री वृद्धिचन्द जी लोढा |
| समारोह समिति | — | श्री सुंदरलाल जी सेठी |

| | | |
|---|---|---|
| साँस्कृतिक समिति | — | श्री हरिश्चन्द्र जी जैन एडवोकेट |
| प्रचार प्रसार समिति | — | श्री विमलचन्द जी जैन एडवोकेट |
| शैक्षणिक समिति | — | श्री मानमल जी जैन |

भगवान महावीर का २५००वां निर्वाण महोत्सव, कार्यक्रम की शुरूआत १३ नवम्बर १९७४ दीपावली से की गई, २० नवम्बर १९७४ तक विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये, जो निम्नलिखित है—

दिनाक १३-११-७४ को प्रातः पाँच बजे प्रभात फेरी का आयोजन किया जिसमे सम्पूर्ण जैन समाज के पुरुष, महिलाये तथा बालक-बालिकाओ ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रातः ६-३० बजे स्थानीय दिगम्बर जैनियो के नोहरे मे श्री महावीर जैन द्वारा झन्डारोहण किया गया। दिन के ११ बजे श्री रविप्रकाश जी नाग उप जिलाधीश द्वारा महावीर पार्क का शिलान्यास पुराना मोटर स्टेन्ड बारा के पास किया गया। उसके पश्चात् मध्यान्ह १२-३० बजे एक भव्य जुलूस दिगम्बर जैन जोडला मन्दिर से प्रारम्भ होकर बारा के प्रमुख मार्गो पर होता हुआ श्री महावीर भवन पर समाप्त हुआ।

दिनाक १४-११-७४ को प्रात ५ बजे प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। उसके पश्चात प्रातः ८ बजे से ९-३० बजे तक दिगम्बर जैनियो के नोहरे मे आध्यात्मिक प्रवचनो का लाभ जनता को मिला। मध्यान्ह २-३० बजे श्री महावीर जैन R.A.S. की अध्यक्षता मे युवक सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमे भाषण, कविता पाठ एव निबन्ध पाठ आदि में युवको ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

दिनांक १५-११-७४ को प्रात ५ बजे प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। प्रात ८ बजे से ८-३० बजे तक साध्वीजी के प्रवचन हुये। मध्यान्ह १ बजे से ४ बजे तक दिगम्बर जैनियो के नोहरे मे प्रधानाध्यापिका राजकीय कन्या उच्चत्तर माध्यमिक पाठशाला बारा की अध्यक्षता मे महिला सम्मेलन का सफल आयोजन हुआ। आयोजन की सफलता का श्रेय श्रीमती सतोषकुमारी बज एव श्रीमती माणक सेठी को था। रात्रि को ८ बजे श्री राजेन्द्रसिह जी की अध्यक्षता मे एक आम सभा का आयोजन किया गया जिसमे निबन्ध वाचन, कविता-पाठ, भाषण एवं गायन का सुंदर कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। श्री धन्नालाल सुमन की कविता को जनता ने पसद किया। श्री प्रदीपकुमार जी गाँधर्व के सुमधुर सगीत एव गायन ने जनता को आत्मविभोर कर दिया। जनता के विशेष अनुरोध पर श्री प्रदीप कुमार जी को एक दिन ओर रूकना पडा।

दिनांक १६-११-७४ को प्रात ५ बजे प्रभात फेरी निकाली गई। प्रात ८ बजे से १० बजे तक एव मध्यान्ह १ से ५ बजे तक खेलकूद प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया। जिसमे जैन नवयुवक मण्डल, जैन युवा-महिला मण्डल एव अन्य बालक बालिकाओ ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। रात्रि को ८ बजे दिगम्बर जैनियो के नोहरे मे श्री कैलाशनारायणजी एडवोकेट बारॉ की अध्यक्षता मे एक आमसभा का आयोजन किया जिसमे प्रस्तुत प्रदीपकुमार जी गाधर्व के गायन कार्यक्रम को जनता ने मुक्तकण्ठ से सराहना की।

दिनांक १७-११-७४ प्रात ५ बजे प्रभात फेरी का आयोजन हुआ। ६-३० बजे से १० बजे तक विभिन्न खेल प्रतियोगिताऐं सम्पन्न हुई। मध्यान्ह १ बजे एक भव्य एव विशाल जुलूस जैन जोडला मन्दिर से प्रारम्भ होकर, नगर के प्रमुख मार्गो से होता हुआ श्री महावीर भवन पर समाप्त हुआ।

## भगवान महावीर २५०० वाँ निर्वाण महोत्सव समिति
### कार्यकारिणी, बारां ( राज० )
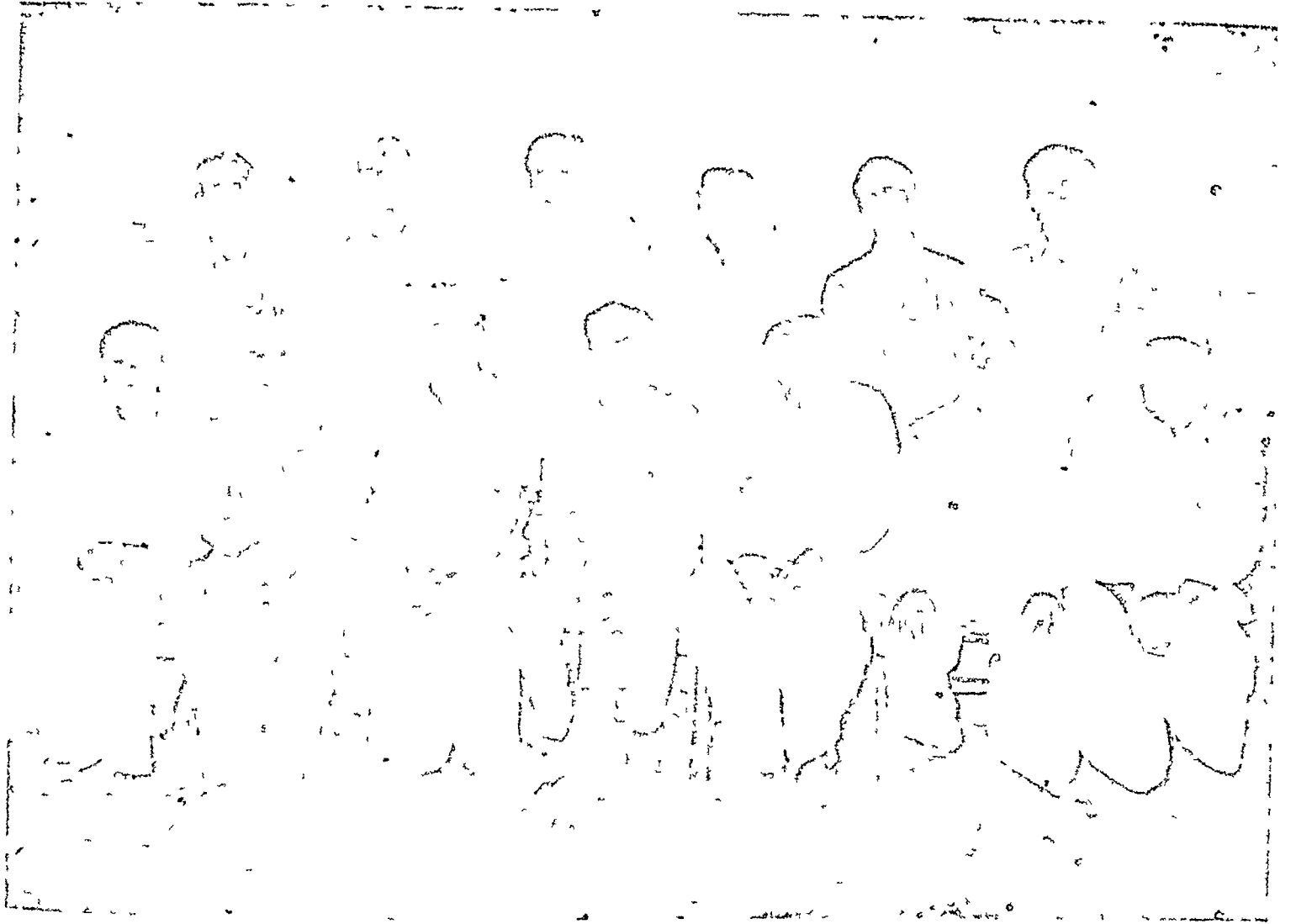
बाये से दाये—

बैठे हुये—श्री रतनकुमार जैन ( मन्त्री ), श्री दयाचन्द जैन ( उपाध्यक्ष ), श्री धन्नालाल जैन (उपाध्यक्ष), श्री महावीर जैन (संरक्षक), श्री शिवलाल भाई (अध्यक्ष), श्री भवरलाल सोगानी (उपाध्यक्ष), श्री मूलजी भाई ( उपाध्यक्ष )

खडे हुये—श्री हरिश्चन्द्र जैन ( सयोजक ), श्री वृद्धिचन्द लोढा ( सयोजक ), श्री मनमोहन जैन ( सयोजक ), श्री सुन्दरलाल सेठी ( सयोजक ), श्री बाबूलाल जैन ( उपमन्त्री ), श्री विमलचन्द्र सोगानी (सयोजक)

रात्रि के आठ बजे दिगम्बर जैनियो के नोहरे में श्री रविप्रकाशजी नाग उपजिलाधीश की अध्यक्षता में एक आम सभा संपन्न हुई। जिसमें भाषण एवं कविता के अतिरिक्त अध्यक्ष श्री नाग के स्वरचित लोक गीतों का सस्वर पाठ सुनकर जनता मुग्ध हो गई।

दिनाक १८-११-७४ को दिगम्बर जैनियो के नौहरे मे रात्रि के ८ बजे जैन युवा मण्डल के तत्वावधान मे जैन छात्राओ द्वारा एक सुन्दर एवं प्रभावोत्पादक नाटक अभिनीत किया गया, जिसकी दर्शको द्वारा मुक्त कण्ठ से सराहना की गई। इस नाटक के सफल एवं सुन्दर प्रदर्शन मे, श्रीमती संतोष कुमारी बज, कुमारी शकुन्तला सेठी, श्रीमती माणक सेठी, एवं श्री सज्जनसिंह जी मास्टर साहब का अत्यधिक सहयोग एवं मार्गदर्शन रहा।

दिनाक १९-११-७४ को किशनगज जैन समाज के कार्यक्रम मे बारा जैन समाज सम्मिलित हुआ। सध्या की आमसभा मे बारा की बालिकाओ एव किशोरो द्वारा सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

### भगवान का दीक्षा दिवस- तप कल्याण महोत्सव—

दिनाक १८-१२-७४ को भगवान का दीक्षा दिवस मनाया गया। जिसमे दोपहर १ बजे एक भव्य एव विशाल जुलूस दिगम्बर जैन जोडला मन्दिर से प्रारम्भ होकर श्री महावीर भवन पर समाप्त हुआ। भगवान महावीर के जीवन की कुछ घटनाओ का झाँकियो द्वारा प्रदर्शन जुलूस की प्रमुख विशेषता थी। झाकियो का निर्माण विभिन्न नवयुवक मण्डलो द्वारा किया गया था।

### धर्मचक्र का शुभागमन—

भगवान महावीर २५०० वा निर्वाण महोत्सव के अन्तर्गत भगवान महावीर के उपदेशों के प्रचार एव प्रसार हेतु एक अभिनव योजना केन्द्रिय समिति की ओर से तैयार की गई थी। उसी योजना के अन्तर्गत ४ धर्मचक्र विभिन्न स्थानो से प्रारम्भ होकर भारत भ्रमण कर रहे है। दिल्ली मे श्रीमती इन्दिरा गाधी द्वारा उद्घाटित धर्मचक्र का दि० १-४-७५ को बारा मे दिन के ११-३० बजे आगमन हुआ। बारा की जनता की ओर से स्थानीय वेयरहाऊस के पास धर्मचक्र का पुष्पहारो से एव आरती उतारकर स्वागत किया गया। जुलूस द्वारा धर्मचक्र को महावीर भवन लाया गया। वहाँ धर्मचक्र संचालक; ध्वजरक्षक, प्रतीकरक्षक, धर्मचक्र रक्षक, कलश रक्षक एव इन्द्र इन्द्राणी आदि कार्यों के सचालन के लिये बोलिया लगी। बोलियो से करीब ८००० रु० प्राप्त हुये। तत्पश्चात् धर्मचक्र का विशाल एवँ भव्य जुलूस नगर के प्रमुख मार्गों से होकर महावीर भवन पर समाप्त हुआ। धर्मचक्र का स्वागत जैन एवँ अजैन सभी लोगो ने ५१ तोरण द्वार बनाकर एवं धर्मचक्र पर पुष्पाहार बरसाकर किया। फिर रात्रि को ८-३० बजे श्री सोहनराज जी कोठारी जिला एव सत्र न्यायाधीश कोटा की अध्यक्षता मे एक आमसभा का आयोजन किया गया। जिसमे धर्मचक्र के साथ आये हुये श्री केशवदेव जी शास्त्री का, धर्मचक्र के स्वरूप एव महिमा पर प्रकाश डालते हुये एक सुन्दर भाषण हुआ। पडित तेजकुमारजी संगीत प्रेमी एव श्रीमती कुसुम जोशी के सुमधुर गीतो एवँ श्री राजेन्द्रकुमार जैन राजेश के नृत्य का कार्यक्रम हुआ। अध्यक्ष श्री कोठारी जी ने भाषण के साथ साथ स्वरचित कविताओ का श्रोताओ को रसास्वादन कराया। अन्त मे श्री महावीर जैन ने आभार प्रदर्शन किया।

निर्वाण महोत्सव वर्ष के शेष कार्यक्रमो जैसे महावीर जयन्ती भगवान का केवल ज्ञान प्राप्ति दिवस, भगवान का देशना दिवस एवँ निर्वाण महोत्सव समापन दिवस को समिति ने धूमधाम से मनाने का निश्चय किया है, जिसके लिए तैयारियां की जारही है।

# जैन नवयुवक मंडल

-विमलकुमार जैन
—सचिव

स्थापना क्यो और कैसे—

किसी भी समाज या राष्ट्र मे तरुण शक्ति ने ही हमेशा एक नयी दिशा, नव निर्माण मे नीव की ईंट का कार्य किया है। युवा वर्ग मे जब तक चेतना जाग्रत न होगी तब तक सबल समाज या राष्ट्र सुसंगठित रूप मे खडा न हो सकेगा, इसी एक महान लक्ष्य, ध्येय, को मानस पटल मे रखते हुए एक गौरवपूर्ण साहसिक कार्य की ओर कदम रखा, बारा युवा वर्ग के कुछ अनुभवशील कार्यकर्त्ताओ ने, और निश्चित रूप से उन्हे सफलता मिली इस महान कार्य मे। लगभग १०० अलग-अलग विचार धाराओ वाले युवको को एक मच पर सुसगठित रूप मे लाकर खडा करना सचमुच एक प्रेरणास्पद, अनुकरणीय भाव है। और यहाँ की सबसे प्रमुख विशेषता यह रही की शुरू मे, कुछ दिनो तक युवा-पुरुष एव महिलाओ ने मच पर एक साथ बैठकर समाज के कार्यो मे महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। परन्तु महिला वर्ग की बढती हुई सख्या, कार्य कुशलता एव सगठन की लगन को देखते हुए एक नये सगठन का करार दे दिया गया जो आज जैन युवा-महिला मण्डल के नाम से एक हरे-भरे पौधे के रूप मे विकसित है।

सदस्यता अभियान एव चुनाव—बडी उमग, जोश एव उज्ज्वल भविष्य की कामनाओ को लेकर कार्यकर्ताओ ने जोर शोर से सदस्यता अभियान का अभिवादन किया सदस्यता शुल्क २) एवं मासिक चन्दा १) प्रति माह निर्धारित किया।

दश लक्षण पर्व के महान अवसर पर नवयुवकों ने मण्डल को सुचारू रूप से चलाने के लिये एक कार्यकारिणी का गठन किया। सभी पदाधिकारियो का निर्वाचन निर्विरोध हुआ जो निम्न प्रकार रहा—

अध्यक्ष—श्री दयाचन्द जैन 'रजनीश'

उपाध्यक्ष—श्री दिनेशचन्द्र सेठी

सचिव—श्री विमलकुमार जैन

परामर्शदाता—डा० कैलाशचन्द्र सेठी

श्री बाबूलाल जैन

उपसचिव—श्री योगेश जैन

कोषाध्यक्ष—श्री सोहन जैन

सास्कृतिक सचिव—श्री प्रमोद सोगानी

क्रीड़ा सचिव—श्री चैतन सौगानी

श्री नवीन जैन

साहित्यिक सचिव—श्री रमेश शाह

श्री मोहन जैन

कार्यकारिणी के अन्य सदस्य—राजकुमार जैन, महावीर पाटोदी, पदम भानपुरा, महावीर जैन, अशोक जैन, भानुकुमार जैन।

**गतिविधियाँ—**

भगवान महावीर के २५०० वें पावन निर्वाण महोत्सव के शुभावसर पर तीव्रतम गतिविधियो को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है, जैसे इसी अवसर को मध्य नजर रखते हुये इस मण्डल का गठन हुआ हो।

सभी नवयुवको के पूर्ण सहयोग से अन्ता कैनाल पर एक पिकनिक का आयोजन किया गया। महावीर जैन नाटक मण्डली भोपाल के सहयोग से एक रगारंग सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। सयोजन श्री दयाचन्द जैन ने किया।

दीपावली के शुभ अवसर पर एक युवक सम्मेलन का आयोजन श्री महावीर जैन ( आर. ए. एस ) की अध्यक्षता मे किया गया, जिसमे उत्साही युवको द्वारा निबध एव कविता पाठ आदि का श्रेष्ठ कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

जैन नवयुवक मण्डल एव श्वेताम्बर जैन नवयुवक मण्डल के सहयोग से एक खेलकूद सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमे निम्नलिखित खेल प्रतियोगिताएं रखी गई।

| | | | |
|---|---|---|---|
| हाकी | — | विजेता — | जैन नवयुवक मण्डल, कप्तान-पदम कुमार कासलीवाल |
| वॉलीबॉल | — | विजेता — | जैन नवयुवक मण्डल, कप्तान-महावीर जैन |
| फुटवॉल | — | विजेता — | श्वेताम्बर जैन नवयुवक मण्डल, |

बैडमिन्टन डबल्स — विजेता — नूतनकुमार, प्रवीण कुमार जैन,
बैडमिंटन सिंगल्स — विजेता — डॉ० कैलाश सेठी
निबंध — विजेता — डॉ० कैलाश सेठी
कविता — विजेता — जैन नवयुवक मन्डल से दयाचन्द 'रजनीश'

समाज के कुछ उत्साही एव कर्मठ नवयुवको ने भगवान महावीर के २५०० वे निर्वाण महोत्सव के पावन अवसर पर 'स्मरिका' के रूप मे अपनी श्रद्धाँजलि अर्पित करनी चाही। इसके लिए इन कार्यकर्त्ताओ ने पूरी लगन एव जिम्मेदारी से कार्य किया। इस प्रकार जैन नवयुवक मण्डल द्वारा का यह प्रयास आपके समक्ष उपस्थित है।

## भावी योजनाएँ—

(१) बुक बैंक का गठन—समाज के उपेक्षित एव निर्धन प्रतिभावान छात्रो के लिये फीस एव पाठ्य पुस्तको का प्रबन्ध।

(२) कार्यकर्त्ताओ का निर्माण—निस्वार्थ भाव से कार्य करने वाले स्वय सेवको का निर्माण करना ताकि धार्मिक एव सामाजिक आयोजनो को सफल बनाया जा सके।

(३) छात्रावास का निर्माण—बाहर से आने वाले विद्यार्थियो के लिए आवासीय सुविधाऐं उपलब्ध कराना।

इस प्रकार यह सस्था समाज की उत्तरोत्तर उन्नति के लिए प्रयत्नशील है। इस सस्था से समाज को काफी आशाएँ है। मुझे विश्वास है कि यह सस्था कुरीतियो के विरुद्ध सघर्ष करते हुए समाज के नवनिर्माण मे महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

"क्या बात है कि हम सामान्यतया भी झूठ से
नही बचते, भले ही वह शर्म या डर के
मारे क्यो न हो ? क्या यह अच्छा
नहीं होगा कि हम मौन धारण
करें या आपस मे निडर
होकर जैसा हमारे
दिल मे है, वैसा
ही करें।"

—महात्मागाधी

# जैन युवा महिला मण्डल, बाराँ

## कार्यकारिणी १९७४-७५

वाये से दाये—
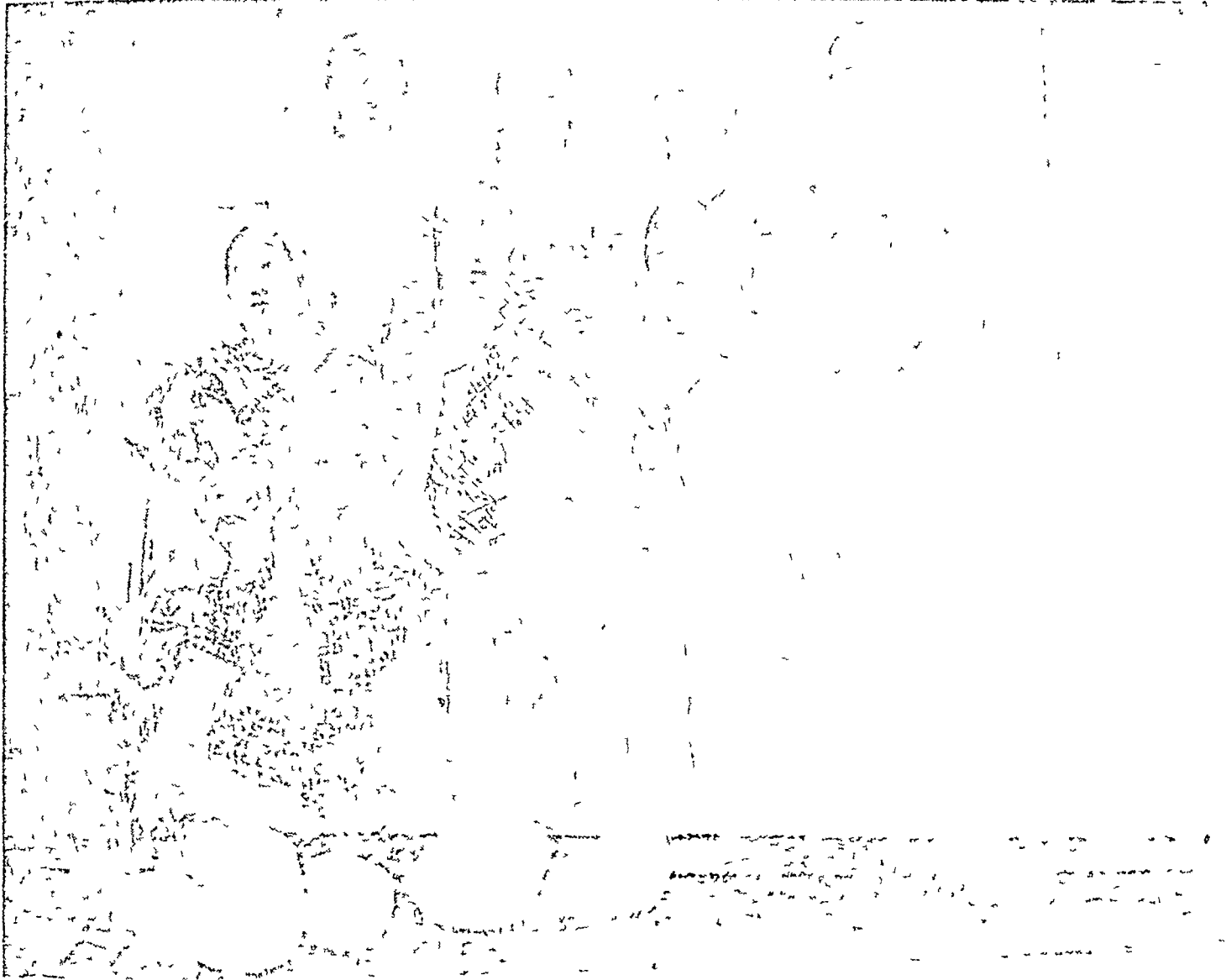
खडे हुए— सुश्रो जयश्री पतीरा, सुश्री नलिनी शाठाणी ( उपमन्त्री ), सुश्री सुधा पतीरा सुश्री मधु सेठी ( सास्कृतिक मन्त्री )

कुर्सी पर—श्रोमती कुन्तीबाई, श्रीमती माणक सेठी ( अध्यक्षा ) श्रीमती निर्मलादेवी जैन ( उपाध्यक्षा ) सुश्री शकुन्तला सेठी ( मन्त्री )

वैठे हुए—सुश्री रजनी जैन ( साहित्य मन्त्री ), सुश्री शोभना पतीरा सुश्री सन्तोष जैन निलान्जना जैन ( कोषाध्यक्ष )

एक विवेचनात्मक विवरण-

—शकुन्तला सेठी
—सचिव

सन् १६७५ को संयुक्त राष्ट्र परिषद ने अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष का नाम दिया है। इस वर्ष मे विश्व को महिलाओ को पुरुषो के बराबर अधिकार दिलाने के लिये कार्य किया जायेगा। भारतीय संविधान मे महिलाओं को पुरुषो के ही समान अधिकार प्राप्त है। किन्तु व्यावाहरिक जीवन मे इसके कई अपवाद है। बड़े शहरो मे तो महिलाओ को फिर भी कुछ स्वतन्त्रता प्राप्त है किंतु गावो और कस्बो मे आज भी महिला समाज पिछड़ा हुआ है। अशिक्षा पर्दा-प्रथा, दहेज-प्रथा आदि सामाजिक अभिशाप महिलाओ की उन्नति मे बाधक है। बारॉ का महिला समाज भी कई मामलो में अभी काफी पीछे है। पर्दा-प्रथा, छूआ,छूत, दहेज प्रथा आदि कुरीतियां यहॉ पर भी प्रचलित है। समाज की महिलाओं का एक संगठन पूर्व मे कार्यरत रहते हुए भी नयी पीढ़ी के उत्साह एवं कार्यक्षमता को दृष्टिगत रखते हुये युवा महिलाओ एवं छात्राओ को संगठित किया गया। सर्व सम्मति से इस संगठन को 'जैन युवा महिला मंडल' नाम दिया गया।

इस मंडल की स्थापना का एक महत् उद्देश्य यह भी था कि भगवान महावीर २५०० वें निर्वाण महोत्सव के कार्यक्रमो मे हम युवा महिलाओ का सक्रिय योगदान हो।

एक अन्य उद्देश्य यह भी है कि पुरानी के अपने संकुचित विचारों को छोड़कर नई पीढी के कार्यों मे सहयोग दें। बुजुर्गों की अनुभवशीलता के कारण युवा पीढी दबी-दबी सी रहती है। अतः उन्हे कुछ कर गुजरने का मौका इस मंडल के मंच से मिला अत दि० १३-१०-७४ को सदस्यों की सर्वानुमति से मंडल की कार्यकारिणी का निर्माण किया गया। कार्यकारिणी के पदाधिकारियो के नाम इस प्रकार है।

| | | |
|---|---|---|
| अध्यक्षा | — | श्रीमती माणक सेठी |
| उपाध्यक्षा | — | श्रीमती निर्मला देवी जैन |
| मंत्री | — | सुश्री शकुन्तला सेठी |

| | | |
|---|---|---|
| उपमंत्री | — | ,, नलिनी गाठाणी |
| कोषाध्यक्ष | — | ,, नीलान्जना जैन |
| साहित्य मंत्री | — | ,, रजनी जैन |
| सास्कृतिक मंत्री | — | ,, मधु सेठी |

कार्यकारिणी के अन्य सदस्याऍ इस प्रकार है-कु० शोभना, कु० जयश्री, कु० सुधा, कु० गुणमाला कु० सन्तोष, श्रीमती शोभा जैन, एवं श्रीमती कुन्तीबाई।

मण्डल का प्रवेश शुल्क २) रु० एव मासिक शुल्क )५० पैसे रखा गया।

मण्डल के तत्वावधान मे कविता पाठ, निबन्ध वाचन जैसे कार्यक्रमो के साथ साथ एक नाटक "नारी का बलिदान" भगवान महावीर के २५००वें निर्माण महोत्सव के उपलक्ष में दि० १८-११-७४ को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया गया। नाटक की मूल समस्या दहेज प्रथा के कुप्रभाव थे जिसका आज के नवयुवको द्वारा पूर्ण विरोध करने पर ही निराकरण हो सकता है। नाटक के अभिनय मे मण्डल के समस्त सदस्यो का पूर्ण सहयोग तो था ही अन्य सस्था जैन महिला मण्डल की अध्यक्षा श्री सन्तोष कुमारी बज तथा हमारे ही सगठन की कुमारी शकुन्तला सेठी का विशेष श्रम इस नाटक मे था।

नाटक की सफल प्रस्तुति के बाद एक पिकनिक का आयोजन किया गया जिसमे जैन महिला मण्डल की सदस्याएं आमन्त्रित थी।

भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण महोत्सव के अंतर्गत मण्डल की छात्राओं ने खेलकूद प्रतियोगिताओ मे पूर्ण उत्साह से भाग लिया।

समय समय पर समाज द्वारा आयोजित कार्यक्रमो मे जैन युवा महिला मण्डल उत्साह पूर्वक भाग लेता रहा है तथा मण्डल के सदस्यो का पूर्ण प्रोत्साहन एवं सहयोग रहा है। आशा है युवा महिलाओ की यह सस्था इसी प्रकार भविष्य मे भी उत्साह पूर्वक समाज के बीच कार्यरत रहेगी।

# जैन महिला मंडल

## बारां
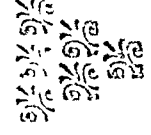
बांये से दांये :—

खडे हुए—श्रीमती कान्तीबाई अजमेरा, श्रीमती रतन बाई, श्रीमती चन्दा बाई, श्रीमती अन्जना बाई, श्रीमती कस्तूरी बाई, श्रीमती रतन बाई

कुर्सी पर—श्रीमती शकुन्तला पाटनी, श्रीमती तारारू चन्द सेठी श्रीमती सन्तोष कुमारी बज (अध्यक्षा) श्रीमती चन्दा बाई, श्रीमती सोसर बाई, ।

बैठे हुए—श्रीमती सरलादेवी सोगानी (मन्त्री. श्रीमती रतन बाई श्रीमती चन्द्रकला बडजात्या श्रीमती स्वरूप चन्द जैन ।
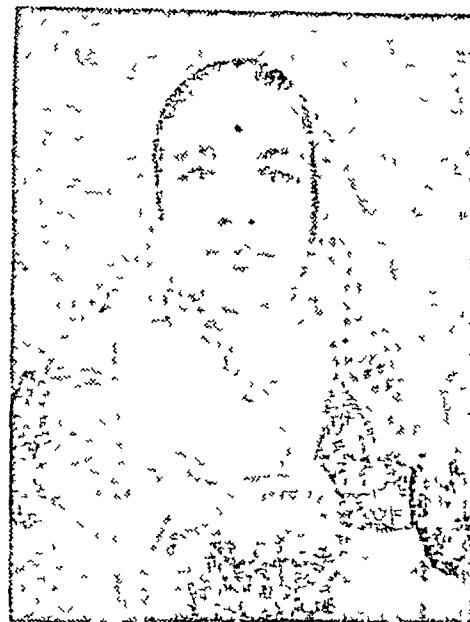
सरला देवी सोगानी मन्त्री

**मण्डल की स्थापना :—**

बाराँ जैन समाज की नारियो का कोई सगठन नही होने से अप्रेल १९७२ मे जैन पाठशाला की अध्यापिका श्रीमती इन्दुमति के सहयोग से उनके नेतृत्व मे समस्त जैन महिलाओ ने एकत्र होकर इस सगठन की स्थापना की तथा ११ सदस्यो की एक कार्यकारणी बना कर इसकी अध्यक्षता का कार्यभार श्रीमति सन्तोष कुमारी एव मन्त्री का कार्यभार मुझे सोपा गया जो आज तक इस कार्यभार को सभाले हुए है ।

**प्रगतिशीलता एवं प्रेरणा :—**

प्राचीनकाल से ही भारत मे महिलाओ को समुचित सम्मान दिया जाता रहा है और वे सती सीता, अजना, मैना सुन्दरी, चन्दनबाला, राजुल आदि के रूप मे प्रेरणा की स्रोत रही है। लेकिन मध्यकाल मे शिक्षा के अभाव से पुरुष वर्ग नारी को हीन समझने लगा था । और उसमे सहयोग किया उस समय के प्रबुद्ध लेखक व कवि वर्ग ने जिन्होने नारी की शृंगारिकता एव उनकी हीनता को दर्शाने वाली अनेक रचनाये लिखकर नारी के अन्य सब गुणो को गोण करके, उन्हे या तो विलासिता को भुला कर उन्हें अबला बना दिया अथवा उनकी समस्त वीरताओं की गाथाओ को भुला कर उन्हे अबला बना दिया है ।

मध्य कालीब इन शास्त्रो एव धार्मिक ग्रन्थों का कुफल यह हुआ कि स्वय नारी को अपने आपको हीन व उत्तम समझने लगी है । उनका क्षेत्र सीमित हो गया । वे बढिया कपडे गहने आदि पहिनना, शृंगार आदि कर लेना तथा घरो मे भी घूंघट से लदी रह कर पुरुषों के आदेशो का पालन करते हुए अपने क्षेत्र को घर तक ही सीमित समझने लगी । लेकिन आधुनिक युग मे देश के नारी समाज ने फिर से करवट ली और भारत की प्रधान मन्त्री इन्दिरागाधी जैसी नारियों ने

फिर से यह प्रमाणित कर दिया कि नारी अबला ही नही सबलाभी है, वह अक्षम ही नही सक्षम भी है वह हर क्षेत्र मे कार्य करके समाज एव देश को उत्थान की राह पर ले जाने मे सहयोग ही नही कर सकती अपितु नेतृत्व करने मे भी समर्थ है ।

इन्ही विचारो से प्रेरणा लेकर हमने बारा जैन समाज मे इस प्रथम महिला सघ की स्थापना की है ।

मडल की स्थापना के पश्चात् सब बहिने हर पन्द्रह दिन मे सभा करके अपने विचारो का आदान-प्रदान, तत्व चर्चा भजन, कीर्तन आदि के रूप मे करती रही। मण्डल महिलाओ से सम्बन्धित शादि विवाह आदि मे होने वाली कई रूडियो को बन्द करवाया। महिलाओ को घर के दायरे से निकाल उन्हे सामाजिक क्षेत्र मे कार्य करने के लिए प्रेरित किया। जिसका सुफल ही है कि बारा मे जैन नारियो एव बालिकाओ के अन्य सगठन और बने तथा आज इस स्मारिका के सम्पादन जैसे दुरूह कार्य करने मे नारी ही प्रेरित हुई।

मडल द्वारा इस अरसे मे किये गये कुछ प्रमुख कार्य है.- पुज्य श्री १०८ श्री विमलसागर जी महाराज के समाधिकरण पर की गई सभा मे उपस्थित सब बहिनो द्वारा सामायिक व स्वाघ्याय का नियम लेना। हर वर्ष महावीर जयन्ती पर होने वाले महिला सम्मेलन आदि मै कार्य-क्रम प्रस्तुत करना तथा इस २५०० वा निर्वाण महोत्सव पर अनेक कार्यक्रमो मे भाग लेने के साथ-साथ मडल की अध्यक्ष श्रीमती सन्तोष कुमारी वज के नेतृत्व मे प्रथम बार दिगम्बर व श्वेताम्बर समाज की बालिकाओ को एक समूह रूप मे एकत्र करके उनके द्वारा आम मच पर सामाजिक नाटक "नारी का बलिदान" प्रस्तुत कराना। जिसे हजारो की सख्या मे एकत्र जैन व अजैन दर्शको द्वारा मुक्त कठ से सराहा गया।

## नारी जागरण—

इस वर्ष समस्त विश्व मे नारी मुक्ति वर्ष मनाया जा रहा है पश्चिमी देशो मे भी नारी आज पुरुष के समान अधिकारो के लिये आन्दोलन चला रही है। लेकिन हमारी कल्पना अभी नारी मुक्ति की कल्पना से भिन्न है। स्त्री-पुरुष के बीच समानता का हट एक तरह से निर्थक है क्योकि स्वभावत स्त्री-पुरुष से भिन्न है एव उनका एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व है। जाग्रत नारी अपनी शक्ति, आभा और कार्यकुशलता से विश्व को प्रभावित कर रह रही है।

अपने देश मे भी पिछले कई वर्षो से कार्य हो रहा है। दहेज प्रथा पर गहरा प्रहार किया जा रहा है। नव युवतियो मे भय, लज्जा, सकौच आदि की जगह बिनय, बिवेक, सतर्कता और निडरता तथा सुरक्षा के सस्कार डाले जा रहे है, आभूषणो या शृ गार प्रसाधनो का उपयोग करने की बजाय विश्बास से अपने को सजाने और सँवारने मे अग्रसर है।

हर नारी सम्पत्ति और भोगविलास की मर्यादा अपने लिए तय करे, परिग्रह की मर्यादा होगी तो भ्रष्टाचार पर नियन्त्रण हो सकेगा। हर स्त्री काले धन से दूर रहने का व्रत लेवे, अस्पृश्यता की भावना को अपने मन से हटाये तथा इन बातो का पालन करे, एव पूर्ण सकल्प से जुटकर लग जावे, तब वह समय दूर नही होगा जब नारी अपने को पूर्णतया सम्मानित एव स्वतन्त्र पावेगी।

# श्वेताम्बर जैन नवयुवक मंडल 

## बारां
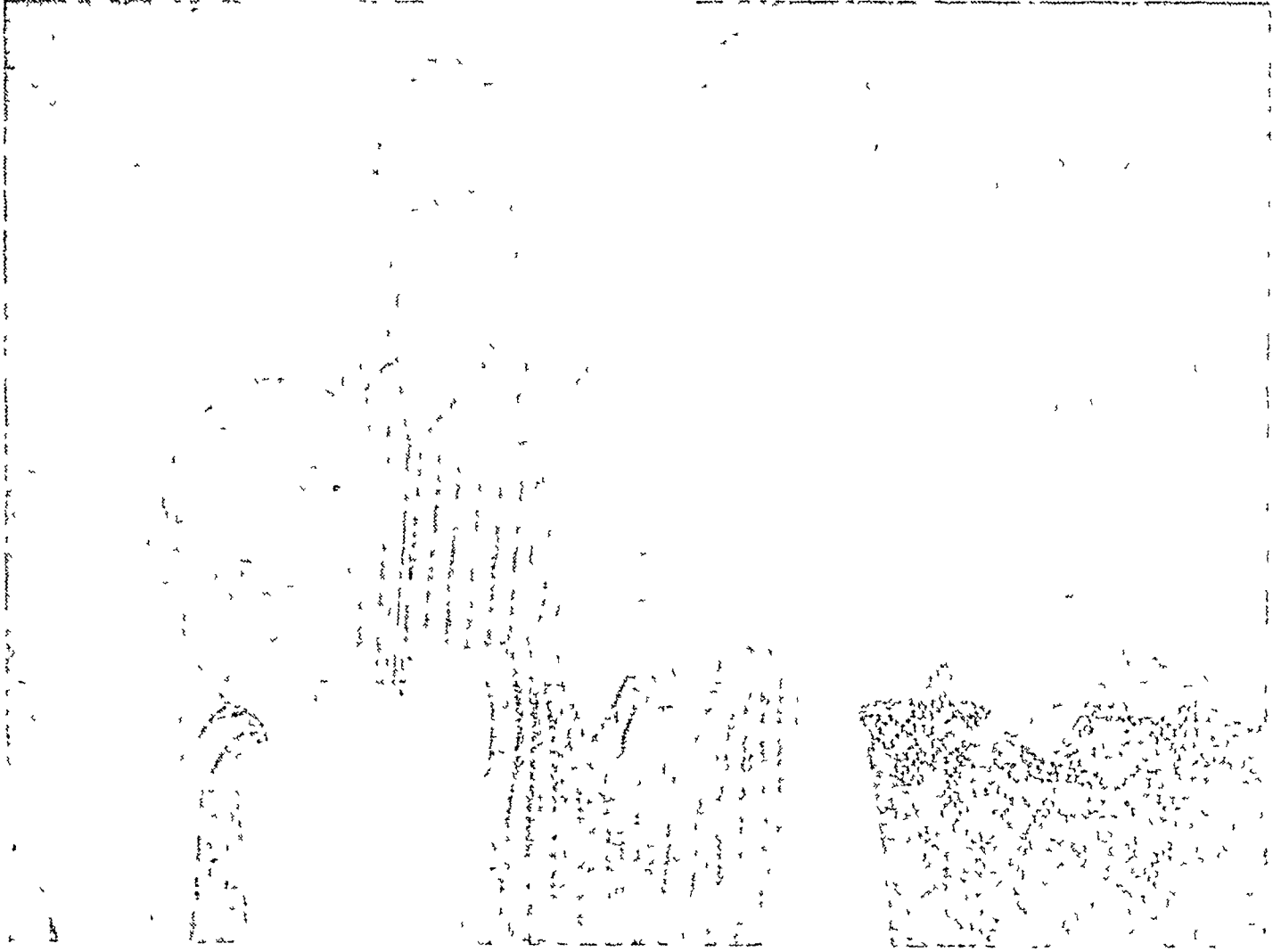
बाये से दाये —

खडे हुए—श्री किरीट भाई (मन्त्री), श्री अशोक जैन ।

बैठे हुए—श्री किरणकुमार, श्री यशवन्त भाई (अध्यक्ष), श्री निर्मल कुमार ।

## वर्द्धमान कीर्तन मंडल, आरां ( राज० )
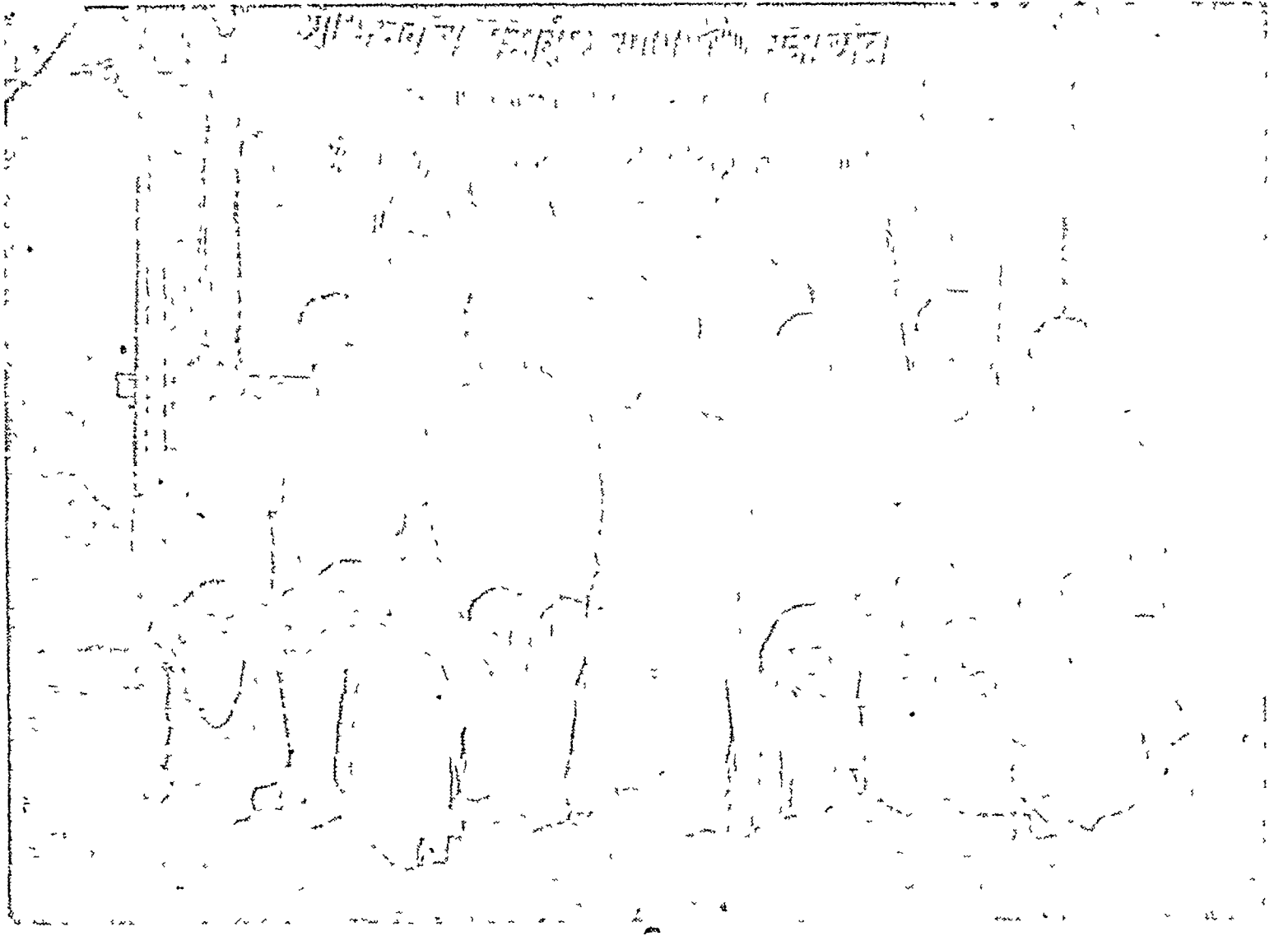
बाये से दाये :—

खडे हुए ( पहली पक्ति ) :— श्री रतनलाल मित्तल, श्री रमेशचन्द मगल ।

खडे हुए ( दूसरी पक्ति ) — श्री शिखरचन्द, श्री सत्यनारायण, श्री बाबूलाल ।

कुर्सी पर बैठे हुए:— श्री अरविन्द कुमार, श्री नवलकिशोर, श्री हुकमचन्द, श्री सुन्दरलाल सेठी, श्री रामप्रताप श्री बद्रीलाल, श्री राजेन्द्रकुमार ।

फर्श पर बैठे हुए — पवन कुमार, अभिनन्दन कुमार, कमलेश कुमार, अजय कुमार, अनीता अशोक कुमार, भगवानलाल ।

# जिनकी यादें अवशेष हैं :—

—:*—

## श्रीमती उषा चौधरी:—

श्रीमती उषा, श्री मनमोहन जैन E. O. नगरपालिका बारां की एकमात्र सुपुत्री का जन्म २६ सितम्बर १९५४ को हुआ। एक होनहार विद्यार्थी के रूप मे बी. ए. तक शिक्षा ग्रहण की। १८ फरवरी १९७३ को श्री धीरज चौधरी से दाम्पत्य सूत्र का पवित्र बन्धन हुआ। जैन समाज की गतिशील कार्यकर्त्ता के रूप मे इस छोटी उम्र में ही श्रीमती उषा प्रसिद्ध हो चुकी थी। १६ फरवरी १९७४ को प्रसव पीड़ा के कारण श्रीमती उषा चौधरी असमय मे ही काल-कवलित हो गई। जैन समाज असमय में ही अपनी इस प्रतीभा की सेवा से वंचित हो गया।

भगवान मृत आत्मा को शाँति प्रदान करे यही कामना है।

# श्री दीपक कुमार जैन
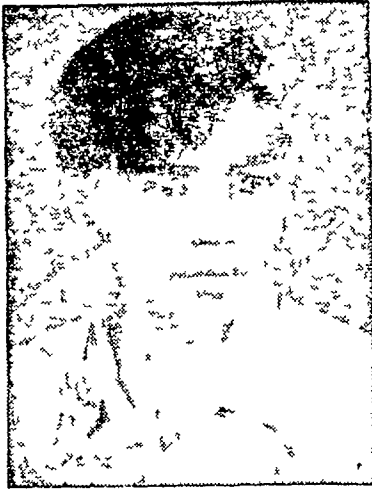
असमय मे काल के क्रूर हाथो से ग्रसित जैन समाज की नवोदित प्रतिभा श्री दीपक बारा महाविद्यालय की बी काम कक्षा के होनहार विद्यार्थी थे। मेधावी छात्र श्री दीपक सगीत, कहानी लेखन मे गहन अभिरुचि रखते थे। स्वयं अभ्यास के बल पर श्री दीपक ने हारमोनियम एव बेन्जो बजाने मे विशेष दक्षता प्राप्त करली थी। कई सगीत प्रतियोगिताओ मे विजय श्री हासिल कर श्री दीपक ने जैन समाज को गौरवान्वित किया। औपरेकन कक्ष मे जाने से पूर्व भी श्री दीपक का लेखन कार्य अविरल गति से चलता रहा। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हे अपनी मृत्यु का पूर्वाभास होगया। था। जीवन और मृत्यु के प्रति उनका यह कथन एक दम सार्थक है।

"ससार मे जीवन और मृत्यु के बीच मैच होता है, जिसमे कभी कभी जीवन की विजय होती है, किन्तु अकसर मृत्यु की ही विजय होती है।"

भगवान दिवगत आत्मा को शान्ति दें, यही कामना है।

## स्मारिका प्रकाशन समिति

# एक परिचय

# श्री महावीर जैन

जन्म स्थान— नागौर ( राजस्थान )
शिक्षा— एम० ए० ( अंग्रेजी साहित्य ) बीकानेर मे
संप्रति— उपजिलाधीश, बारां

एल-एल. बी. मे अध्ययन करते समय ही, राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन होजाने के कारण, इस कक्षा में ही अपने अध्ययन को रोक देना पडा। आप बीकानेर में सहायक जिलाधीश एवं प्रथम श्रेणी दण्ड नायक के पद पर, बीकानेर, हनुमानगढ़ एवं ब्यावर में विक्रय कर अधिकारी के पद पर, जैतारण (पाली) में उपजिलाधीश के पद पर कार्य कर चुके है। सम्प्रति ने बारां नगर के उपजिलाधीश पद का दायित्व अभी अभी ग्रहण किया है। इससे पूर्व बारां मे ही प्रथम श्रेणी दण्ड नायक का कार्यभार सम्भाल रखा था। एक उत्साही, कर्मठ नवयुवक के रूप में तथा गरिमा मंडित अधिकारी के रूप में जैन समाज मे बहुचर्चित एवं प्रशंसित है। आपके पथ-प्रदर्शन एवं सुयोग्य नेतृत्व में ही भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण महोत्सव के अनेक कार्यक्रम सफल होने मे समर्थ हुये है। धर्मचक्र के बारां आगमन के समय आपका संरक्षकत्व समाज को प्राप्त हुआ। "स्मारिका प्रकाशन समिति" के संरक्षक के रूप में आपने जो कार्य किया, वह अविस्मरणीय रहेगा। अपने विभिन्न प्रशासनिक उत्तरदायित्वों का वहन करते हुये समाज के कार्यों में अधिकतम सहयोग देना श्री महावीर जैन की विशेषता है।

# श्रीमती माणक सेठी

जन्मतिथि— २० मार्च सन् १९५०
जन्मस्थान— इन्दौर ( म० प्र० )
शिक्षा— एम. ए. ( हिन्दी साहित्य )

देवी अहिल्या की पावन नगरी इन्दौर मे जन्म लेने वाली एव हाडौती अंचल के प्रमुख केन्द्र बारा के डा० कैलाशचन्द सेठी के साथ दाम्पत्य सूत्र बन्धन मे एकोकार होने वाली श्रीमती माणक सेठी नारी स्वातन्त्र्य की प्रबल समर्थिका है। महिलाओ को रुढियो एव कुरीतियो के अध कूप से निकालकर, देश को प्रगति में पुरुषो के बराबर दायित्व निभाने की भावना जगाने का प्रयास करती रही है। आलोचनाओ से अप्रभावित रहकर महिला वर्ग की उन्नति के लिये प्रयत्नशील है। गृहस्थो के दायित्वो का वहन करते हुये आप जैन युवा महिला मण्डल की अध्यक्षा के रूप मे युवा उभरती प्रतिभाओ का मार्ग निर्देशन कर रही है।

शैक्षणिक क्षेत्र मे सदैव प्रथम श्रेणी में सफलता अर्जित करने के साथ साथ निबन्ध लेखन का अनेक प्रतियोगिताओ मे पुरस्कार प्राप्त किये है। साहित्यिक अभिरुचि के कारण ही जैन नवयुवक मण्डल बारां की 'स्मारिका' के निर्देशन एव सम्पादन का भार आपको सौपा गया है। जैन नवयुवक मण्डल बारा आशा करता है कि भविष्य मे भी उनकी प्रतिभा का उपयोग घर के साथ साथ देश एव समाज के रचनात्मक कार्यो के लिये होता रहेगा।
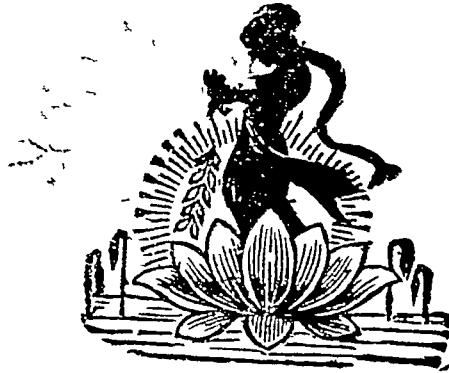
# श्री मनमोहन जैन

जन्म तिथि — ७-७-१९३४
जन्म स्थान — झालावाड़ ( राजस्थान )
संप्रति — अधिशासी अधिकारी, नगरपालिका, बारां

श्री जैन में एक कुशल प्रशासक की प्रतिभा, सोहार्द, सोजन्यपूर्ण व्यवहार, मिलन सारिता आदि गुणो का समन्वय एक साथ देखने को मिलता है। यही कारण है कि श्री जैन जहां भी कार्य करते है, वहाँ की जनता उन्है सिर आखो पर बिठाती है। झालरापाटन, भवानीमण्डी, गंगापुर सिटी आदि स्थानो की नगरपालिकाओ का संचालन आपने सफलता पूर्वक किया है। 'भगवान महावीर के २५००वा निर्वाण महोत्सव समिति' की निर्माण समिति के संयोजक पद पर रहकर आपने सराहनीय कार्य किया है। स्मारिका प्रकाशन समिति के परामर्श दाता के रूप में आपका कार्य प्रशंसनीय है। जैन समाज की गतिविधियो के प्रेरणा स्त्रोत के रूप मे जन-जन आपसे परिचित है। समाज के विकास के लिये यथाशक्ति प्रशासनिक सहयोग आपकी प्रमुख विशेषता है।

# श्री अनूपचन्द जैन

एडवोकेट
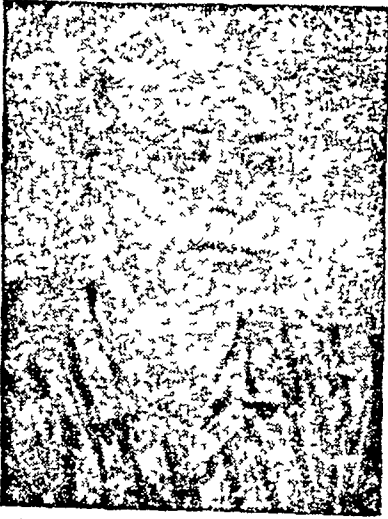
श्री अनूपचन्द्र जैन जैसे योग्य, अनुभवी, कर्मठ पत्रकार, लेखक, संपादक का मार्गदर्शन 'स्मारिका प्रकाशन समिति' को मिला इससे समिति गौरवान्वित है। श्री अनूपचन्द जैन का सम्पूर्ण जीवन ही समाज सेवा एवं साहित्य के प्रति समर्पित रहा है। हिन्दुस्तान टाइम्स, सर्वोदय साहित्य समाज, साहित्य संगीत परिषद, अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, अखिल भारतीय युवक कॉंग्रेस महा सम्मेलन, श्री भारतेन्दु समिति, कोटा, अमृत बाजार पत्रिका आदि विभिन्न संस्थाओ एवं पत्र-पत्रिकाओ से सम्बन्ध रखकर साहित्य की जो सेवा आपने की, वह स्तुत्य है। वर्तमान मे 'टाइम्स ऑफ इंडिया के प्रतिनिधि' 'चिदंबरा' मासिक के सम्पादक, हरिजन सेवक संघ के अध्यक्ष, व्याख्याता विधि विभाग राजकीय महाविद्यालय कोटा के रूप में आप साहित्य एवं समाज की सेवा में संलग्न है। जैन समाज अपने इस देदीप्यमान नक्षत्र पर गर्व करता है।

# श्री बजरंगलाल शर्मा

श्री बजरंगलाल शर्मा राजकीय महाविद्यालय बारां में व्याख्याता पद पर कार्यरत है। अध्यापन के अलावा श्री शर्मा की साहित्यिक गतिविधियां महत्वपूर्ण है। संस्कृत साहित्य का विशद ज्ञान श्री शर्मा के व्यक्तित्व का अंग बन चुका है। श्री शर्मा की समाज-सुधार के क्षेत्र मे भी विशेष रुचि है। स्मारिका प्रकाशन समिति के परामर्शदाता के रूप में उन्होंने जो कार्य किया वह स्तुत्य एवं सराहनीय है। सबसे बढकर खुशी का विषय यह है कि अजैन होते हुए भी जैन धर्म के बारे मे श्री शर्मा की जानकारी बहुत अधिक है। इसलिए समिति के परामर्शदाता पद के भार का निर्वाह कुशलता पूर्वक कर सके है।

# प्रो. त्रिलोकचन्द्र गुप्ता

जन्म स्थान—छीपा बडौद (जिला कोटा राजस्थान)
शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी साहित्य)
संप्रति—व्याख्याता, राजकीय महाविद्यालय, बारां

एक उत्साही, कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ता के रूप मे आपकी प्रसिद्धि है। समाज की कुरीतियो से डटकर संघर्ष करना आपकी विशेषता रही है। समाज की कुरीतियो को मिटाकर समाज को प्रगति पथ पर ले जाने मे आपकी गहन रुचि है। छीपा बड़ौद में सम्पन्न सामूहिक विवाह-समारोह का सयोजकत्व किया है। राजकीय महाविद्यालय बारा द्वारा प्रकाशित 'स्मारिका, के प्रधान सम्पादक रहे हैं। 'स्मारिका' प्रकाशन समिति के परामर्शदाता के रूप मे आपका सहयोग महत्वपूर्ण है।

# श्री डा. थानमल जैन

जन्म स्थान—पोसालिया (जिला सिरोही)
शिक्षा—एम० एस०
सम्प्रति—चिकित्सा अधिकारी,
राजकीय चिकित्सालय, बारा
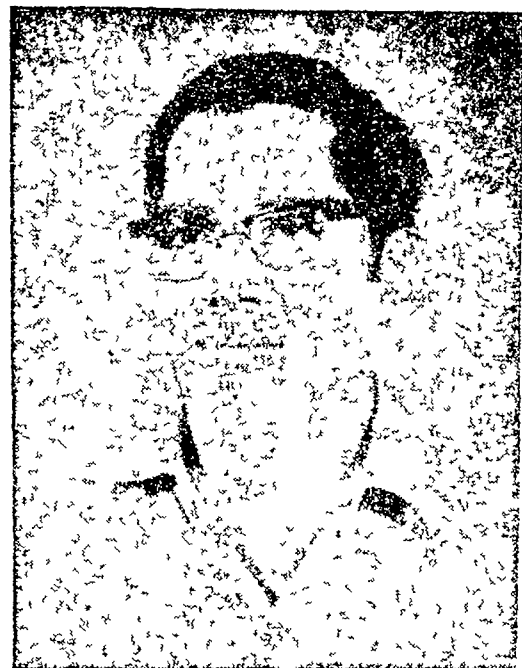
डा० जैन एक सफल शल्य चिकित्सक के रूप मे बारां की जनता मे विख्यात है। बारां अंचल के कोने-कोने से अनेक व्यक्ति इनकी चिकित्सा की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए, साधुवाद देते हुए, लाभान्वित होते हुए, जीवन के खोये हुये उत्साह को पुन: प्राप्त कर लौटते है। आपरेशन कक्ष मे डा० जैन की शल्य चिकित्सा कुशलता से सहयोगी वर्ग भी प्रभावित है। अपने चिकित्सा कार्य मे अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी समाज कार्यो के लिये समय देना आपकी सहृदयता का परिचायक है। 'स्मारिका' प्रकाशन मे जो सहयोग आपने दिया वह सराहनीय है।

# श्री डा. कैलाशचन्द सेठी

जन्म तिथि--३-८-१९४५

जन्म स्थान —बारां (जिला कोटा) राजस्थान

शिक्षा—एम. बी बी एस उदयपुर

सप्रति—चिकित्सा अधिकारी
राजकीय चिकित्सालय, बारा
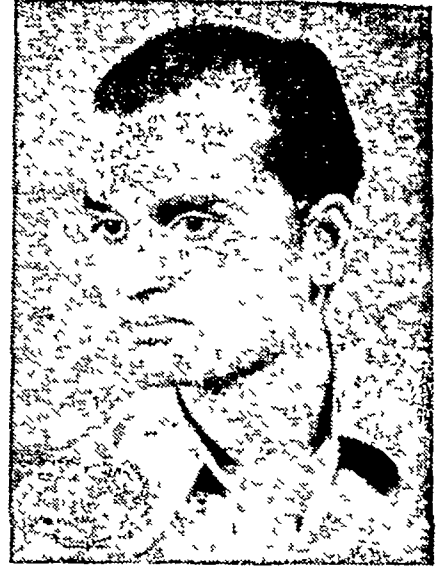
डा० सेठी की प्रथम नियुक्ति महाराव भीमसिह चिकित्सालय कोटा मे सन् १९६९ मे हुई। इसके पश्चात ३ वर्ष तक सारथल मे कार्यरत रहे। रोगी का आधा रोग चिकित्सक की सहानुभूति से ठीक होता है इस जनश्रुति का अक्षरश प्रतिपालन डा० सेठी के व्यक्तित्व मे निहित है। चिकित्सा क्षेत्र मे डा० सेठी के व्यक्तित्व से सम्पर्क मे आया हुआ प्रत्येक व्यक्ति लाभान्वित होता है। रोगी एव परिवार के मानसपटल पर डा० सेठी के सौजन्यपूर्ण व्ययहार की अमिट छाप पडती है। बारा स्थानातरण के समय सारथल अचल की जनता द्वारा दी गई भावभीनी विदाई डा० सेठी की कर्तव्य परायणता, सद्व्यवहार, कार्यकुशलता एव नम्रता का स्मरण दिलाती है।

"डा० सेठी की नम्रता एव कार्यकुशलता से प्रभावित जनता ने हजारो की सख्या मे अश्रुपूरित आखो से भावभीनी विदाई दी। यहा तक कि मालाये ब्लैक मे बिकने लग गई थी। डा० सेठी का विदाई समारोह आज के इस प्रजातन्त्र मे देखने योग्य था।"

('धरती की पुकार' दि० २१-१-७४)

सप्रति-बारा मे ही चिकित्सा अधिकारी के पद पर कार्यरत डा० सेठी अपने मधुर व्यवहार से बारा नगर के जनमानस का हार बने हुए है। चिकित्सा कार्य मे अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी जैन समाज के उत्थान के लिये निरन्तर प्रयत्नशील, भगवान महावीर के २५०० वे निर्वाण महोत्सव के कार्यक्रमो को कार्य रूप मे परिणित करने मे अग्रणी नवयुवक डा० सेठी का कार्य प्रशसनीय है। 'स्मारिका' प्रकाशन के लिये सर्वाधिक उत्साह से कार्य करना उनकी साहित्यिक अभिरुचि का परिचायक है। 'स्मारिका' के लिये अर्थ व्यवस्था का गुरूदायित्व आपने सफलतापूर्वक निभाया है। इस उत्साही कार्यकर्ता से जैन समाज को बहुत आशाएँ है।

★★

# श्री बाबूलाल जैन

जन्म स्थान—खातौली ( जिला कोटा ) राजस्थान

शिक्षा—बी कॉम

सप्रति—स्पेशियल असिस्टेन्ट—दी बैक ऑफ राजस्थान लिमिटेड, बारा

कर्मठ एव उत्साही सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप मे श्री बाबूलाल जैन से सम्पूर्ण जैन समाज परिचित है। विद्यार्थी जीवन से ही समाज-सुधार मे रुचि रखने वाले श्री जैन निरन्तर धार्मिक एव सामाजिक कार्यो मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे है। गत वर्ष पदोन्नति के साथ आपकी नियुक्ति बारा मे हुई। आगमन के कुछ दिनो बाद ही "जैन नवयुवक मण्डल" की स्थापना एव भगवान महावीर २५००वा निर्वाण महोत्सव समिति के गठन मे पूर्ण योगदान दिया।

सामाजिक कार्यो में विशेष अभिरुचि होने के कारण ही आप कई सस्थाओ के पदाधिकारी रहे है। महावीर गृह निर्माण सहकारी समिति लिमिटेड कोटा, के उपमन्त्री, दिगम्बर जैन परिषद कोटा शाखा के उपाध्यक्ष, दिगम्बर जैन परिषद स्वर्ण जयन्ती अधिवेशन के उपाध्यक्ष, राजस्थान बैंक एम्पलाईज यूनियन बारा यूनिट के उपाध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद देहली प्रबन्धकारिणी समिति के सदस्य के रूप मे उत्तरदायित्व निर्वहन की क्षमता के अनुरूप आपके व्यक्तित्व का निखार हुआ है। 'भगवान महावीर २५०० वा निर्वाण महोत्सव समिति' के सदस्य के रूप मे आपका कार्य अतुल्य एव सराहनीय है।

# श्री राजेन्द्रकुमार बज

| | | |
|---|---|---|
| जन्म तिथि: | — | २३ जुलाई १९४७ |
| जन्म स्थान | — | बारा (जिला कोटा) |
| शिक्षा : | — | वैद्याचार्य |

बारा के प्रसिद्ध समाज सेवी एव समाज सुधारक श्री हजारीलाल जी बज के यहा जन्म लेने के कारण, सेवाभावी पैतृक सस्कार विरासत मे मिले है। बचपन से ही सेवाकार्यो मे विशेष रूचि रही है। अपने शिक्षा काल मे निरतर स्काउटिग मे रहे, १३ वर्ष की अल्पायु मे ही तृतीय अखिल भारतीय अधिवेशन मे भाग लिया। १९६३ मे प्रेसीडेन्ट स्काऊट का पदक विशेष योग्यता के साथ प्राप्त किया और सूभाष ट्रूप की स्थापना की।

अपने शिक्षा काल मे ही 'जैन वीर दल' की स्थापना की एव उसके अध्यक्ष पद का कार्य-भार संभाला। कुछ न कुछ करते रहना इनका विशेष गुण है। व्यावसायिक कार्यो मे रत रहते हुए भी वैद्याचार्य की परीक्षा मे सफलता हासिल की। वर्तमान मे भी समाज की प्रत्येक गतिविधि मे ये अग्रणी रहते है। वर्तमान नवयुवक मण्डल एव इस स्मारिका के लिये इनका सहयोग सराहनीय है।

# श्री दयाचन्द जैन 'रजनीश'

| | | |
|---|---|---|
| जन्म तिथि | — | २० मई १९५३ |
| जन्म स्थान | — | बारा (जिला कोटा) |
| शिक्षा | — | B. Sc. मे अध्ययनरत |
| सप्रति | — | अध्यक्ष, जैन नवयुवक मडल |
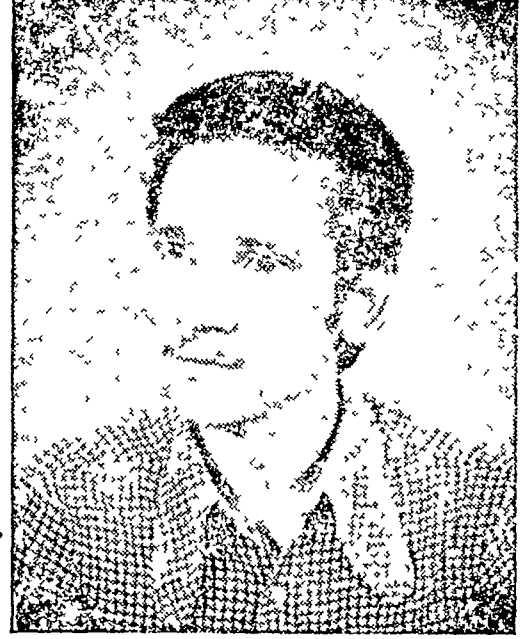
बारां जैन समाज का यह उत्साही नवयुवक कार्यकर्त्ता अपनी विनम्रता एव कार्यकुशलता से बारा के उच्चशिक्षित समाज मे अपना स्थान बना चुका है। जैन नवयुवक मन्डल के अध्यक्ष के रूप मे 'श्री रजनीश' का कार्य प्रशसनीय है। इस अल्पायु मे ही एक लेखक, कवि, कहानीकार के रूप मे स्थापित हो चुके है। शायरी एव गजलो मे भीविशेष अभिरूचि रखते है। 'स्मारिका' प्रकाशन के लिए विशेष परिश्रम श्री 'रजनीश' ने किया है।

साहित्यिक अभिरूचि के अलावा स्वय के प्रयास से व्यावसायिक क्षेत्र मे भी अच्छी प्रगति की है। समाज को अपने इस नक्षत्र से अनेक आशाएँ है।

# श्री प्रीतमचन्द बड़जात्या

वारा नगर के प्रमुख एव राजनैतिक कार्य कर्त्ता श्री गुलावचन्द जी वडजात्या के सुपुत्र श्री प्रीतमचन्द बढजात्या को सामाजिक अभिरूचि विरासत मे मिली है। बी एस. सी तक अध्ययन करने के पश्चात व्यवसाय मे प्रवृत्त हो गये एव सफलता अर्जित की। अपने व्यबसाय मे अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी आप समय समय पर खेलकूद एव सामाजिक गतिविधियों मे भाग लेते रहे है। कविता लेखन मे भी आपकी रूचि है।

जैन नवयुवक मण्डल के अध्यक्ष पद का कार्य भार प्रारम्भ मे आपको ही दिया गया था, किन्तु नई पीढी को आगे लाने की कामना से, स्वेच्छा से इस कार्य का भा( श्री दयाचन्द जैन 'रजनीश' को सौप दिया। यह आपकी त्याग भावना का परिचायक है। क्योकि आप नाम नही, काम मे-विश्वास रखते है। स्मारिका प्रकाशन मे भी आपने सहयोग दिया है।

# श्री हुकमचन्द टोंग्या

बारा के अग्रगण्य व्यवसायी श्री माणकचन्द टोंग्या के घर मे जन्म लेने वाले श्री हुकमचन्द टोंग्या एक कुशलसामाजिक कार्यकर्ता है। ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण आपको शिक्षा अधूरी छोडकर ही व्यवसाय मे प्रवृत्त होना पड़ा, जहा आपने अपनी योग्यता का परिचय दिया। धार्मिक एव सामाजिक अभिरुचि आपको विरासत मे मिली है। स्मारिका प्रकाशन मे आपका योगदान सराहनीय है।

# भगवान महावीर २५०० वाँ निर्वाण महोत्सव

## प्रशासनिक सहयोग

हरिश्चन्द जैन एडवोकेट
**संयोजक**
भगवान महावीर २५०० वां निर्वाण
महोत्सव समिति

भगवान महावीर का २५०० वाँ निर्वाण महोत्सव बारां नगर में अत्यंत उत्साह से मनाया जा रहा है। इस आयोजन में जैन समाज के अलावा अन्य नागरिकों का पूर्ण सहयोग तो महत्वपूर्ण है ही, साथ ही प्रशासन का पूर्ण सहयोग हमें प्राप्त हुआ है। प्रशासनिक सहयोग के अभाव में आयोजन का एक अंश भी सफलता प्राप्त नही कर सकता था। समस्त प्रशासनिक अधिकारियों से इस संबंध में पूर्ण सहयोग हमें प्राप्त हुआ।

जिलाधीश श्री अनिल कुमार ने श्री महावीर पार्क के निर्माण हेतु २००००) की राशि स्वीकृत की। तत्कालीन उपजिलाधीश श्री रवि प्रकाश नाग ने श्री महावीर पार्क की योजना बनाई एवं नगरपालिका के माध्यम से निर्माण प्रारंभ करवाया।

१३ अक्टूबर ७४ को श्री रविप्रकाश नाग द्वारा श्री महावीर पार्क का शिलान्यास किया गया।

भगवान महावीर २५०० वां निर्वाण महोत्सव समिति के विशेष अनुरोध पर श्री रविप्रकाश नाग ने महावीर बाल मन्दिर के लिये नगरपालिका की ओर से निःशुल्क जमीन देने का प्रस्ताव स्वीकार किया।

तत्कालीन उपजिलाधीश एवं नगर प्रशासक श्री रविप्रकाश नाग के सहयोग से न. पुस्तकालय में महावीर कक्ष की स्थापना की गई।

दीपावली के शुभ अवसर पर नगरपालिका ने २४ तीर्थंकरो के नाम से तोरण द्वार बनवाये। नगर के प्रमुख मार्गों के नाम महावीर मार्ग एव वर्द्धमान पथ रखे गये ।

श्री रवि प्रकाश नाग की अपील पर, दीपावली के शुभ अवसर पर तीन दिन तक शराब एवं दारू की दूकानें बद रखी गई। तथा श्री नाग के विशेष अनुरोध पर १५० हरिजन तथा ५० जाटो ने आजीवन शराब छोड़ने का संकल्प लिया।

बारां में धर्मचक्र के आगमन के समय मागरोल एवं अन्ता मार्ग पर धर्मचक्र की अगवानी की।

धर्मचक्र के बारां आगमन के समय कार्यक्रम को सफल बनाने मे नगरपालिका एवं प्रशासन ने सक्रिय सहयोग दिया।

पुलिस अधिकारी DY. S. P., तत्कालीन उपजिलाधीश श्री रवि प्रकाश नाग S. H. O. श्री प्रकाश त्यागी तथा श्री महावीर जैन R. A. S. एवं स्काऊट्स का शाति एवं सुरक्षा मे विशेष सहयोग प्रदान किया।

नगरपालिका के E. O. श्री मनमोहन जैन ने समिति द्वारा अयोजित समस्त कार्यक्रमो मे प्रशासनिक एवं वैयक्तिक तौर पर पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

समिति, इन सभी अधिकारियों एवं अन्य जितने भी लोगों ने कार्यक्रमों में सहयोग प्रदान किया, उन सब का आभार मानती है।

**म**–महान आत्मा ।
**हा**–र न मानी जीवन में कभी ।
**वी**–तरागता ।
**र**–ग रग में समागयी ।

—कु० नगेन्द्र जैन

शुभ कामनाओं सहित—

फोन : ६४

जयरामदास सफरमल

★

साधना अगरबत्ती व हाथी छाप वार साबुन के थोक विक्रेता
बाराँ

शुभ कामनाओ सहित—

हाड़ौती का लोक प्रिय
दैनिक अधिकार

नियमित रूप से प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें।

पुखराज जैन
स्थानीय सम्पादक
सेठ कंवरलाल जी का नौहरा,
रामपुरा बाजार
फोन नं० ३०७८ पी पो कोटा-६

भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण महोत्सव के शुभ अवसर पर

शुभ कामनाओं सहित

फोन : ५४५

गेरा X Ray एवं Diagnostic क्लीनिक

महाराव भीमसिंह अस्पताल के सामने कोटा।

मल, मूत्र, रक्त एवं विश्वसनीय X Ray
के लिये एक मात्र स्थान।

शुभ कामनाओ सहित —

फोन नं० १२१

**मे. पीरूलाल मोहनलाल**
**सर्राफ**

चांदो व चांदी के जेवरो के विक्रेता
सर्राफा बाजार बारां (राज०)

शुभ कामनाओ सहित—

फोन { दुकान १८२
{ घर ५८

**मे. सोभागमल जोरावरमल मारु**
**मेडीकल स्टोर्स**
बारॉं ३२५२०५ (राज०)

***Stockist* —**
ALEMBIC, B/E, East India,
SARABHAI (SQUIBB), SANDOZ,

शुभ कामनाओ सहित—

**सर्राफ कस्तूरचन्द अशोककुमार जैन**

चादी व चांदी के जेवरात के विक्रेता
बारॉं (राज०)

शुभ कामनाओ सहित—

**मे. भोलाराम [illegible]**
ग्रेन मर्चेन्ट [illegible]
[illegible]

# * जैन नवयुवक मण्डल *

## बारां (राज०)

## कार्यकारिणी सत्र १९७४-७५

| | | |
|---|---|---|
| अध्यक्ष | — | दयाचन्द 'रजनीश' |
| उपाध्यक्ष | — | दिनेश सेठी |
| परामर्शदाता | — | डा० कैलाशचन्द सेठी<br>बाबूलाल जैन |
| सचिव | — | विमलकुमार जैन |
| उपसचिव | — | योगेशकुमार जैन |
| कोषाध्यक्ष | — | सोहनचन्द जैन |
| सास्कृतिक सचिव | — | प्रमोद सोगानी |
| क्रीड़ा सचिव | — | चेतन सोगानी<br>नवीनकुमार जैन |
| साहित्यिक सचिव | — | रमेशचन्द शाह |
| पुस्तकालय सचिव | — | मोहन अजमेरा |
| सदस्य | — | राजकुमार जैन<br>महावीर पाटोदी<br>पदमकुमार जैन<br>महावीर जैन<br>भानुकुमार जैन<br>अशोककुमार गगवाल |

# जैन नवयुवक मंडल बारां (राजस्थान)

## सदस्य-सूची

अशोककुमार गंगवाल
अशोककुमार सेठी
भानुकुमार जैन
भीमराज जैन
भेरूलाल जैन
बाबूलाल जैन एडवोकेट
बाबूलाल जैन (एकाउन्टेन्ट राजस्थान बैंक)
चन्द्रप्रकाश
चन्दालाल जैन एडवोकेट
चेतनराज सोगानी
दयाचन्द 'रजनीश'
दिनेशचन्द सेठी
दीपचन्द जैन
घनश्याम जैन
हुकमचन्द टोंग्या
हरीप्रकाश
हुकमचन्द जैन
जयकुमार जैन
डा० कैलाशचन्द सेठी
कमलकुमार कासलीवाल
कैलाशचन्द जैन
कैलाशचन्द सोनी
कमलकुमार सेठी
ललितकुमार जैन
महेन्द्रकुमार जैन
माणकचन्द सौंफवाला
महावीरप्रसाद बड़जात्या
महावीर पाटोदी
मानमल जैन
मोहनलाल जैन अजमेरा
महेन्द्रकुमार जैन (टेलीफोन आपरेटर)
नेमीचन्द जैन
नवीनकुमार जैन
नूतनकुमार बज
नरेन्द्रकुमार जैन
नरेशकुमार सोगानी
निर्मलकुमार बडजात्या
पदमकुमार कासलीवाल
पदमकुमार जैन (भानपुरा)
पदमकुमार जैन (आटोन वाला)
पवनकुमार सेठी
प्रमोद सोगानी
प्रवीणकुमार बज
प्रीतमचन्द बडजात्या
प्रकाशचन्द जैन
राजकुमार टोंग्या
राजेन्द्रकुमार बज
राजेन्द्रकुमार जैन
रमेशचन्द्र शाह
सुरेन्द्रकुमार पापड़ीवाल
सुरेन्द्रकुमार जैन
सुशील गगवाल
सुशीलकुमार अजमेरा
शान्तीकुमार जैन
शिखरचन्द्र जैन
डा० थानमल जैन
विमलकुमार जैन
विमलचन्द्र गोधा
योगेश जैन

# शुद्धि-पत्र

गद्यान्जलि — शुद्ध — अशुद्ध

पृष्ठ ५ श्री मद्भागवद् गीता मे भगवान महावीर
(बायी तरफ)
समुद्दभूत — समुद्रभूत

" "
(नीचे से छठी पक्ति)
भस्मसान् — भस्यसात्

(दाहिनी तरफ की ऊपर से तीसरी पक्ति)

पृष्ठ ६ " "
(स्वस्थ उपशीर्षक के अन्तर्गत अन्तिम पक्ति)
भावस्थित — पावस्थित

पृष्ठ १३ वर्तमान समस्याएँ और भगवान महावीर का उपदेश
(दाहिनी तरफ की १५वी पक्ति मे)
तकनीक — तकलीफ

पृष्ठ १७ जैन धर्म—समाज शास्त्रीय सन्दर्भ
(अहिसा प्रधान समाज रचना उपशीर्षकके अन्तर्गत पहली पक्ति)
तात्विक — चात्विक

पृष्ठ १९ बह महावीर
(बायी तरफ से १३ वी पंक्ति)
तनय भी इन — तनयभाइन

पृष्ठ २० वह महावीर
(बायी तरफ ऊपर से १९ वी पक्ति कमरे मे)

पृष्ठ २१ वह महावीर
(बायी तरफ ऊपर से ५ वी पक्ति सिर झुका कर)

पृष्ठ २६ मुक्तक
(पहले मुक्तक की अन्तिम पंक्ति)
छलकता — छखकता

(दूसरे मुक्तक की अतिम पक्ति)
फूट — पुट

पृष्ठ २९ व्यावहारिक जीवन मे महावीर के आदर्श
(बायी तरफ ऊपरसे आठवी लाईन)
प्रतिमाऐ — प्रतिभाएँ

पृष्ठ २९ " "
व्याप्त — सभापति

(बायी तरफ ऊपरसे १८वी लाइन)

पृष्ठ २९ " "
नास्तिकता — नासिकता

भगवान महावीर २५०० वां निर्वाण महोत्सव के शुभ अवसर पर

शुभ कामनाओं सहित

भारत सरकार द्वारा प्रत्याभूत

# पाटोदी एग्रो सर्विस सेन्टर

किशनगंज, जिला कोटा (राजस्थान)

हमारी सेवायें—

★ ट्रेक्टर, पम्पसेट्स. कृषियत्र, रासायनिक खाद, उन्नत बीज व कीटाणु नाशक औषधियो के विक्रेता।

★ ट्रेक्टर व अन्य कृषि यत्रो की मरम्मत किराये पर ट्रेक्टर ट्रोली, व अन्य कृषि यन्त्रो की सेवाये

★ ब्लास्टिग द्वारा कुओ को गहरा करना

(राजस्थान राज्य कृषि उद्योग निगम के अधिकृत एजेंट)

प्रो० यशवन्त जैन पाटोदी

ग्राम : AGENT

Shop 36969
Rest 37376
34114

दलाल
BRORER

# BAPOOLAL KAPOORCHAND JAIN

बापूलाल कपूरचन्द जैन

कमीशन एजेन्टस्
31 संयोगितागंज, इन्दौर-45001 ( म. प्र. ) W. RLY

★ अनाज

विशेषकर

★ दाले

★ तिलहन

आदि का काम दलाली पर सन्तोषजनक होता है।
परीक्षा प्रार्थनीय है।